राज
कॉमिक्स
विशेषांक
संख्या 0017
डॉक्टर
वायरस
A. PRATAP MULICK
RAJ COMICS
राज
कॉमिक्स
BY MANOJ GUPTA

हमारे चारों तरफ के वातावरण में फैले रहते हैं; इस दुनिया के सबसे सूक्ष्म जीव, जीवाणु एवं विषाणु यानि वायरस!

मानवों के लिए बेहद घातक इन जीवों के वश में रहती है, मनुष्यों की जान!

पर ये वायरस जिसके वश में रहते हैं; उस महा खतरनाक शख्सियत का नाम है,-

डाक्टर वायरस

सुपर कमांडो ध्रुव

कथा एवं चित्र :- अनुपम सिन्हा

संपादन :- मनीष गुप्ता
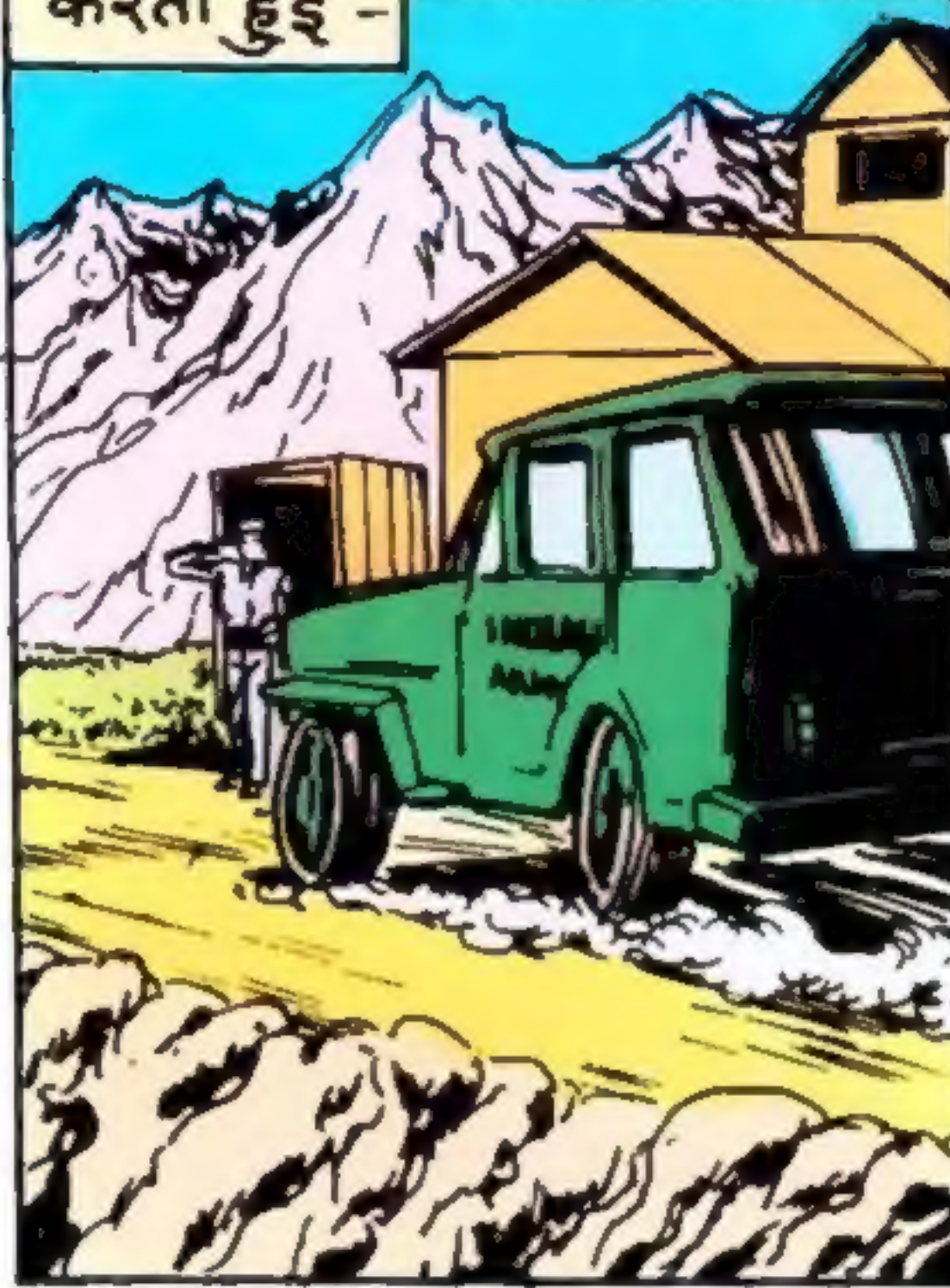
ओ माई गॉड! यह... यह कैसा पेड़ है, डॉक्टर?

यह मेरी दो साल की मेहनत का नतीजा है, जनरल

इस दुनिया में दो तरह की ज़िंदा प्रजातियां होती हैं; एक पशुओं की यानि हमारी, और दूसरी पौधों की।

यह 'पेड़' इन दोनों प्रजातियों का मिला-जुला रूप है।

इसकी आकृति पेड़ जैसी जरूर है, पर यह पशुओं की तरह चल फिर सकता है, और अपना खाना-पानी खुद ढूंढ सकता है।

और इसमें एक टैंक की सी शक्ति है।
कमाल है!
मुझे तो देख कर भी यकीन नहीं हो रहा है!
जरा सोचो, जनरल! इन वृक्षपशुओं की तैनाती से, हमारे देश की सीमाएं कितनी सुरक्षित हो जाएंगी।

और हमारे कई सैनिकों की बहुमूल्य जानें भी बचेंगी!
वाह! पर तुमने इसको तैयार कैसे किया है?
इस स्पेशल 'बीटा वायरस' से! कोई भी पौधा मेरे बीटा वायरस पर पलकर, वृक्षपशु बन सकता है!
पर इसको कंट्रोल कैसे किया जाएगा, डॉक्टर?

इसके तने रूपी छाती के अंदर लगे, इस 'कंप्यूटर चिप्स' से। यह चिप्स आदेश को ग्रहण करता है,...
... और वृक्षपशु उसी आदेश के अनुसार काम करता है!

वेरी गुड!
पर अब मैं यह देखना चाहता हूं, कि इस वायरस का मानवों पर क्या असर होता है?
पर इस प्रयोग के लिए आदमी कहां से आएगा?
चाहता तो मैं भी था!

उसके लिए तुम जो हो, डॉ॰ वर्गीस!
क्या मतलब है तुम्हारा, जनर..ल?...
डॉ॰ वायरस! तुम... तुम यहां पर?
हां, मूर्ख! असली जनरल इस वक्त मेरी जीप में बेहोश पड़ा है!
पर...पर.... डॉ॰ वायरस...!

और घबरा! डर से थर-थर कांप, वर्गीस! मैं वही डॉ॰ वायरस हूं, जो तुम सारे जीव विज्ञानियों में सबसे ज्यादा बुद्धिमान था।
और इसी कारण मैंने किसी सरकार के लिए नहीं, बल्कि अपने लिए काम करना ज्यादा पसंद किया!
फिस्स्स
मैं सिर्फ एक ही वैज्ञानिक को अपने बराबर का मानता था।
और वह वैज्ञानिक, तुम थे, वर्गीस!
इसीलिए जब मुझे यह खबर मिली, कि तुम दो साल से इस प्रयोगशाला में काम कर रहे हो, तो मैं तुरंत समझ गया कि तुम्हारी खोज कुछ अद्भुत होगी!
इस 'बीटा वायरस' के लिए शुक्रिया, वर्गीस!
तुम बहुत अच्छे आदमी थे!
मुझे पूरा भरोसा है, कि मर कर तुम सीधे, स्वर्ग ही जाओगे।
बड़ाााम
डॉ॰ वायरस की उंगली 'रिमोट कंट्रोल' के बटन पर दबी।
एक तेज धमाका हुआ।
और हजारों टन बर्फ ने, प्रयोगशाला को अपने आगोश में लेकर, उसका नामोनिशान मिटा दिया।
र्रर्रर्र
एक खतरनाक घटनाक्रम शुरू हो चुका था।
अगले दिन के अखबारों में सिर्फ एक छोटी सी खबर छपी थी। सैन्य अधिकारियों ने, गुप्त प्रयोगशाला की खबर को छिपाना ही ज्यादा ठीक समझा था।
नक जागर
शनिवार, 13 फरवरी, 1993
दिल्ली के हालात में सुधार : कर्फ्यू हटा
बर्फ धसकने से वैज्ञानिक की मृत्यु टनों बर्फ में लाश ढूंढ़ना असंभव
पर सच्चाई सिर्फ डॉ॰ वायरस जानता था।

☆ पढ़िए 'प्रतिशोध की ज्वाला'

पर मेरा इस के अंदर जाने का कोई इरादा नहीं है!
मैनेजर साहब! स्ट्रांग रूम को अंदर से बंद कर लीजिए!

कुछ पलों तक, कोई लुटेरा कुछ नहीं कर सका।
गोलियां चलने पर, उनके अपने साथी की जान भी जा सकती थी।
और जब तक गोलियां चलाने का मौका आ पाता।...
...ध्रुव अपना स्थान छोड़ चुका था।
ओफ़! पता नहीं बैंकों में इतना बड़ा हॉल क्यों बनाते हैं!
कहीं छिपने तक की जगह नहीं है।
इन गोलियों से बचने के लिए किसी ढाल का इंतज़ाम करना पड़ेगा।
और उसके लिए यह कैश बॉक्स, एकदम उपयुक्त चीज है!
तड़ाक
कड़ाक
कैश बॉक्स के मोटे स्टील से टकराकर, गोलियां इधर-उधर छितराने लगीं।

इससे पहले कि लुटेरे, अपनी पोजीशन बदलकर फायरिंग करते–
ध्रुव तेजी से उनकी तरफ बढ़ा।
तड़तड़ तड़तड़
और बंदूकों की नलियां, कैश बॉक्स में कैद हो गईं।
फटाक
और ध्रुव के भीषण घूंसे, दोनों के जबड़ों से आ टकराए।
ताड़
टिरंग
धड़ाम
आखिरी डकैत समझ गया था, कि वह ध्रुव से अकेला नहीं निपट सकता।
हैलो! नंबर वन हियर, डॉ॰ वायरस!
यहां पर ध्रुव मौजूद है! हमको मदद चाहिए!
मेरा नाम मत ले, मूर्ख! 'मदद' तो बैंक के बाहर, गाड़ी में मौजूद है!
मैं उसको आदेश देता हूं!
आह!
टिड़िशू
चौथा लुटेरा भी, एक ही वार में धराशायी हो गया।
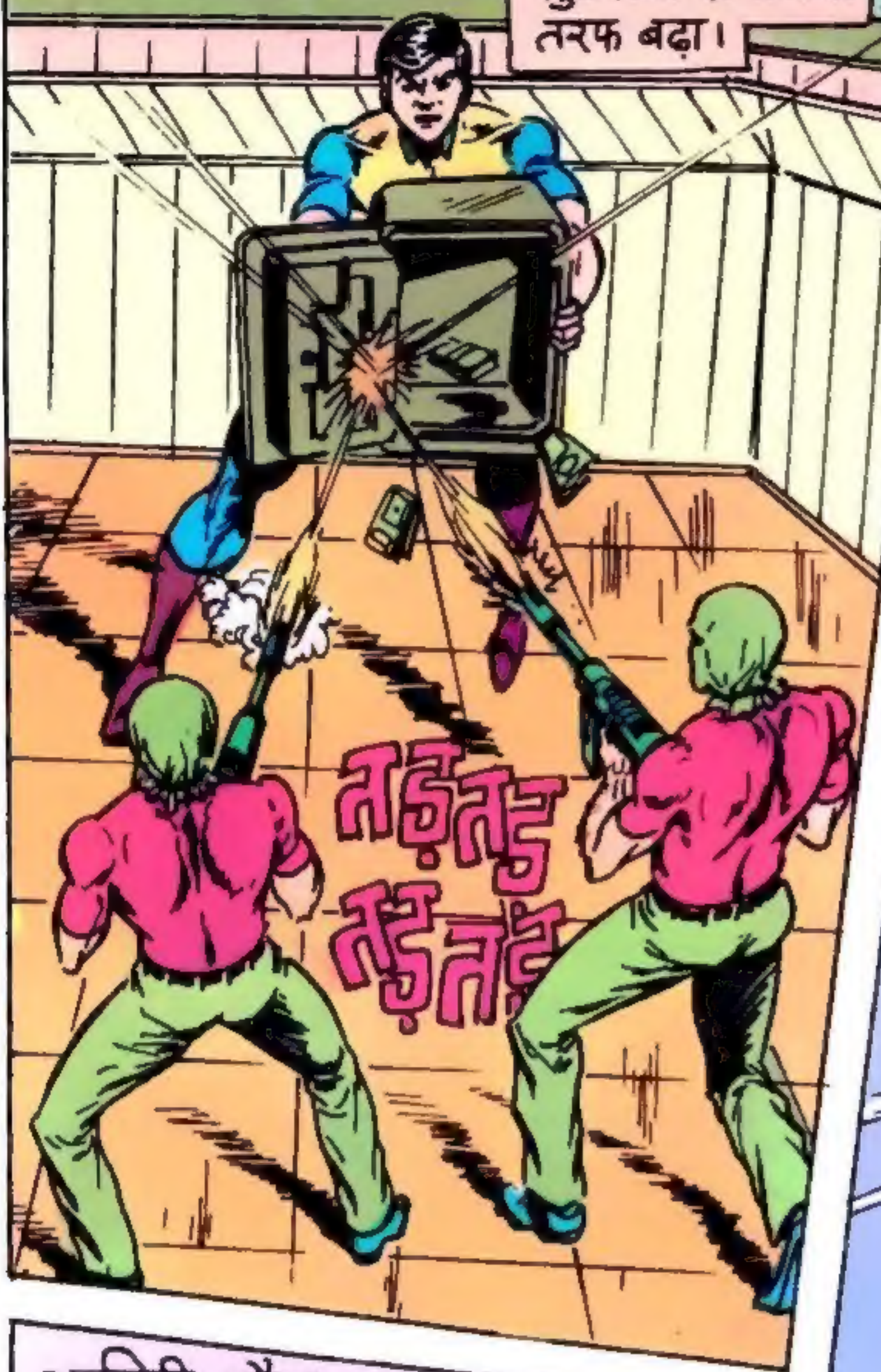
और ध्रुव ने लपककर फोन उठा लिया।
हैलो पुलिस हैडक्वार्टर!... ध्रुव हियर!... मैं मेट्रो बैंक से बोल रहा हूं!.. यस!... यहां पर डकैती का प्रयास किया गया था।
चार लुटेरे थे! चारों फिलहाल बेहोश पड़े हैं।... हां, बैंक के ऑटोमेटिक दरवाजे भी बंद हैं!...
अब मैं कर्मचारियों को स्ट्रांग रूम से बाहर निकालने जा ...!
ध्रुव की आवाज, एक तेज कड़कड़ाहट में गुम हो गई।
कड़ड़ड़ड़ड़
बैंक के स्टील के दरवाजे, जमीन पर आ गिरे थे।
और उसमें से, बैंक के अंदर प्रविष्ट हो रही थी-
एक अजीबोगरीब और भयानक आकृति!
यह क्या चीज है? देखने में तो मनुष्य लगता है!
और नहीं भी!
पहला वार ध्रुव को ही करना था।
पर इस बार का कुछ असर होगा, इसका भरोसा ध्रुव को खुद भी नहीं था।
थड़क
और अगले ही पल- ध्रुव को अपना जबड़ा टूटता हुआ सा महसूस हुआ।
धड़ाक

आह! पूरा जबड़ा हिल गया! ... अब क्या करूं?
आसपास, बचाव की कोई चीज भी नजर नहीं...
यह ऑटोमेटिक रायफल!

पर यह मुझे जीवित प्राणी लग रहा है।
मैं इसपर गोली चलाना नहीं चाहता!
तड़ाक
रायफल को लाठी की तरह इस्तेमाल करना पड़ेगा!

अगर मैं इसका गला दबा कर, दम घोंट सकूं, तो इसपर काबू पाया जा सकता है!
परंतु पूरी ताकत के बावजूद, ध्रुव उस खतरनाक प्राणी की गर्दन को तिलभर भी नहीं दबा पाया।
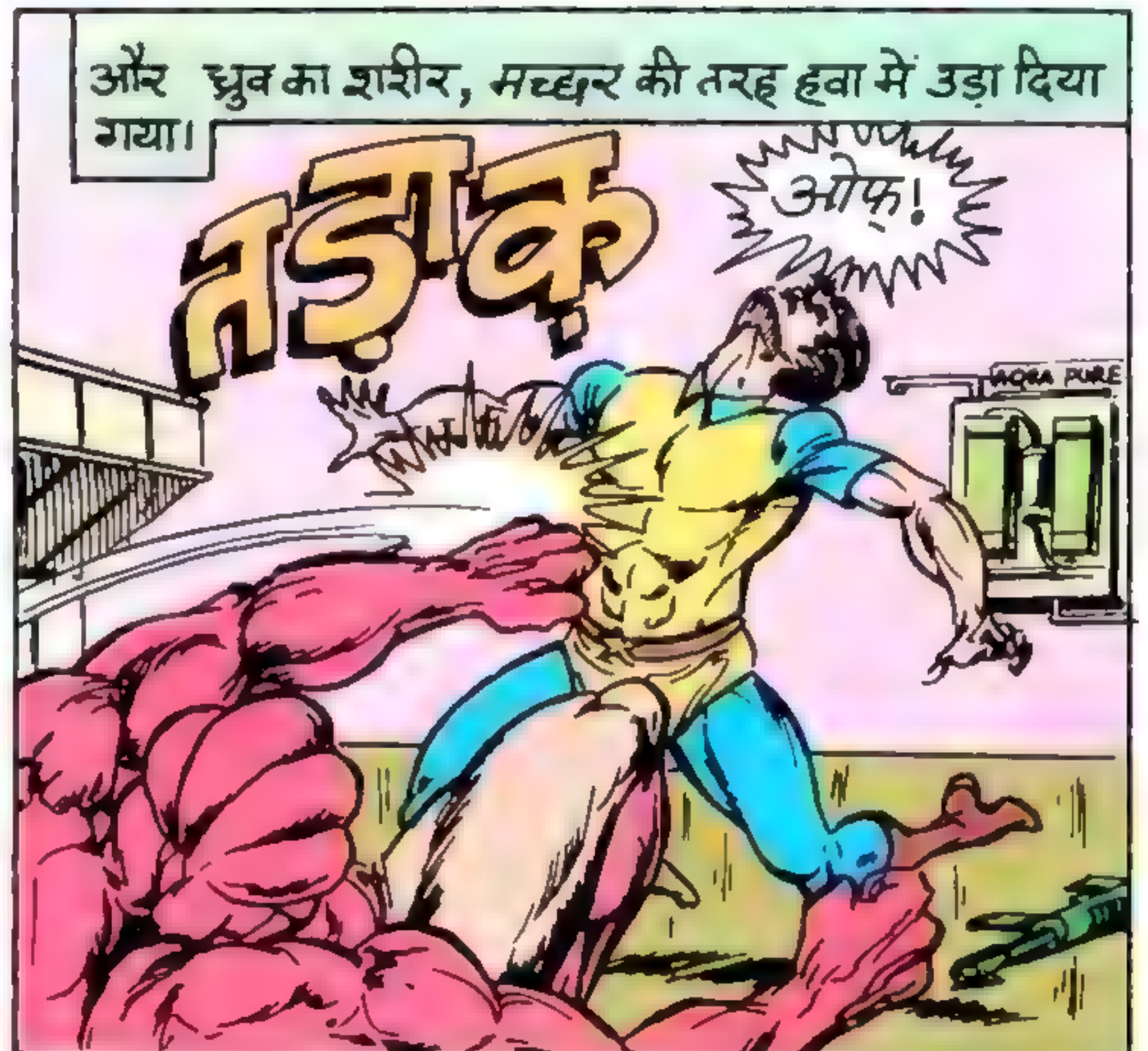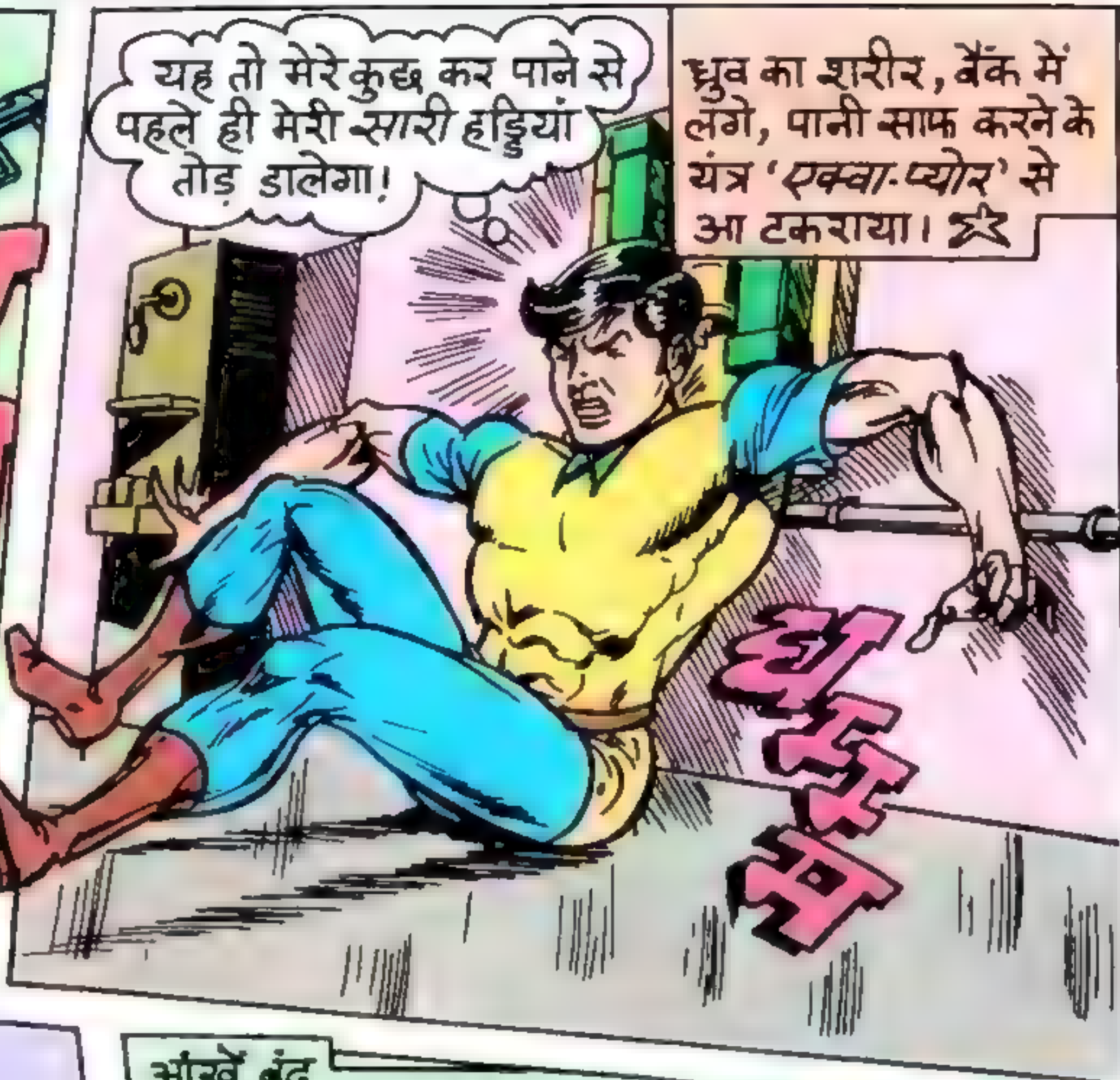
और ध्रुव का शरीर, मच्छर की तरह हवा में उड़ा दिया गया।
तड़ाक
ओफ़!

अब मेरे पास कोई और चारा नहीं है!
इस शैतान को ऐसे छोड़ देने का मतलब, कई निर्दोष जिंदगियों का बलिदान होगा!

ध्रुव ने ट्रिगर दबाया।
गोलियों का निशाना पैर थे। पर सभी गोलियां सख्त ऊपरी खाल में ही धंस कर रुक गई।
तड़तड़तड़तड़तड़तड़तड़

☆ पानी साफ करने का वह यंत्र, जो 'अल्ट्रावायलेट किरणों' द्वारा, पानी में मौजूद, कीटाणुओं को नष्ट करता है।

और कुछ देर बाद-जब वह प्राणी, ध्रुव की पकड़ से छूटकर पलटा। -
तो उसके चेहरे पर मानवीय खाल साफ नजर आ रही थी।
?
यह क्या? इसकी ठोढ़ी पर से लाल खाल कैसे गायब हो गई?
कुछ भी हो! अब यही जगह, मेरे हमले का निशाना होगी!
और एक भीषण वार से ही-
कड़ाम!
...उस प्राणी का शरीर जमीन पर आ गिरा।
डॉ॰ वायरस के साथ ध्रुव का टकराव शुरू हो चुका था।
अब इसको अस्पताल पहुंचाना पड़ेगा।
पिटाई भी मुझे ही करनी पड़ती है, और अस्पताल भी मुझे ही पहुंचाना पड़ता है!
और फिर-
यह आखिर चीज क्या है, डॉ॰ साहब?
मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आया।

बात तो समझ में आती है! मैंने भी पढ़ा है कि *अल्ट्रावायलेट* यानि पराबैंगनी किरणें, कई प्रकार के जीवाणुओं और विषाणुओं को नष्ट कर देती हैं।

पर ऐसा कौन नीच हो सकता है, जो अच्छे-भले इंसान को ऐसी भयानक स्थिति में पहुंचा दे?

यह तो यही बता सकता है। पर इस वक्त यह *'कोमा'* यानि गहरी बेहोशी में है!

हमको इसके होश में आने का इंतजार करना पड़ेगा।

और तब तक कुछ भी अनहोनी हो सकती है।

इस घटना से मुझे एक भयंकर खतरे की बू आ रही है!

खतरा, ध्रुव के अनुमान से कहीं ज्यादा *भयानक* था।

चेचकी पकड़ा गया?

यह क्या बक रहे हो? यह असंभव है!

उसको पकड़ा आखिर किसने?

ध्रुव ने!
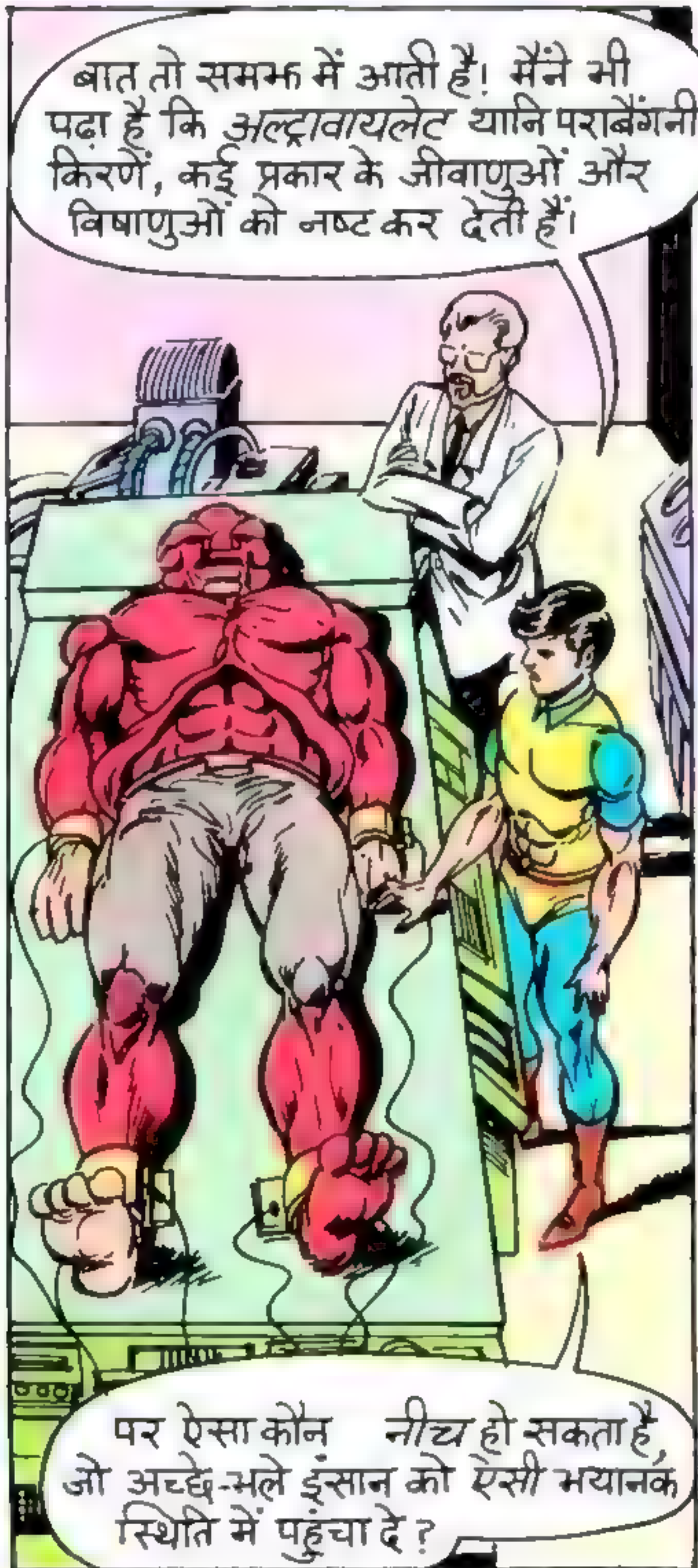
मैं, यानि डॉ० वायरस, इस दुनिया का सबसे बुद्धिमान जीव-वैज्ञानिक हूं! मैंने अपनी लेबोरेट्री में कई तरह के जीवाणु और विषाणुओं को 'डेवलप' किया है!
और उन विषाणुओं के, संतुलित मात्रा के इंजेक्शन लगा लगा कर मैंने अपने लिए एक शक्तिशाली और खतरनाक 'वायरल मैनों' की एक फौज तैयार कर ली है।
और मेरी उसी फौज के, एक भयानक वायरल मैन, 'चेचकी' को एक मामूली से छोकरे ने पकड़ लिया!!
और साथ ही साथ मेरा बैंक लूटने का प्लान भी बेकार हो गया!
मुझे ढेर सारा पैसा चाहिए! और तुरंत चाहिए! वर्ना मेरी सारी योजना ठप्प हो जाएगी। अभी मुझको अपनी लेबोरेट्री में बीटा वायरस का उत्पादन करने के लिए ढेर सारा रुपया चाहिए!
वर्गीस वाला, बीटा वायरस, तो प्रयोग करने में ही खत्म हो चुका है!
और ऐन वक्त पर यह मूर्ख चेचकी, ध्रुव से पिट गया!
अगर चेचकी होश में आ गया, तो हमारे लिए समस्या खड़ी हो सकती है!
अब चेचकी को होश में नहीं आना चाहिए!
उसको खत्म कर दो!
और उसके बाद, ध्रुव को रास्ते से हटाने का तरीका सोचो!
पर डॉ० वायरस को यह पता नहीं था, कि नेशनल फॉरेस्ट जैसी सुनसान जगह पर बनी उसकी प्रयोगशाला को...
...एक जोड़ी सुर्ख आंखें, बड़े ध्यान से देख रही थीं।

और फिर-राजनगर हास्पिटल में-
उस प्राणी की क्या हालत है, डॉक्टर?
मैं दो घंटे पहले उसको देखने गया था, ध्रुव!
तब तक वह बेहोश था!
तुम जाकर एक चक्कर लगा आओ!
और इसी वक्त-
चेचकी के रूम के बाहर।
ये काम मुझे सबसे खराब लगता है, रामसिंह। बस, गधों की तरह पहरा देते रहो!
तेरा क्या ख्याल है?
बोलता क्यों नहीं, यार?

बत्तीस! ... वह प्राणी, चालीस नंबर में है। आगे वाले मोड़ से दाहिने!

और बेहोश चेचकी के कमरे में एक रोंगटे खड़े कर देने वाली आकृति घुस रही थी।

मोड़ से मुड़ते ही, ध्रुव को खतरे का सिग्नल सामने नजर आ गया।

कमरे के अंदर- एक लिजलिजा हाथ, चेचकी का ऑक्सीजन मास्क हटाकर, उसकी नाक और मुंह को अपनी गिरफ्त में ले चुका था।

और जब तक ध्रुव, कमरे के दरवाजे पर आता...

...चेचकी का शरीर और उसकी धड़कन, खामोश हो चुकी थी।

ओह! एक और भयंकर प्राणी! क्या नर्क का कोई दरवाजा खुला रह गया है?
पर यह जो कोई भी हो, इसने इस बेहोश प्राणी को खत्म कर दिया है! पर क्यों?
अब वह घृणित आकृति वापस दरवाजे की तरफ बढ़ रही थी।
कोढ़क के रास्ते से हट जा, छोकरे!
कोढ़क! नाम तो पट्ठे पर फिट बैठ रहा है। पर मैं इसको जाने नहीं दे सकता!
वर्ना फिर मुझे इस षड्यंत्र की जड़ तक कौन पहुंचाएगा?
ध्रुव की बंधी मुट्ठी कोढ़क की तरफ लपकी।
और ध्रुव को अपना हाथ किसी मोटे गद्दे में धंसता हुआ सा महसूस हुआ।
धच
तो तू कोढ़क से लड़ना चाहता है, लड़के?
ले! मैं तेरी इच्छा पूरी किए देता हूं।
ध्रुव की चकित आंखों के सामने, कोढ़क के हाथ ने रबर-बैंड की तरह लंबा होकर-
ध्रुव के शरीर को अपनी कुंडली में कैद कर लिया।
?

और एक झटके से, ध्रुव का शरीर, लट्टू की तरह घूमता हुआ, दरवाजे से बाहर आ गिरा।
सांगाय

यह तो, उस लाल राक्षस से भी ज्यादा खतरनाक जीव लग रहा है।
मुझे तो लगता है, कि इससे पहले मैं इसके जरिए इसके बॉस तक पहुंच सकूं,...

... यह मुझे अपने जरिए भगवान तक पहुंचा देगा!
इधर एक जिंदगी और मौत का संघर्ष चल रहा था।
धड़ाक

...और दूसरी तरफ, डॉ॰ वायरस की लेबोरेट्री में अट्टहास गूंज रहा था।
हा हा हा हा! बन गया! मैंने वर्गीस वाले बीटा वायरस को अपनी ही लैब में डेवलप कर लिया है।
पर मेरा बनाया वायरस, उससे कहीं अधिक असरदार है!

अब मुझे रोकने वाला दूर-दूर तक, कोई नहीं है! हा हा हा हा हा!
परंतु डॉ॰ वायरस को रोकने वाला दूर नहीं, बल्कि बहुत पास में था।
और वह था...

...पृथ्वी पर मौजूद हर तरह के पेड़-पौधों का राजा - वनपुत्र
जो काफी देर से, डॉ॰ वायरस की हर हरकत पर नजर रखे हुए था।
कमाल है! ऐसा वृक्ष तो मैंने अपनी पूरी जिंदगी में कभी नहीं देखा!
आखिर यह किस प्रजाति का वृक्ष है?
शायद मेरे प्रश्न का उत्तर, यह वृक्ष ही मुझे दे दे!
वनपुत्र ने, तने पर अपने हाथ को एक खास तरीके से रगड़ा।
सर्र खड़ंच
और पेड़ में एक संदेश प्रेषित होने लगा।
लेकिन वनपुत्र यह नहीं जानता था कि इन पेड़ों को प्रकृति ने नहीं, बल्कि बीटा वायरस ने उगाया है।
और वे उसकी भाषा को नहीं समझ रहे हैं।
टिक टिक टा क
और वृक्ष की शाखारूपी बांहों ने, वनपुत्र को जकड़ लिया।
पींप.. पींप पींप
वनपुत्र के संदेश देते ही, 'वृक्षपशु' के अंदर फिट, 'ऑटोमेटिक एटैक सिस्टम' चालू हो गया।
और 'डेंजर सिग्नल' लेबोरेट्री के अंदर तक पहुंचने लगे।
अरे! यह तो खतरे के सिग्नल हैं!
पींप पींप पींप
यानि किसी ने मेरे पेड़ों के साथ छेड़छाड़ की है!
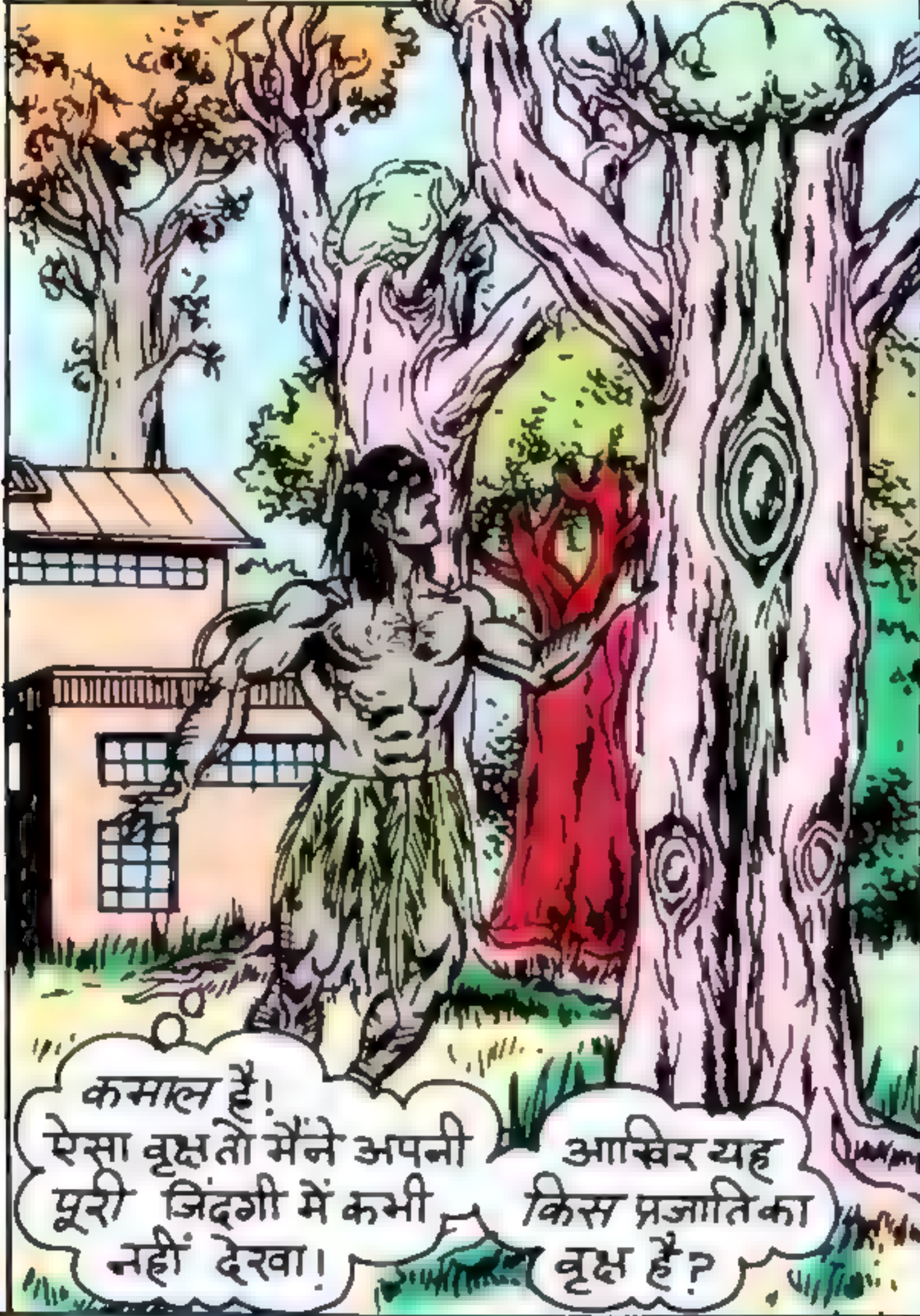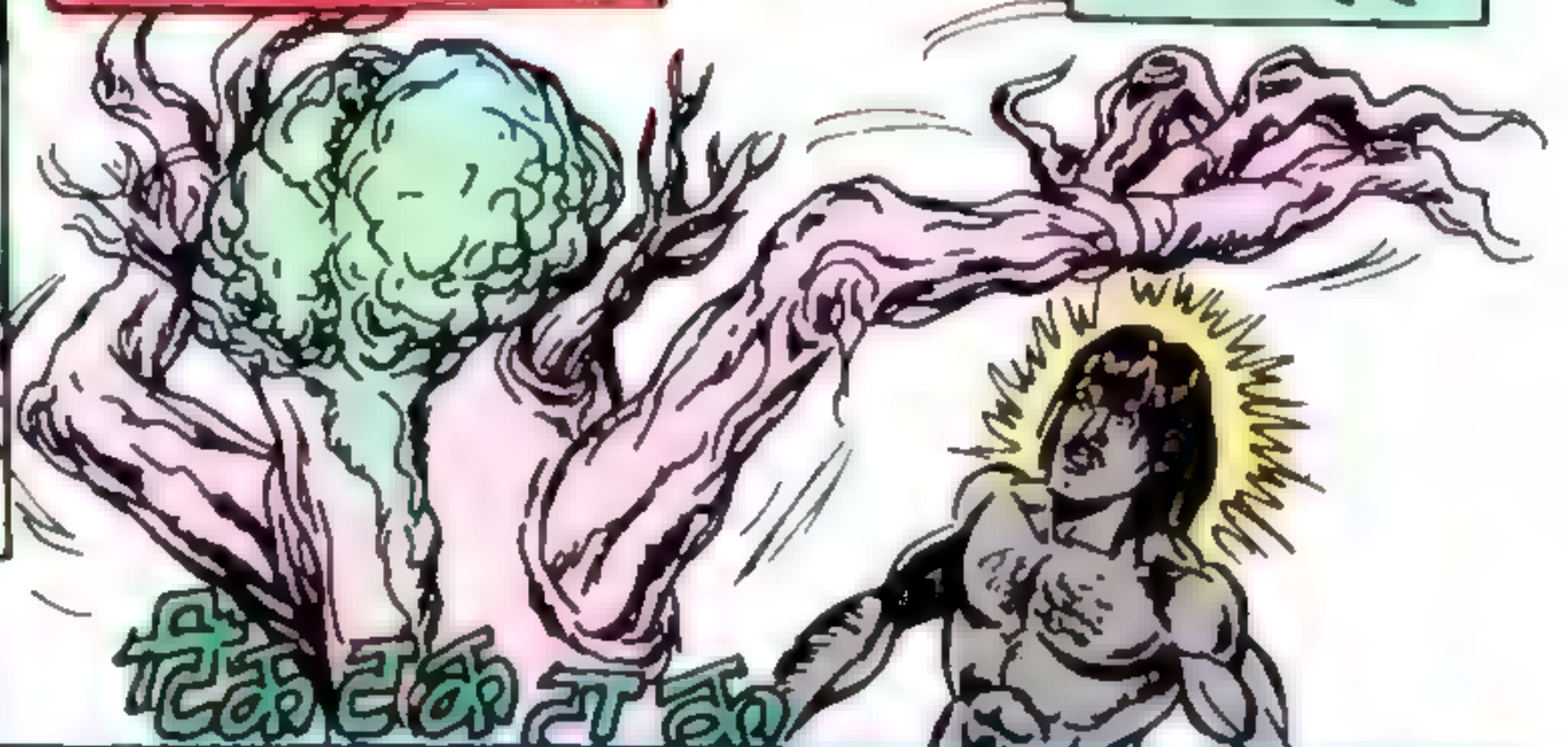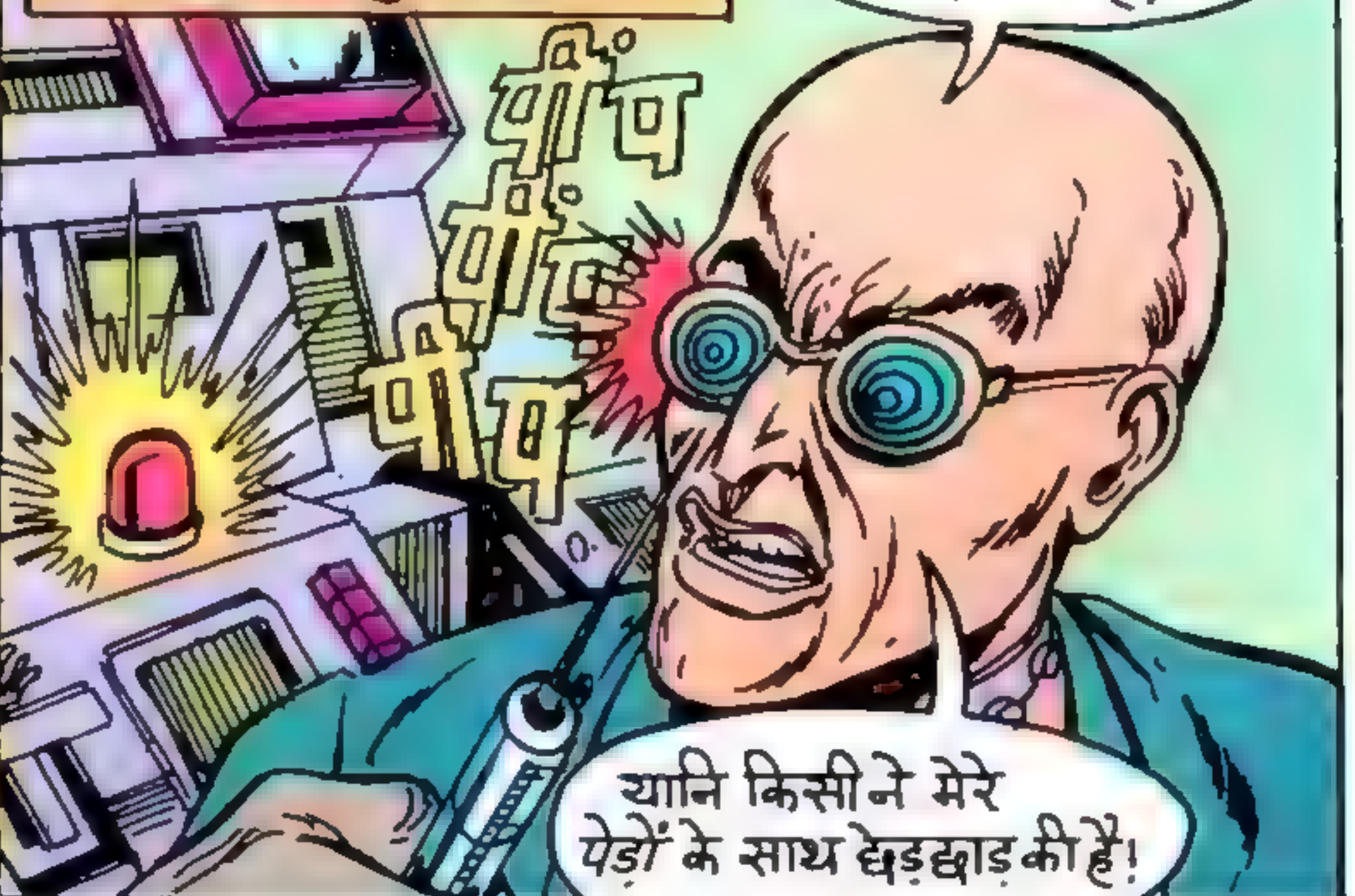
और बाहर-
वाह! वाह! मेरा 'ऑटोमेटिक एटैक सिस्टम' बिल्कुल सटीक काम कर रहा है! इसकी तो टेस्टिंग हो गई।
अब मैं इस 'बीटा वायरस' की टेस्टिंग, एक इंसान पर करना चाहता था।...
... और शैतान ने एक ग्राहक को खुद-बखुद मेरे पास भेज दिया।
?
वनपुत्र की फैली आंखों के सामने, एक चमकती सुई, उसके शरीर की तरफ बढ़ रही थी।
और वह असहाय था।
और इसी दौरान- एक भीषण संघर्ष, और भी जोर पकड़ रहा था।
धप्प
इस कोढ़क के गदेदार शरीर पर तो, मेरे जोरदार से जोरदार वारों का भी कोई असर नहीं हो रहा है!
और यह एक ही घूंसे में मुझे पूरे ब्रह्मांड के दर्शन करा दे रहा है!
तड़ाक

रेडियोथेरेपी कक्ष!
जहां पर रोगियों का इलाज, रेडियो विकिरणों द्वारा किया जाता है!
रेडियोथेरेपी कक्ष
प्रवेश निषेध
यह कोढक भी मुझे किसी वायरस का शिकार लग रहा है।
यानि विकिरणों के द्वारा अगर इसके शरीर के वायरसों को नष्ट कर दिया जाए,...
... तो यह अपने असली रूप में आ जाएगा! और तब इस पर काबू पाना एक मामूली बात होगी।
ध्रुव के, अचानक और ताबड़तोड़ हमले से कोढ़क भौंचक्का रह गया।
धड़ाक
तगड़
और ध्रुव को उसे ठीक जगह पर पटकने का मौका मिल गया।
तड़ाम
शिकंजे कस गए।
और कोढ़क का शरीर, मशीन के अंदर आ घुसा।
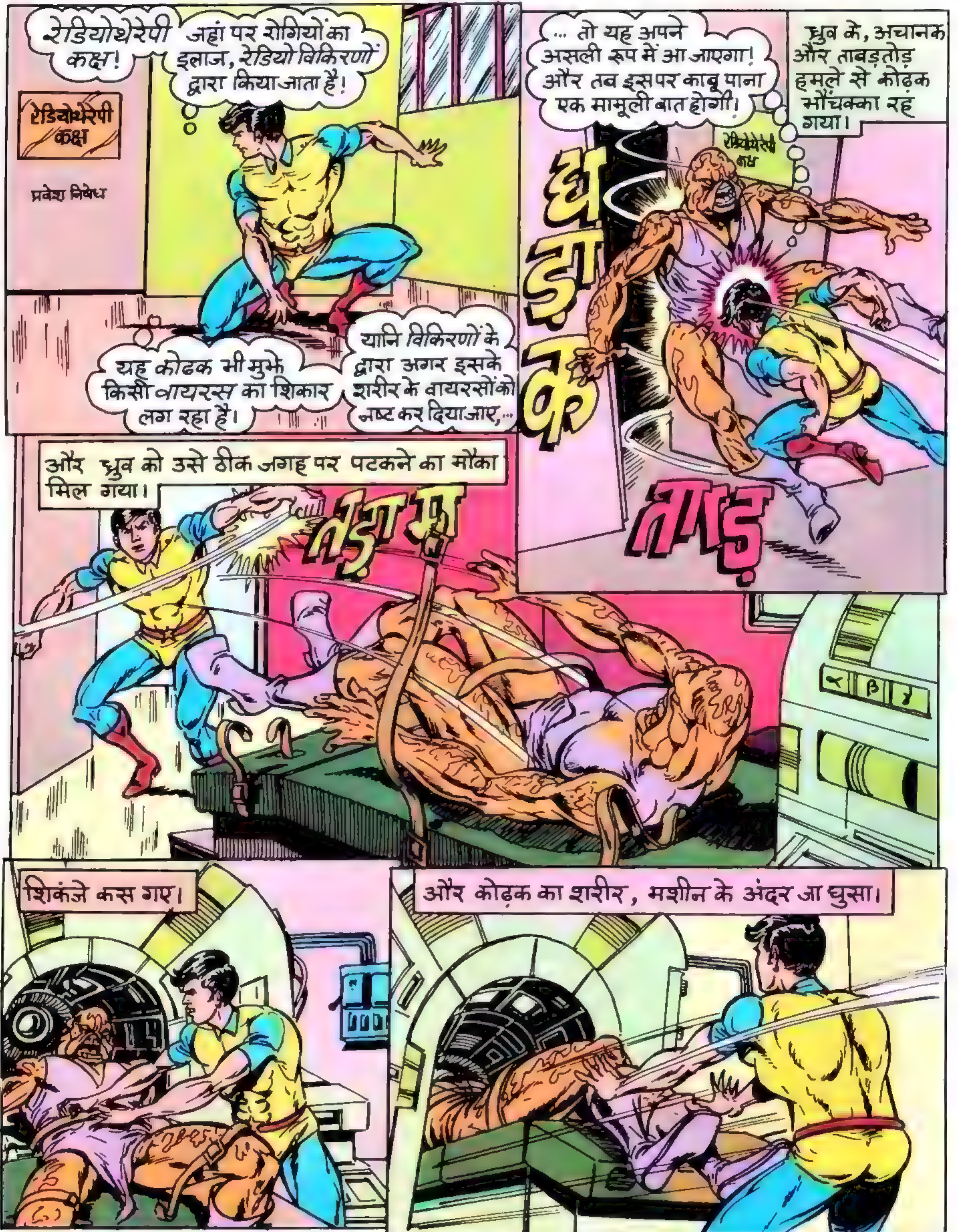
मशीन के चालू होते ही अदृश्य विकिरणों की किरणें, कोढ़क के शरीर पर बरसने लगीं।
और कोढ़क का शरीर तड़फड़ाने लगा।
क्लिक
ईयआ आऊ!
घर्रर्रर्रर्र
रेडियो-विकिरणों का असर हो रहा था।
पर तभी- तड़पते कोढ़क का हाथ, रबर की तरह खिंच कर लंबा होने लगा।
और मशीन को पावर पहुंचाने वाले, बिजली के तार टूट कर नीचे आ गिरे।
चटक
चिड़ तड़ तड़ तिड़
मशीन एक झटके के साथ रुक गई।
अगले ही पल- कोढ़क का गददेदार शरीर, दब कर, बंधनों से बाहर फिसल आया।
?
कोढ़क ने अपना भागने का इरादा बदल दिया था।
ढनाक
तड़ाक
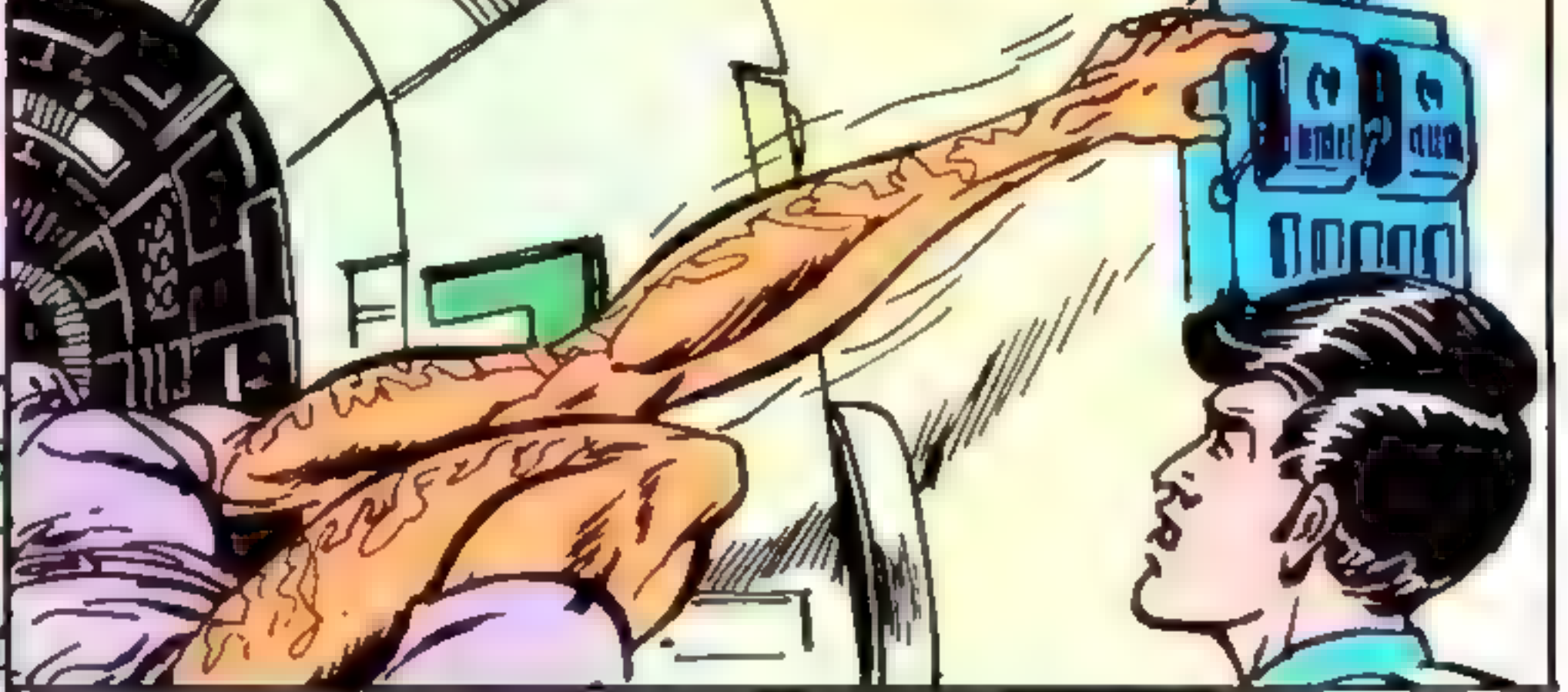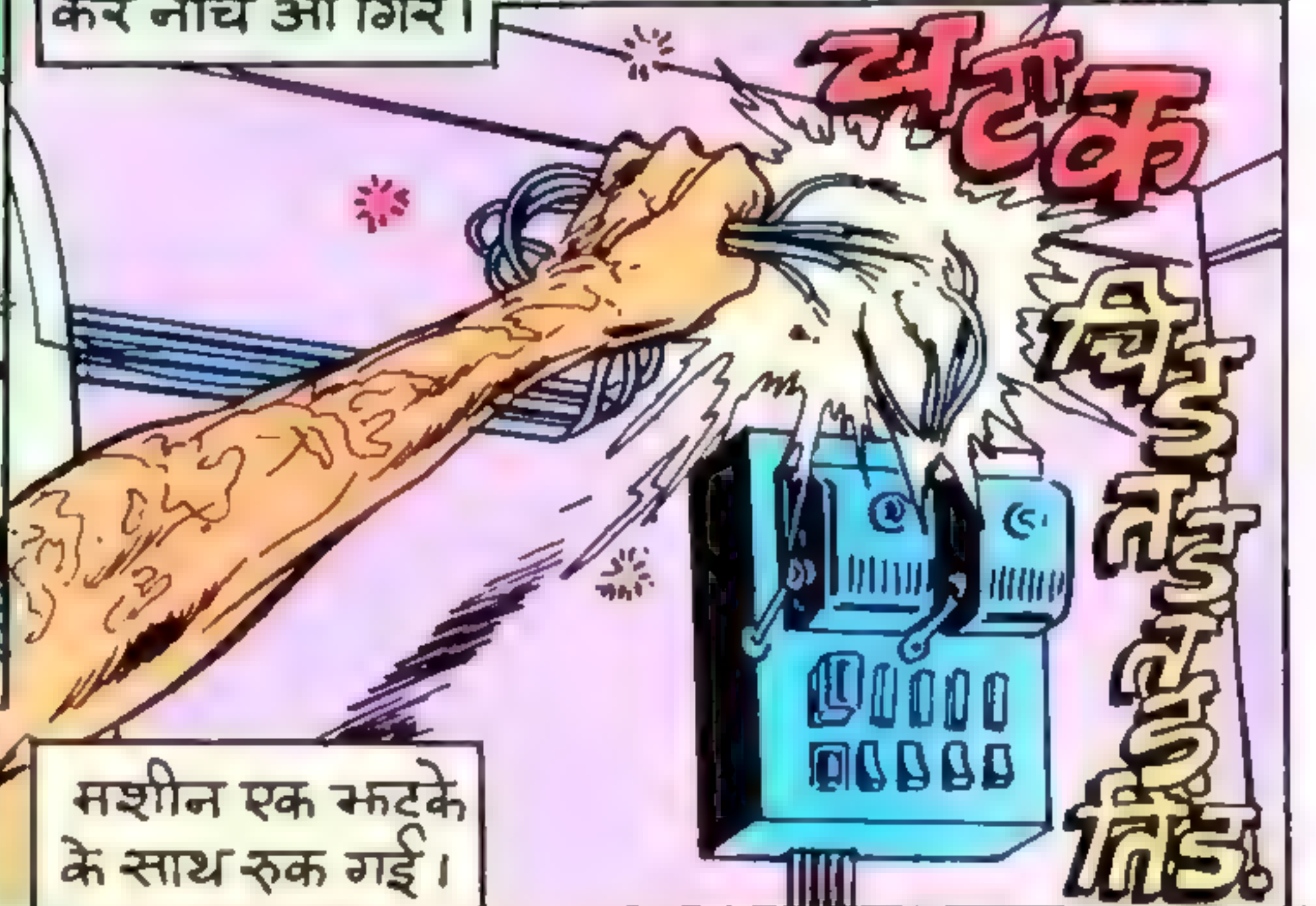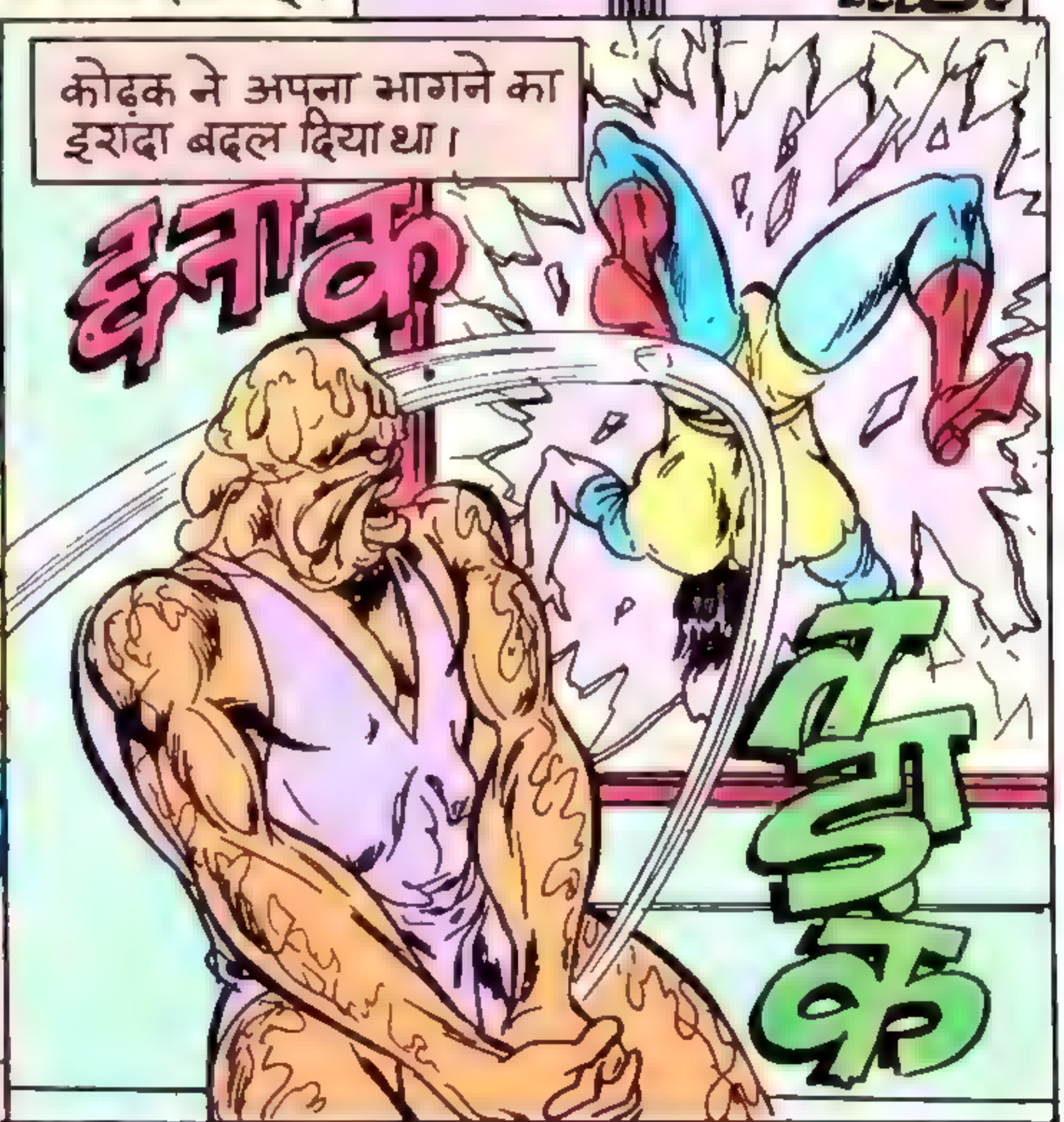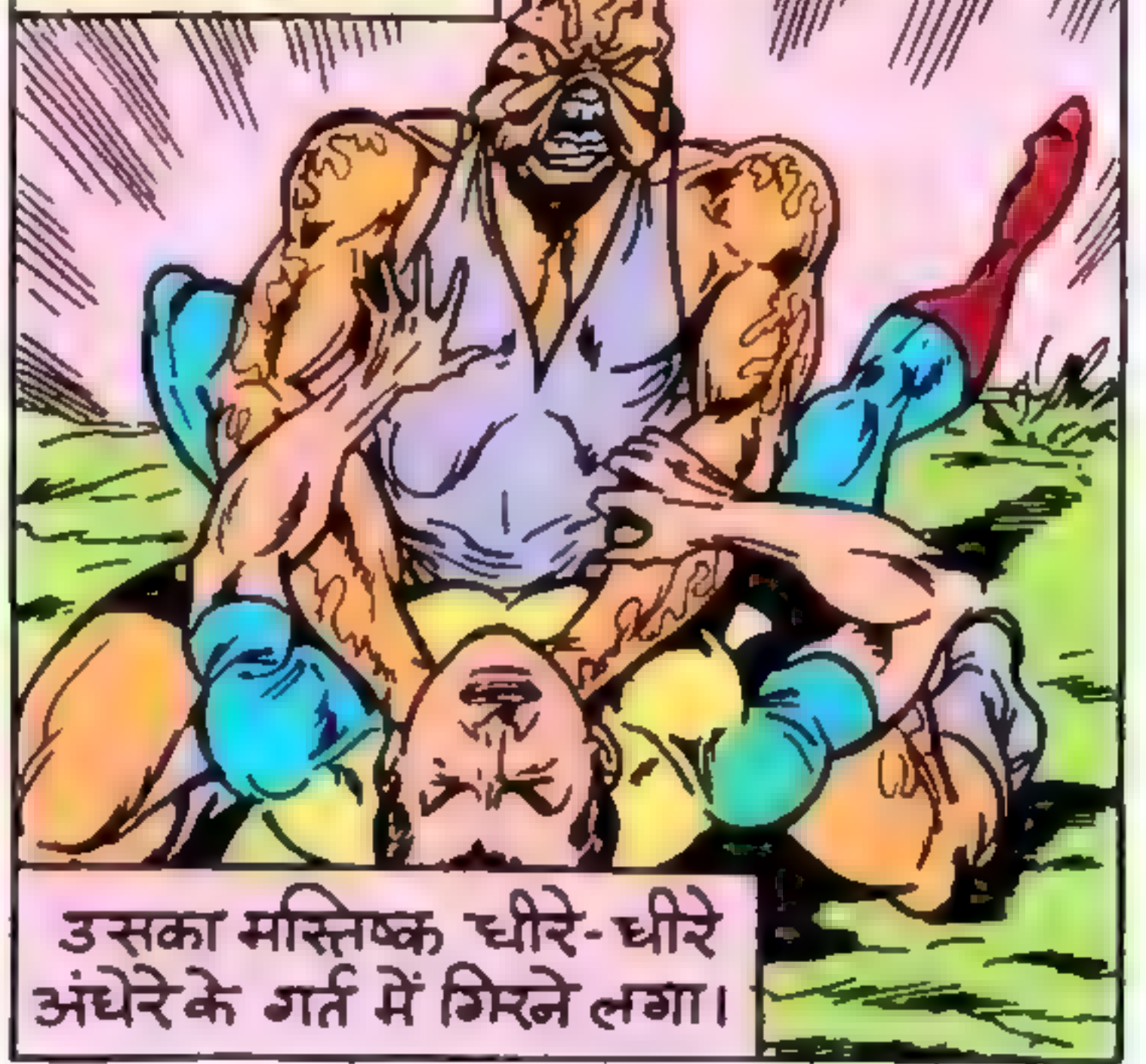
जिंदगी और मौत में, सिर्फ एक सांस की दूरी रह गई थी।

छल छपाक

कि तभी – अस्पताल के बगल में बह रही नहर में, एक तेज हलचल ने कोढ़क का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया।
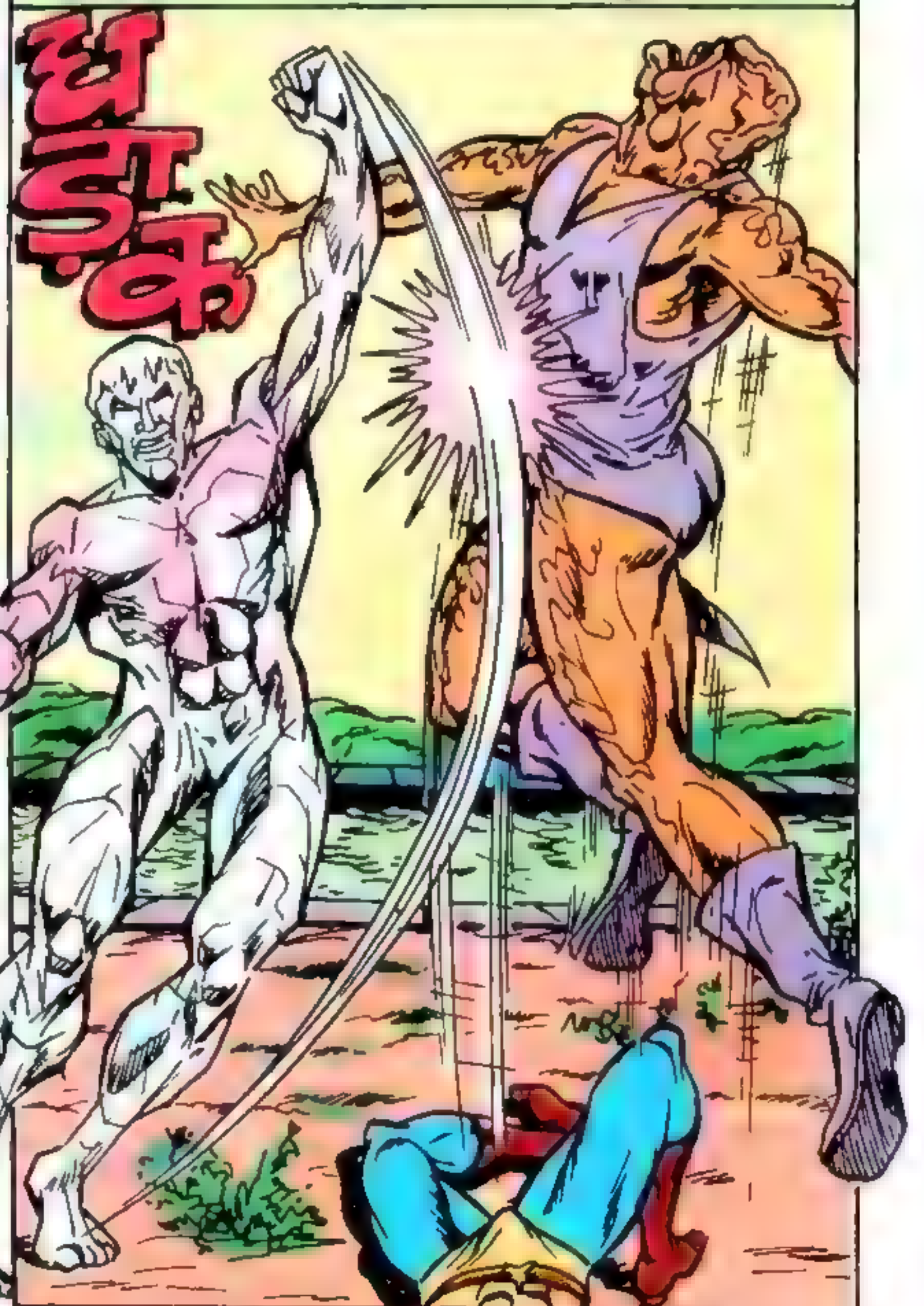
नहर से निकल कर, एक रहस्यमय आकृति, कोढ़क और ध्रुव की तरफ बढ़ रही थी।

कुछ समझ पाने से पहले ही, कोढ़क ने अपने लिजलिजे शरीर को हवा में उड़ता हुआ पाया।

धड़ाक

नहर से निकला हुआ, अजीबोगरीब 'बर्फ-मानव'; कमसेकम कोढ़क का दोस्त तो नहीं था।

कोढ़क, खुद भी, इस 'बर्फ मानव' के एकाएक आ जाने से चकित था।
पर इस वक्त वह किसी से भी लड़ने को तैयार था।
लेकिन उसको 'बर्फ मानव' की शक्तियों का कतई अंदाज नहीं था।
अमानवीय फुर्ती से बर्फ मानव ने कोढ़क के दोनों हाथों को पकड़ लिया।

और कोढ़क के पूरे शरीर में एक तेज ठंडी लहर दौड़ गई। उसका पूरा बदन पलक झपकते सर्द हो गया।
अपनी सारी शक्ति उसको खत्म होती सी महसूस हुई।

कुछ ही पलों में कोढ़क अपने होशोहवास खो चुका था।
और ध्रुव के होश वापस आ रहे थे।
ध्रुव ने बर्फ मानव को अपनी तरफ मुड़ते हुए देखा।

और तभी-शोर होने लगा।
अस्पताल की तरफ से भागते हुए कई लोग घटनास्थल की तरफ आ रहे थे।

बर्फ मानव पलभर के लिए ठिठका।
और फिर उसने नहर में छलांग लगा दी।
छपाक

एक और अजीबोगरीब प्राणी !!
यह आखिर था क्या? कोढ़क का दुश्मन? या फिर मेरा दुश्मन?
बर्फ मानव किसका आदमी था, यह तो किसी को भी मालूम नहीं था।
पर कोढ़क की मदद के लिए डॉ॰ वायरस का एक और आदमी, अस्पताल के बाहर मौजूद था।
और इस अफरा-तफरी में किसी ने भी उसको अस्पताल से बाहर जाते नहीं देखा।
उस आदमी की मंजिल थी...
अपने अपनी पूरी जंगली शक्ति का इस्तेमाल किया।
और उसका एक पैर, वृक्षपशु के शिकंजे से आजाद हो गया।
...नेशनल फॉरेस्ट के छोर पर बनी, डॉ॰ वायरस की प्रयोगशाला।
जहां पर वनपुत्र एक भयंकर खतरे का सामना कर रहा था।
...एक सुई वनपत्र की तरफ बढ़ रही थी।
और वनपुत्र को आभास हो रहा था, कि यह सुई, बंदूक से भी अधिक खतरनाक है।
अगले ही पल - डॉ॰ वायरस पर एक भरपूर लात आ पड़ी।
धड़ाक
इंजेक्शन के टुकड़े-टुकड़े हो गए।

डॉ॰ वायरस क्रोध से पागल हो उठा।
ठहरो! गोली मत चलाना! इसके टुकड़े-टुकड़े तो मेरा पालतू वृक्षपशु करेगा!
इसी बहाने इसकी टेस्टिंग भी हो जाएगी!
वृक्षपशु, स्टेक!
आदेश मिलते ही, वृक्षपशु के शाखारूपी हाथ, वनपुत्र के शरीर को दो विपरीत दिशाओं में खींचने लगे।
वृक्षपशु की शक्ति के सामने, वनपुत्र की ताकत मामूली थी।
परंतु इससे पहले, कि वनपुत्र के शरीर को, वृक्षपशु चीर डालता-
वनपुत्र के मुंह से एक अजीब सी चीख निकली-
वनपुत्र की एक ही पुकार पर-
जंगल के छोर पर लगा, यूकिलिप्टस का एक पेड़ तेजी से नीचे झुका।
और अगले ही पल- डॉ॰ वायरस ने अपनी जिंदगी का सबसे आश्चर्यजनक दृश्य देखा।
और उसकी शाखाओं ने, वृक्षपशु के तने को कस कर जकड़ लिया।
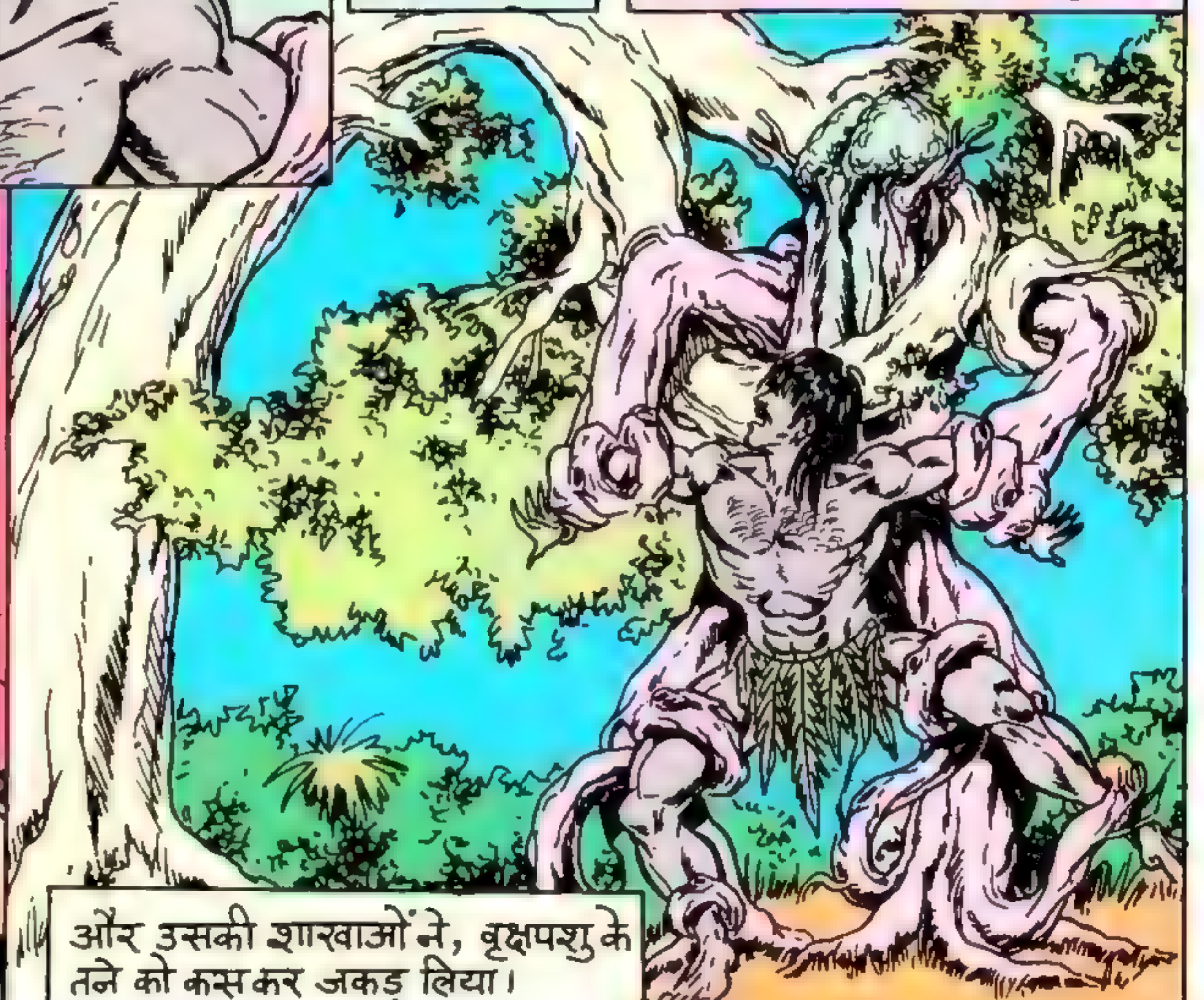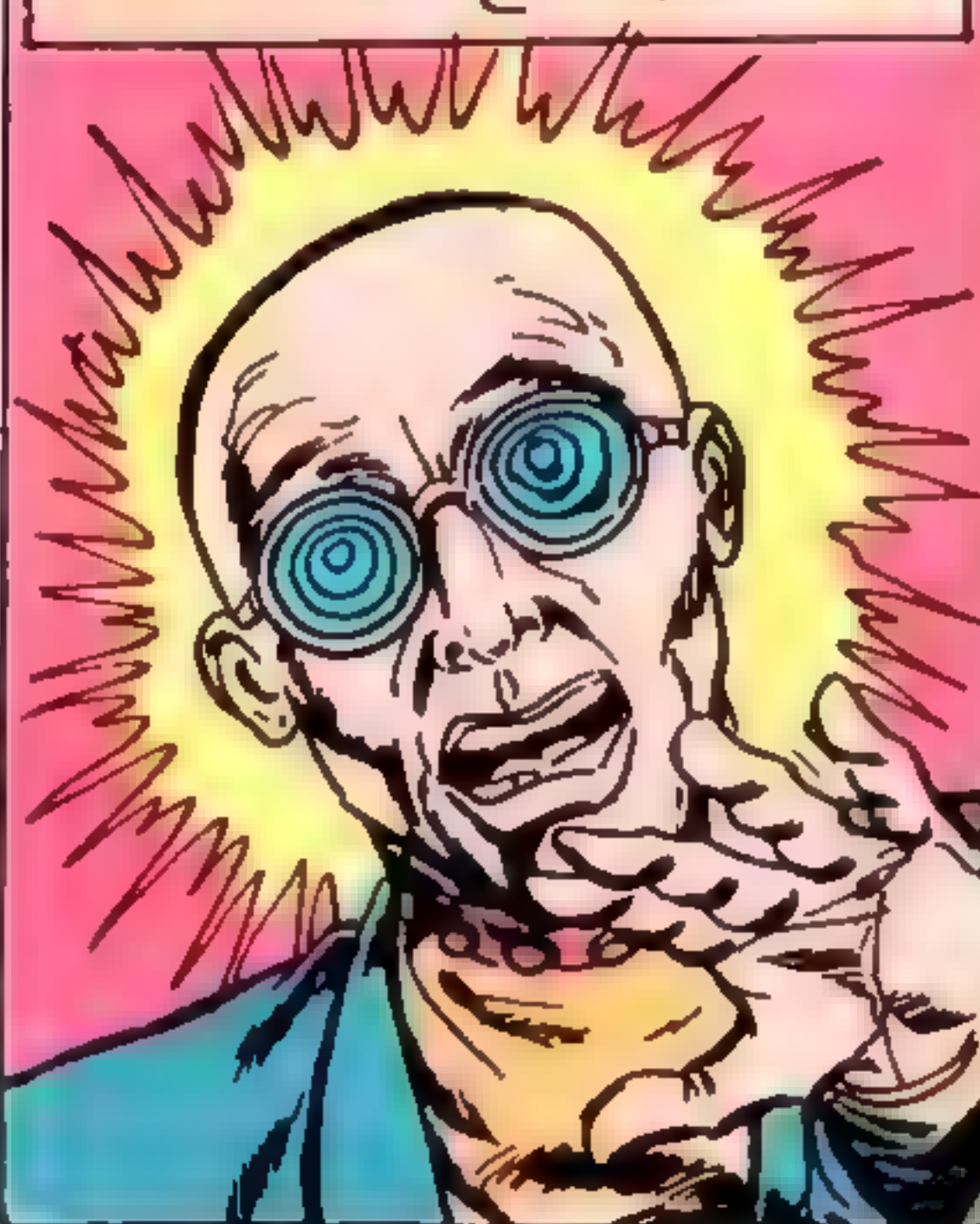
एक तेज झटके से वृक्षपशु की जड़ें, जमीन से बाहर आ गईं।
वनपुत्र, वृक्षपशु के चंगुल से बचकर दूर जा गिरा।
कड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़
पर इसके बाद भी, यूकिलिप्टस की शाखाओं ने वृक्षपशु के 'शरीर' को नहीं छोड़ा।...
...और वृक्षपशु को अपनी असीमित ताकत दिखाने का मौका मिल गया।
कड़ाक
अब आश्चर्यचकित होने की बारी, वनपुत्र की थी।
वृक्षपशु आजाद हो गया था।
जड़ें जमीन से बाहर आ जाने के बावजूद भी वृक्षपशु खड़ा हुआ था।
और वह वनपुत्र के टुकड़े करने वाले आदेश को भूला नहीं था।
एक खूनी संघर्ष अभी बाकी था।
इसके विपरीत- राजनगर अस्पताल में फिलहाल शांति थी।
तुम्हारा ख्याल एकदम सही था, ध्रुव!
इसके शरीर में एक अजीब सा जीवाणु मौजूद है, जो कोढ़ के जीवाणु से मिलता-जुलता है।
इसकी यह हालत उसी जीवाणु के कारण है।

एक और जीवाणुओं का शिकार! ... अब मुझे याद आ रहा है, डॉक्टर!
उन बैंक लुटेरों में से एक लुटेरे ने, ट्रांसमीटर पर, अपने बॉस को, 'डॉ॰ वायरस' के नाम से संबोधित किया था।

उस समय मैंने इसपर ज्यादा ध्यान नहीं दिया था। पर अब मुझे यकीन हो गया है कि इन प्राणियों के बॉस का नाम डॉ॰ वायरस ही हो सकता है!
पर सवाल तो यह है कि उस तक पहुंचा कैसे जाएगा!
यह गोल कांटा मुझको, कोढ़क के पैर में धंसा हुआ मिला था! अगर इससे तुमको कोई सूत्र मिल सके तो...!

यह एक जंगली पेड़ का कांटा है! और राजनगर के पास सिर्फ एक ही जंगल है! नेशनल फॉरेस्ट! मुझे मेरे सवालों का जवाब वहीं से मिलेगा!

पर नेशनल फॉरेस्ट में, कोढ़क के हार की खबर, ध्रुव से काफी पहले पहुंच चुकी थी।

... बर्फ-मानव! और उसने कोढ़क पर हमला किया!
अगर मैं ठीक समझ रहा हूं, तो यह सिर्फ एक ही...

पर डॉ॰ वायरस की बात मुंह में ही रह गई।
क्योंकि उसी पल-लेबोरेट्री का एक हिस्सा धराशायी हो गया।
धड़ाक

वृक्ष-पशु ने एक और पेड़ को जड़ से उखाड़ दिया था।
कड़क
पड़ड़ड़ड़ाााक
वनपुत्र, इस शक्तिशाली दुश्मन के लिए, अपना लड़ाई का तरीका बदलने को मजबूर हो गया।
उसने जमीन को थपथपाया।-
और जमीन में लगे, असंख्य घासों के तिनकों ने, अपनी जड़ों को, जमीन के अंदर, और गहराई तक बढ़ा दिया।
और अपनी पकड़ मजबूत हो जाने के बाद...
...घास के तिनकों ने अपने आकार को तेजी से बढ़ाना शुरू कर दिया।
और वृक्षपशु के शरीर पर, चारों तरफ से घासें आ लिपटीं।
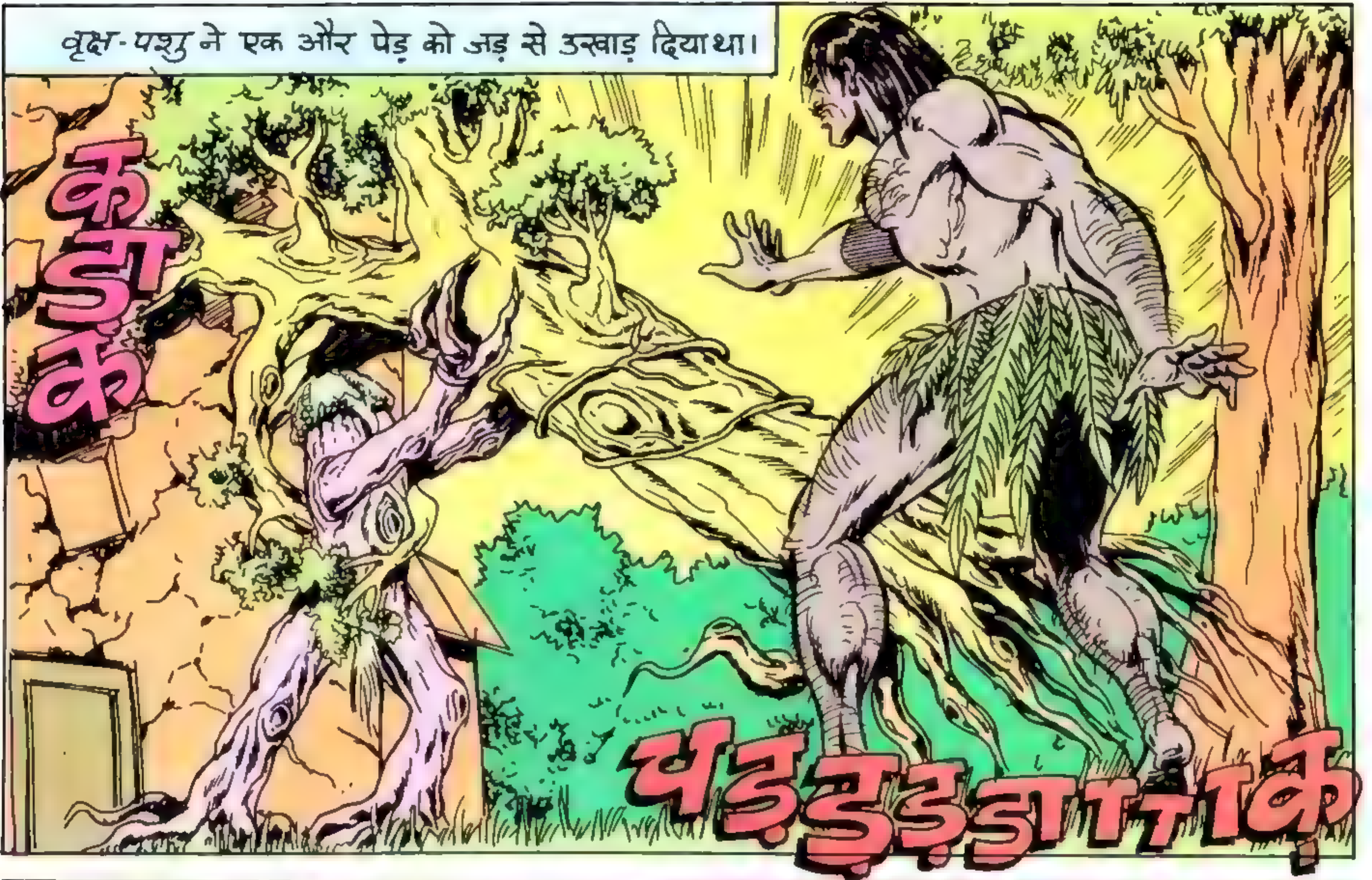
वृक्ष-पशु का हर 'अंग', अलग-अलग दिशाओं में खिंचने लगा।
चियांयांयां
और उसी पल- एक गाड़ी, तेजी से शहर की तरफ बढ़ी।
जल्दी चलो, शकूरा! अगर यह 'बर्फ-मानव' वही है, जो मैं समझ रहा हूं, ...
...तो सबसे पहले हमको उसे रोकने का इंतजाम करना पड़ेगा।
ओह! वह दुष्ट भाग रहा है!
इसने मेरे दोस्त, पेड़ों का एक विकृत रूप बनाकर इनको बदनाम करने की कोशिश की है।
मैं इस दुष्ट को बगैर सबक सिखाए नहीं छोड़ूंगा।
वनपुत्र, चीते की सी गति से गाड़ी के पीछे लपका।
वृक्षपशु और घासों की भीषण लड़ाई का अंत देख पाने का समय, अब उसके पास नहीं था।
चटाक
लेकिन इस लड़ाई को देखने के लिए, एक दूसरा दर्शक, घटनास्थल की तरफ बढ़ रहा था।
नेशनल फॉरेस्ट एकदम शांत और सुनसान स्थान है! डॉ० वायरस को अपने अड्डे के लिए, इससे अच्छी जगह नहीं मिल सकती!
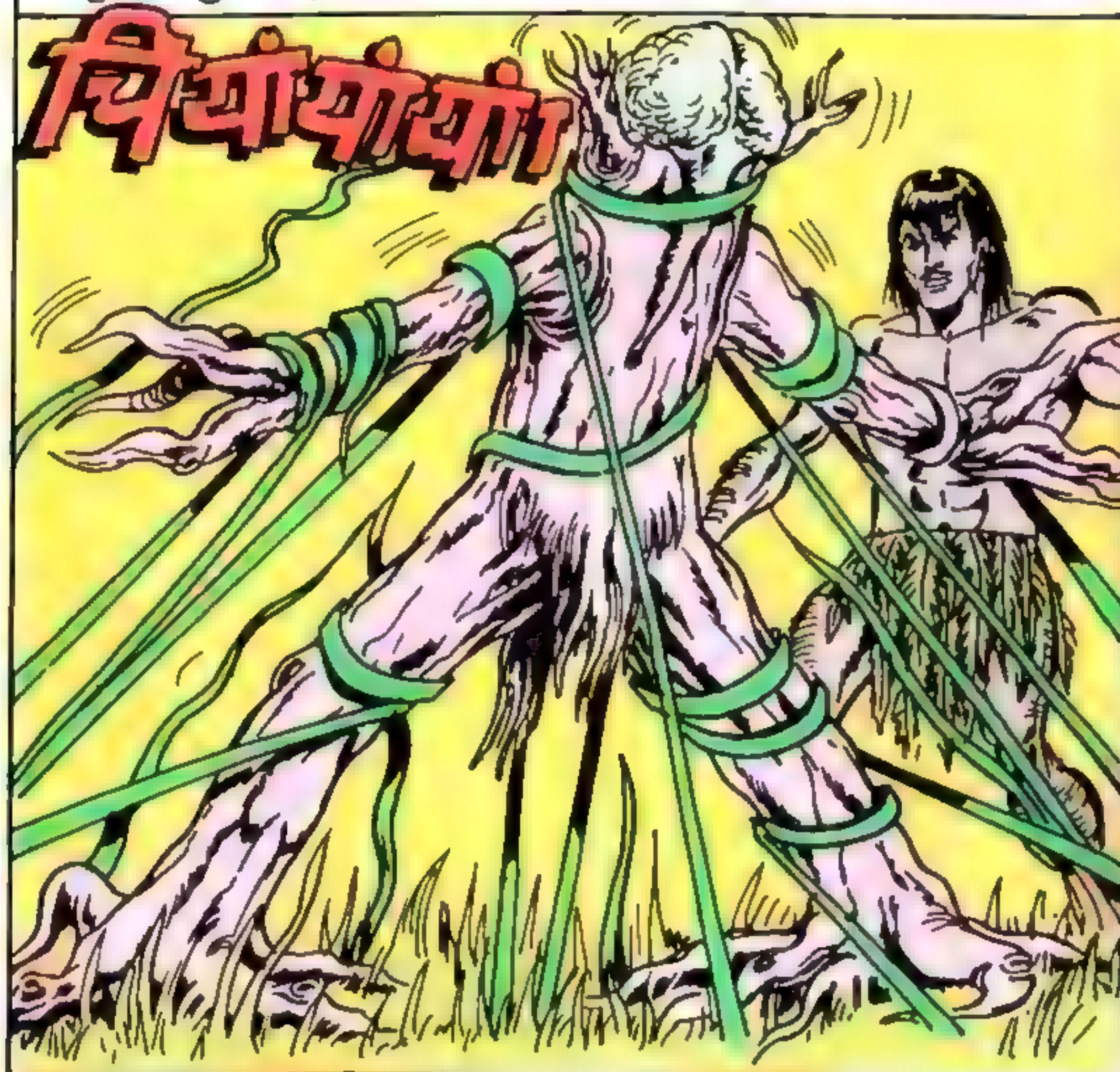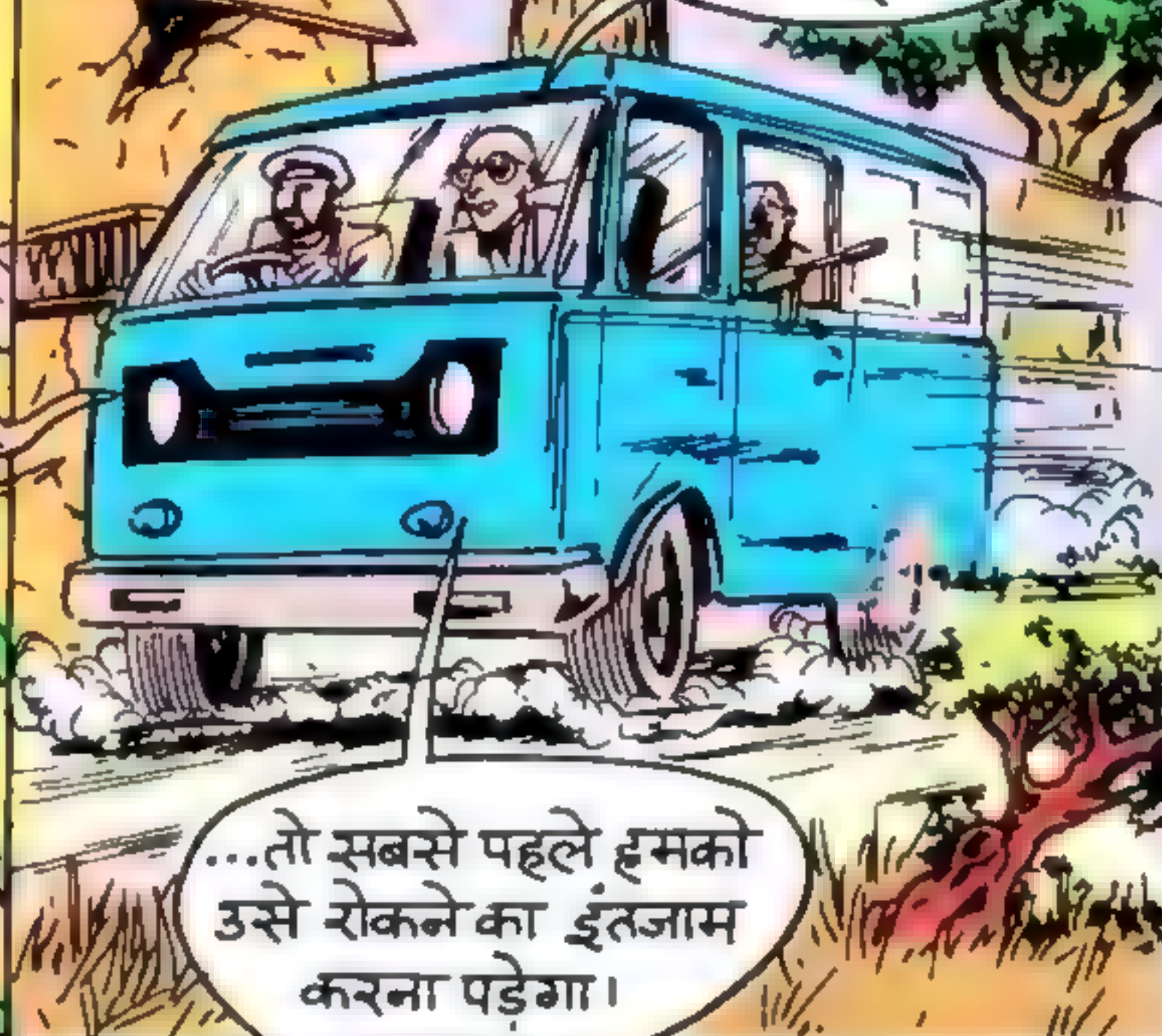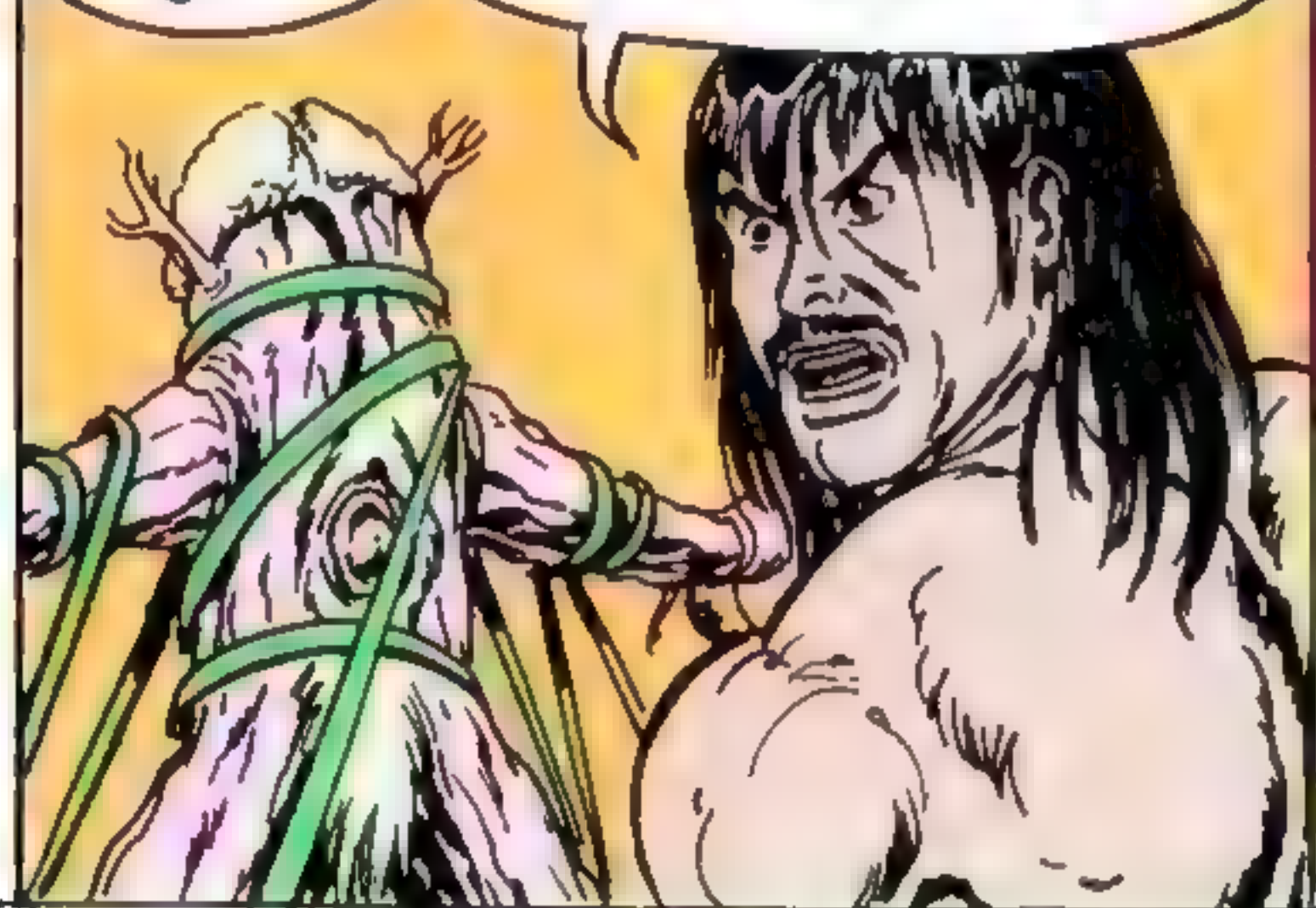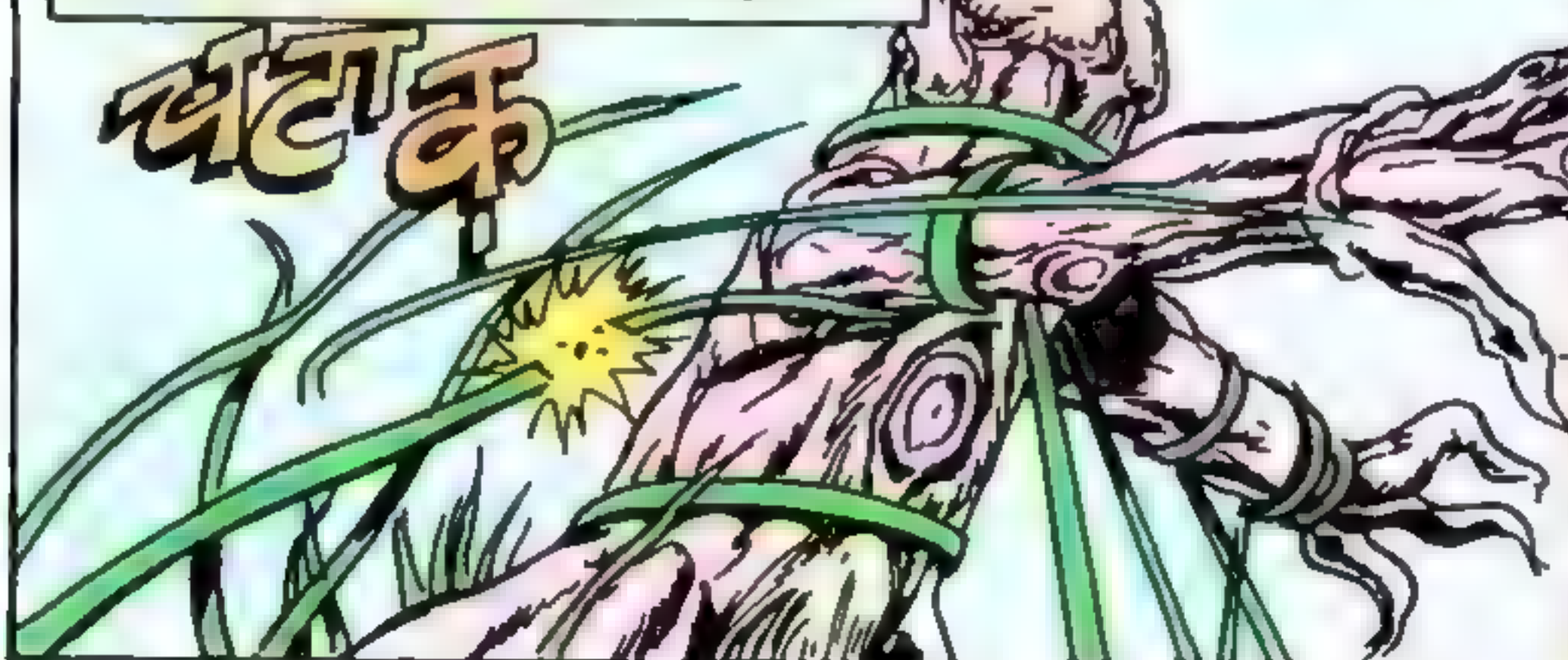
ध्रुव तेजी से लेबोरेट्री के पीछे, इस विनाश का कारण जानने के लिए, लपका।

वृक्षपशु ने अपनी एक जड़ को लंबा किया।
और उसके सहारे, उसका पूरा शरीर लट्टू की तरह नाचने लगा।
घर्रर्र र्रर्रर्र
वृक्षपशु के शरीर को, चारों तरफ से खींचती घासें, तेजी से तने पर लिपटने लगीं।
उनकी जड़ों पर जोर पड़ने लगा।
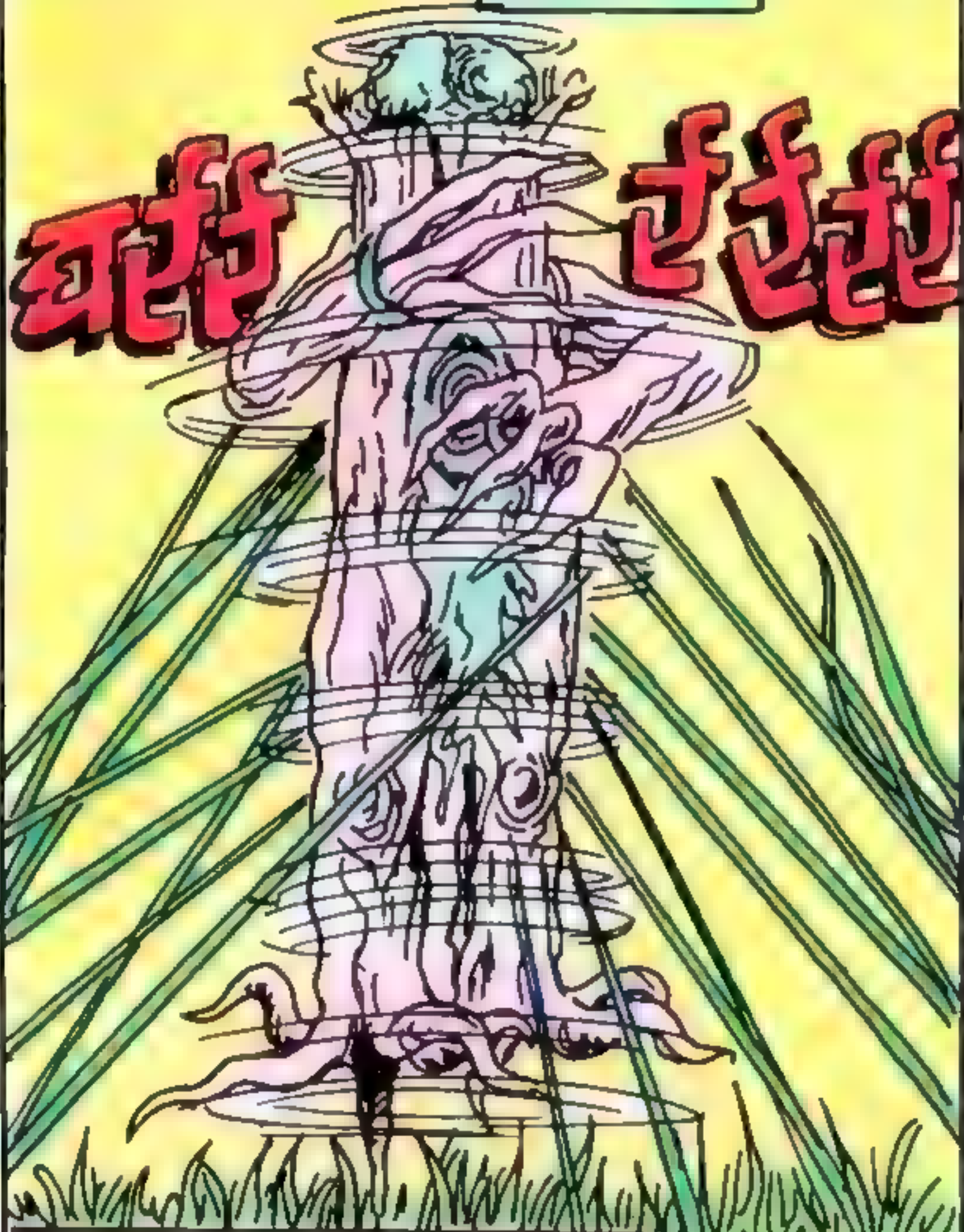
कुछ ही पलों में, लड़ाई का फैसला हो गया।
कुछ घास के तिनके जड़ से उखड़ गए। और जो कमजोर थे, वे टूट गए।
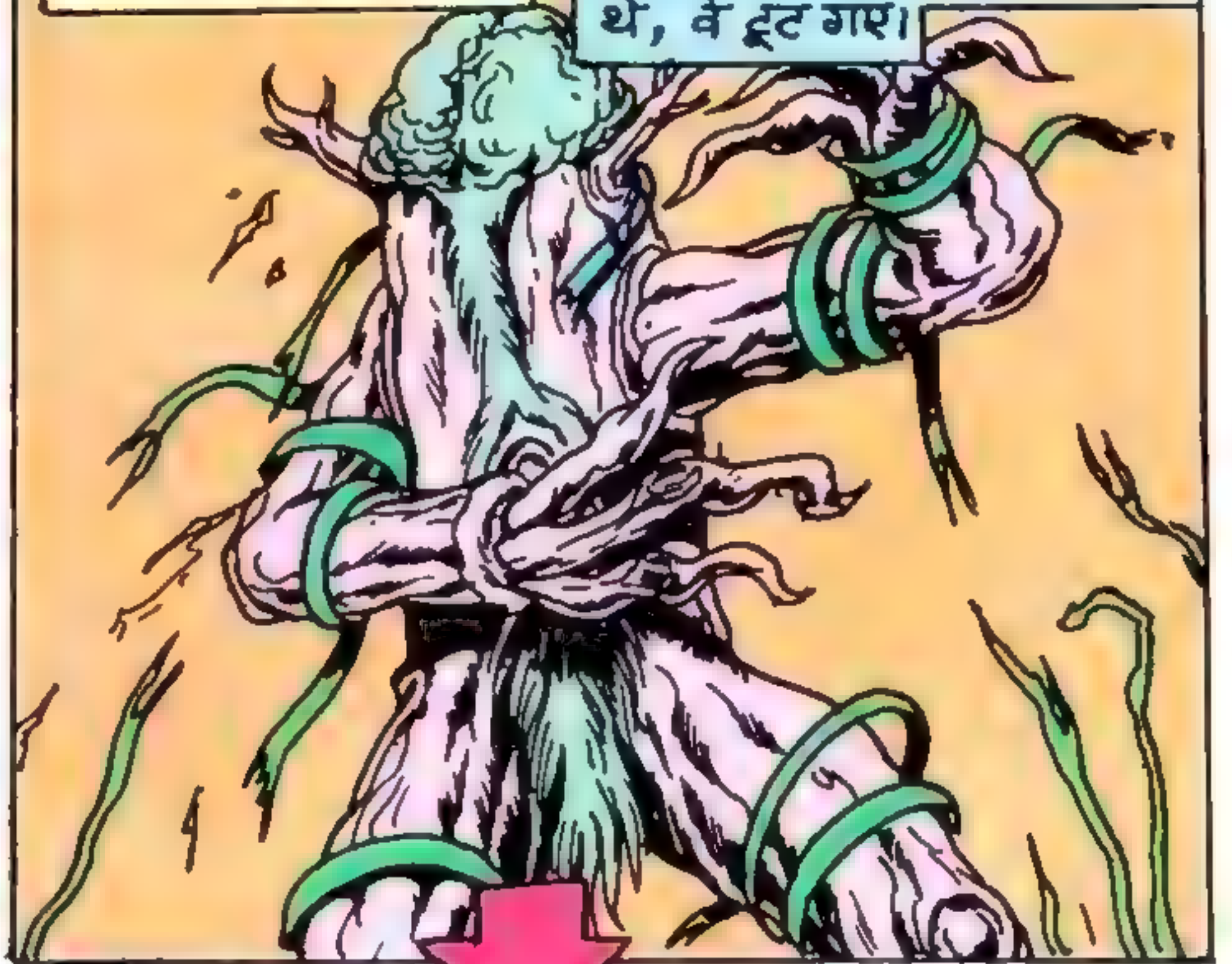
वृक्षपशु कुछ देर तक भ्रमित सा खड़ा रहा।
वह अपने स्वामी के आदेश की प्रतीक्षा कर रहा था।
लेकिन आदेश देने वाला वहां पर था ही नहीं।
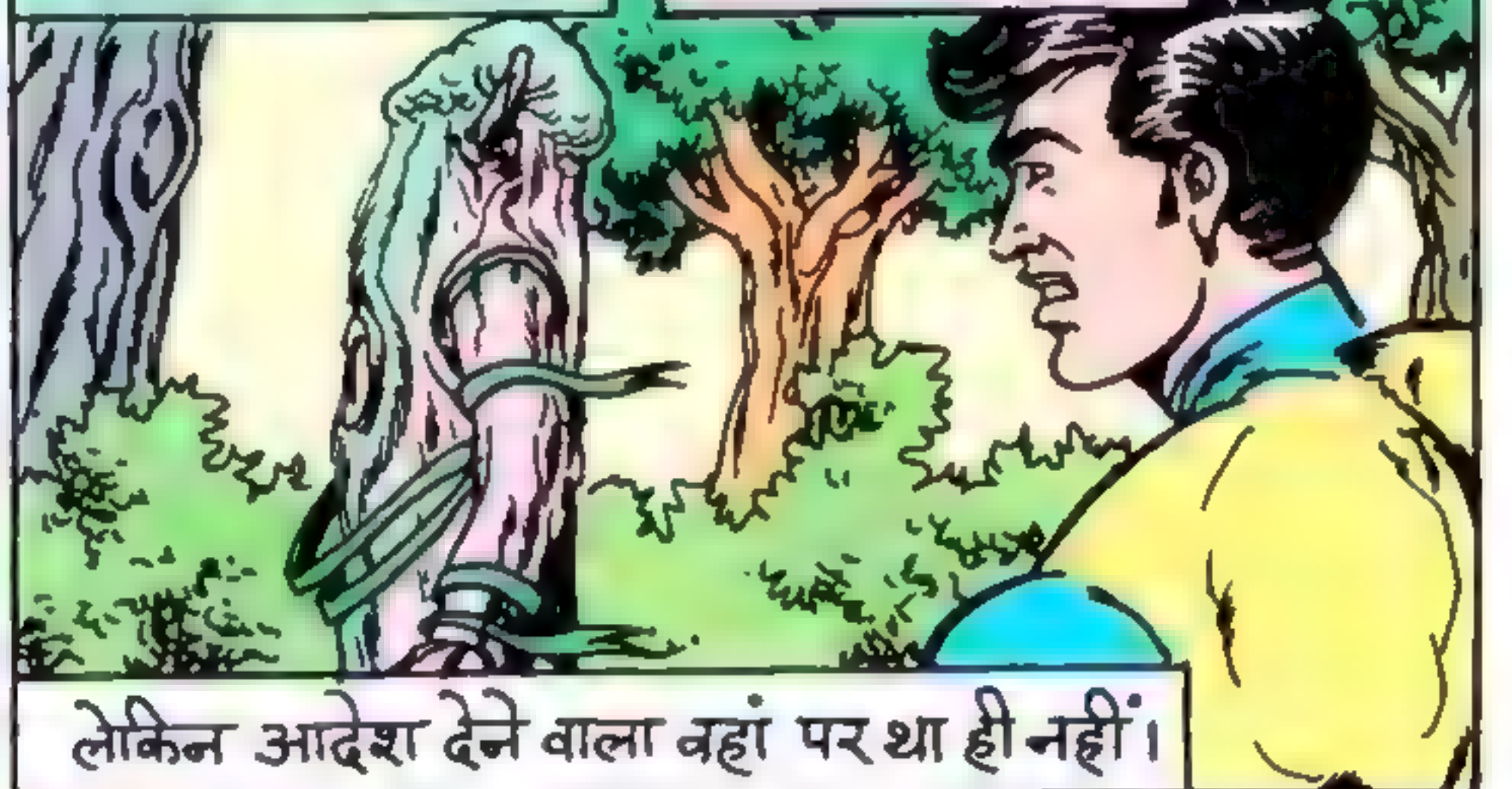
सिर्फ, डॉ॰ वायरस की जेब में रखे ट्रांसमीटर से सिग्नल, वृक्षपशु के 'कंप्यूटर रिसीवर' तक पहुंच रहे थे।
वृक्षपशु, सिग्नलों का पीछा करते हुए, राजनगर की तरफ बढ़ चला।
यह तो मुझे नहीं मालूम, कि यह क्या चीज है!
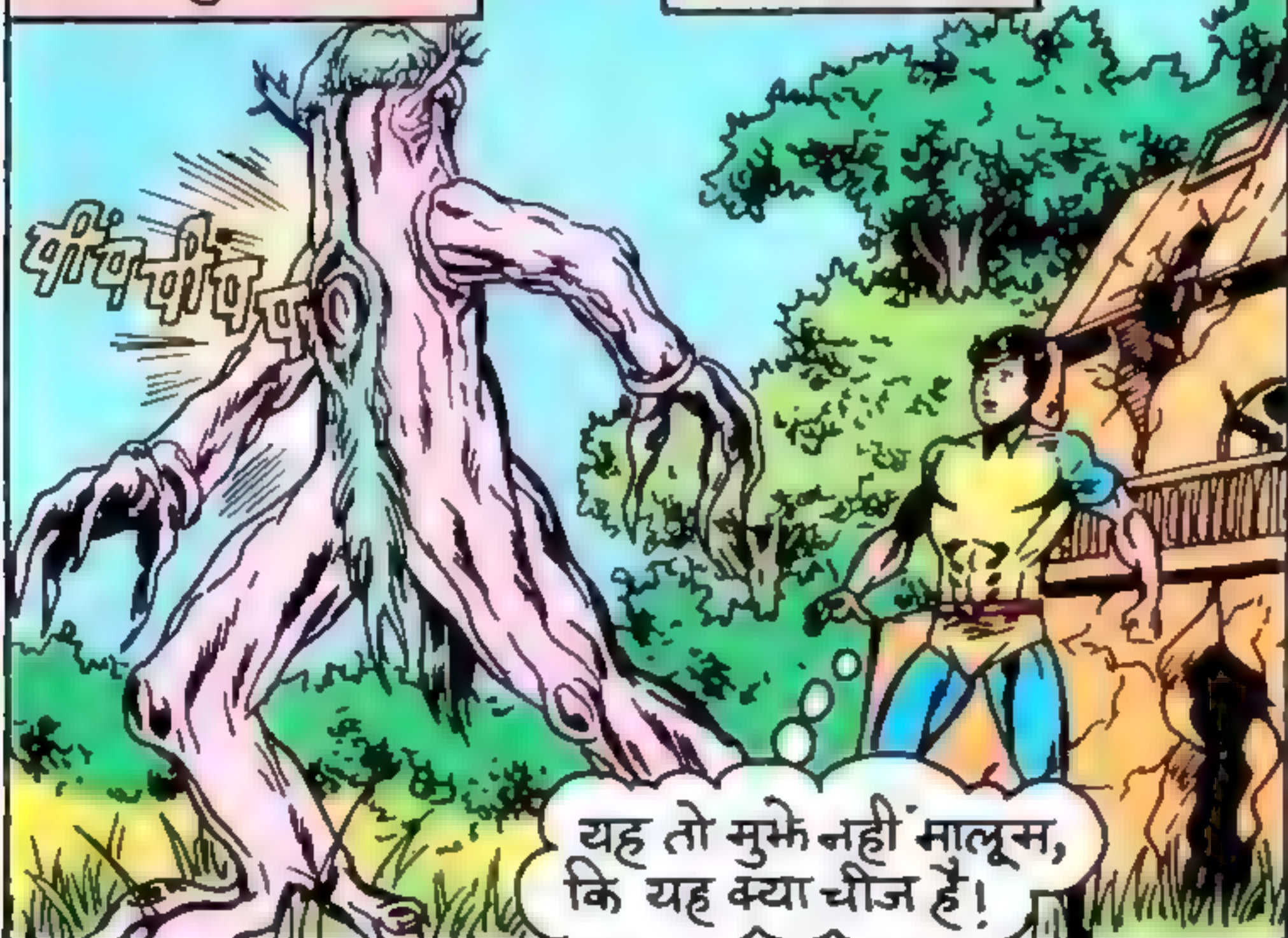
पर मैं इतना जरूर समझ रहा हूं, कि यह अगर राजनगर पहुंच गया, तो फिर राजनगर की खैर नहीं है।
ध्रुव वृक्षपशु की तरफ लपका -
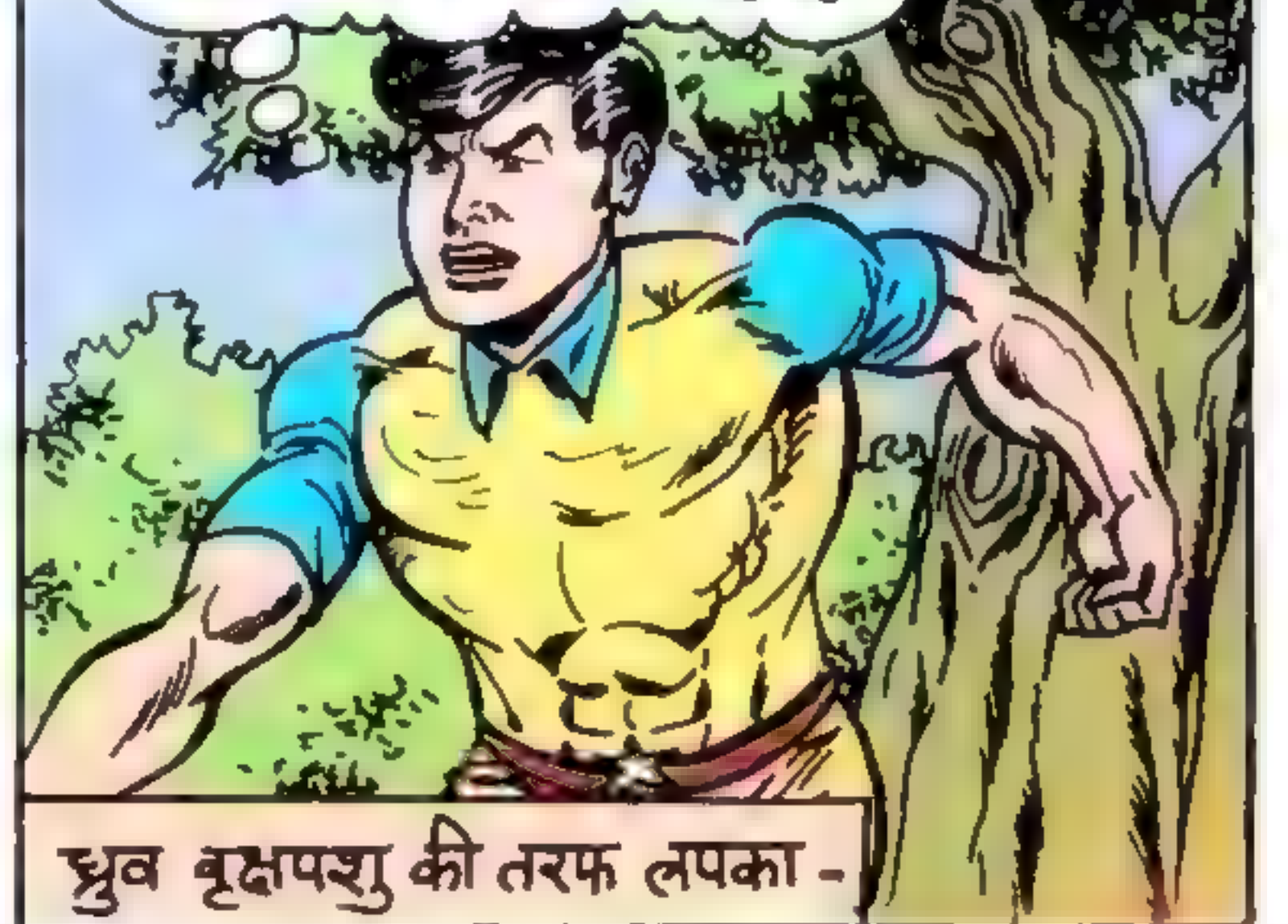
और उसका शरीर, गोली की तरह वृक्षपशु के तने से आ टकराया।
वृक्षपशु लड़खड़ाया तक नहीं।
घड़ाक
बल्कि, ध्रुव के जमीन तक वापस पहुंच पाने से पहले ही, लकड़ी की एक सख्त शाखा, उसके बदन से आ टकराई।
ताड़
इस भयानक जीव पर, मेरे वारों का असर नहीं होगा। इस पर वार करने के लिए मुझे एक भारी हथियार की जरूरत है!
ध्रुव ने मोटरसाइकल को स्टार्ट करके, वृक्षपशु से विपरीत दिशा में मोड़ दिया।
पलभर के लिए वृक्षपशु को ऐसा लगा मानो ध्रुव उससे डरकर भाग रहा है।
पर कुछ दूर जाकर, ध्रुव ने मोटर-साइकल को वापस मोड़ा।
उसका हाथ एक्सीलेटर पर पूरा घूम गया।
स्पीडोमीटर की सुई, सौ पर थिरकने लगी।

और मोटरसाइकल, एक मिसाइल की सी रफ्तार से वृक्षपशु से आ टकराई।
वृक्षपशु यह वार नहीं झेल पाया।
हिंयांआं
धड़ाक

उसका पूरा 'शरीर' लड़खड़ा कर नीचे आ गिरा।
धम्मम्मम्म
इस भीषण टक्कर से मोटरसाइकल की टंकी भी टूट कर, चूने लगी।
पेट्रोल ने बहकर वृक्ष-पशु के पूरे तने को भिगो दिया।
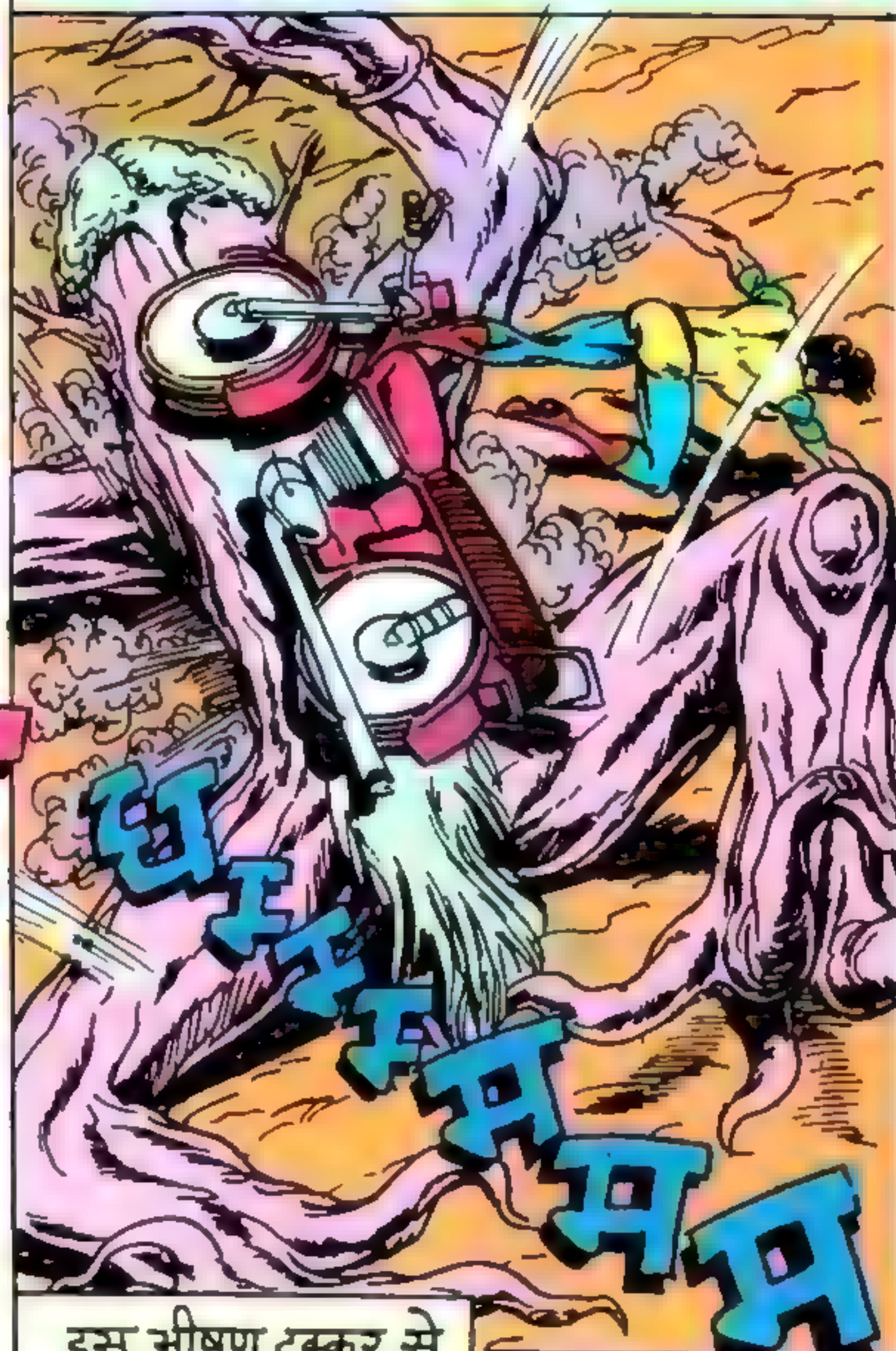
किस्मत ने ध्रुव को एक अच्छा मौका दे दिया था।
उसने एक तेज झटके से मोटरसाइकल का स्पार्क प्लग खींच लिया।
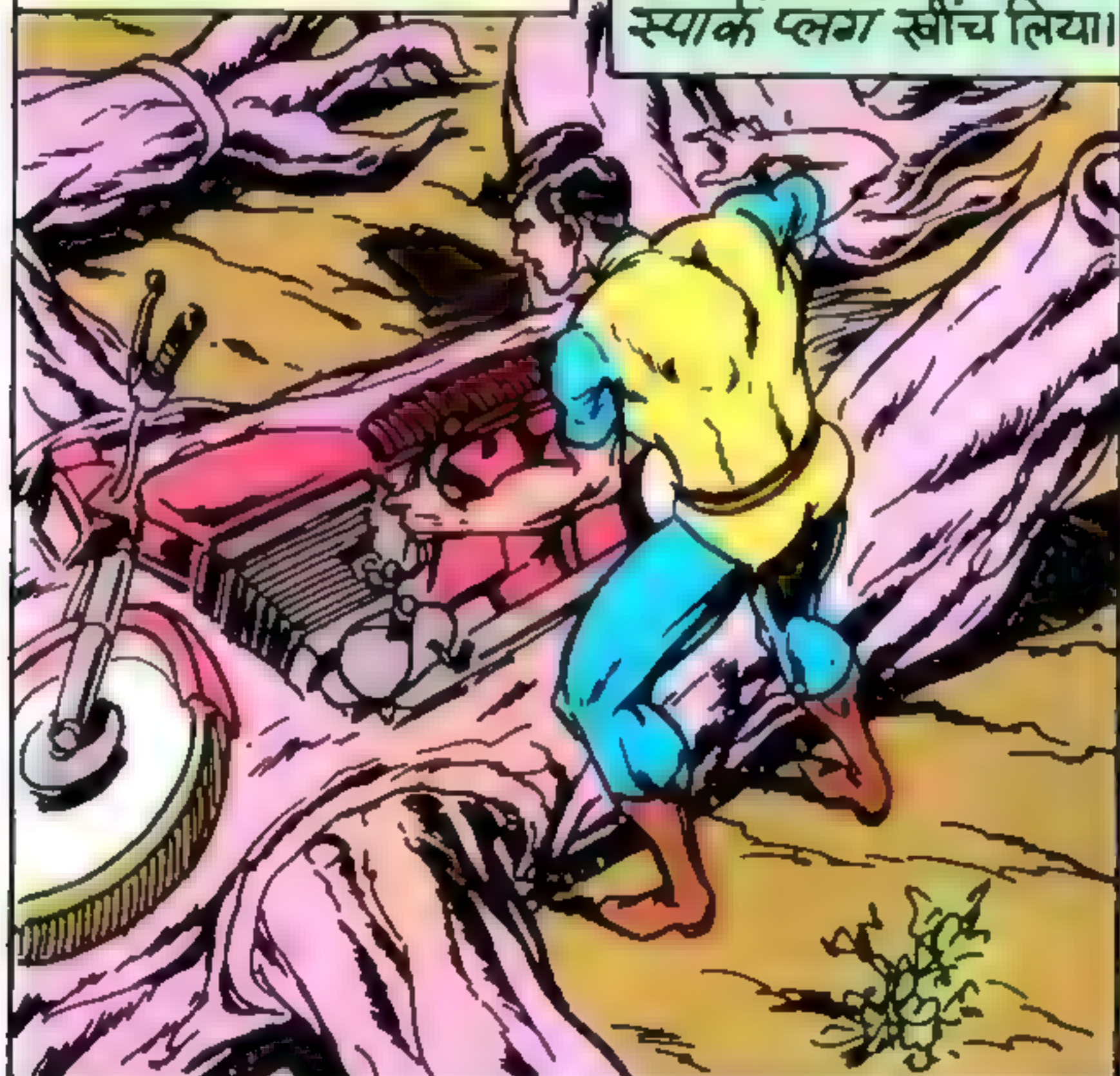
एक 'किक' लगते ही, 'स्पार्क प्लग' से कई चिंगारियां निकलकर, वृक्षपशु के पेट्रोल से तर तने पर आ गिरीं।

देखते ही देखते, वृक्षपशु का शरीर, शोलों में घिर गया।
ध्रुव ने जीत की खुशी में, एक लंबी सांस खींची।
हह!
पर तभी - वृक्षपशु के माथे से एक लिसलिसे द्रव की धार फूट निकली।
हिस्स्स
ईस्स्स
हिस्स्स
और उसके तनेरूपी शरीर पर दौड़ रहीं, आग की लपटें, शांत होने लगीं।
वृक्षपशु एक बार फिर, ध्रुव की तरफ बढ़ा।
और इसबार ध्रुव उसके चंगुल में फंस ही गया।
हालांकि मोटरसाइकल की टक्कर से वृक्षपशु का तना काफी क्षतिग्रस्त हो गया था, पर उसकी अमानवीय ताकत में कोई कमी नहीं आई थी।
और उसको जो वनपुत्र को चीरने का आदेश मिला था, उसका पालन अब वह ध्रुव के शरीर पर कर रहा था।
और राजनगर में - स्व॰ डॉ॰ वर्गीस के मकान में एक नया घटनाक्रम शुरू हो रहा था।
क··कौन हो तुम लोग? क्या चाहते हो?
तुम दोनों को, मिसेज वर्गीस!
पर घबराओ मत···!
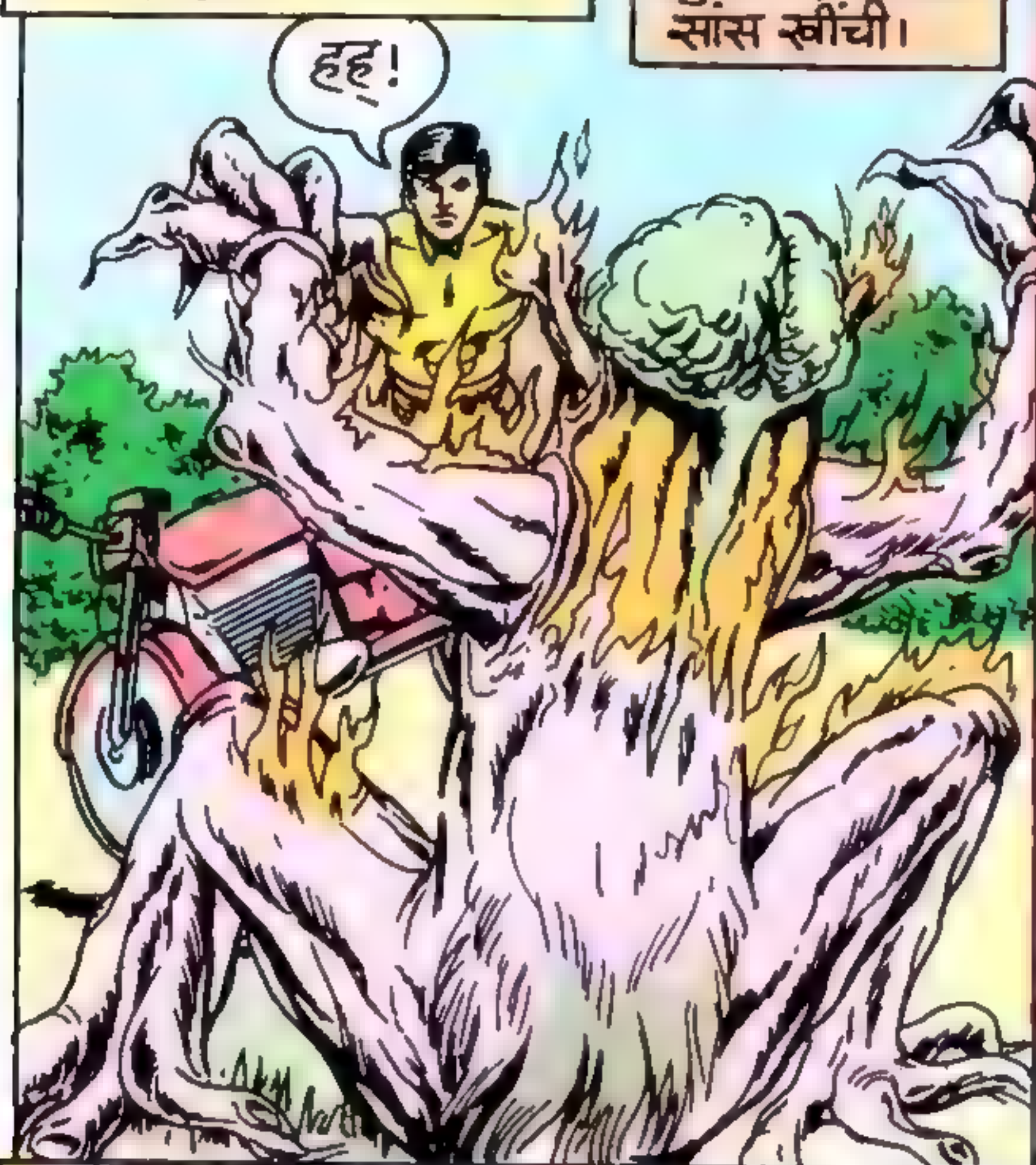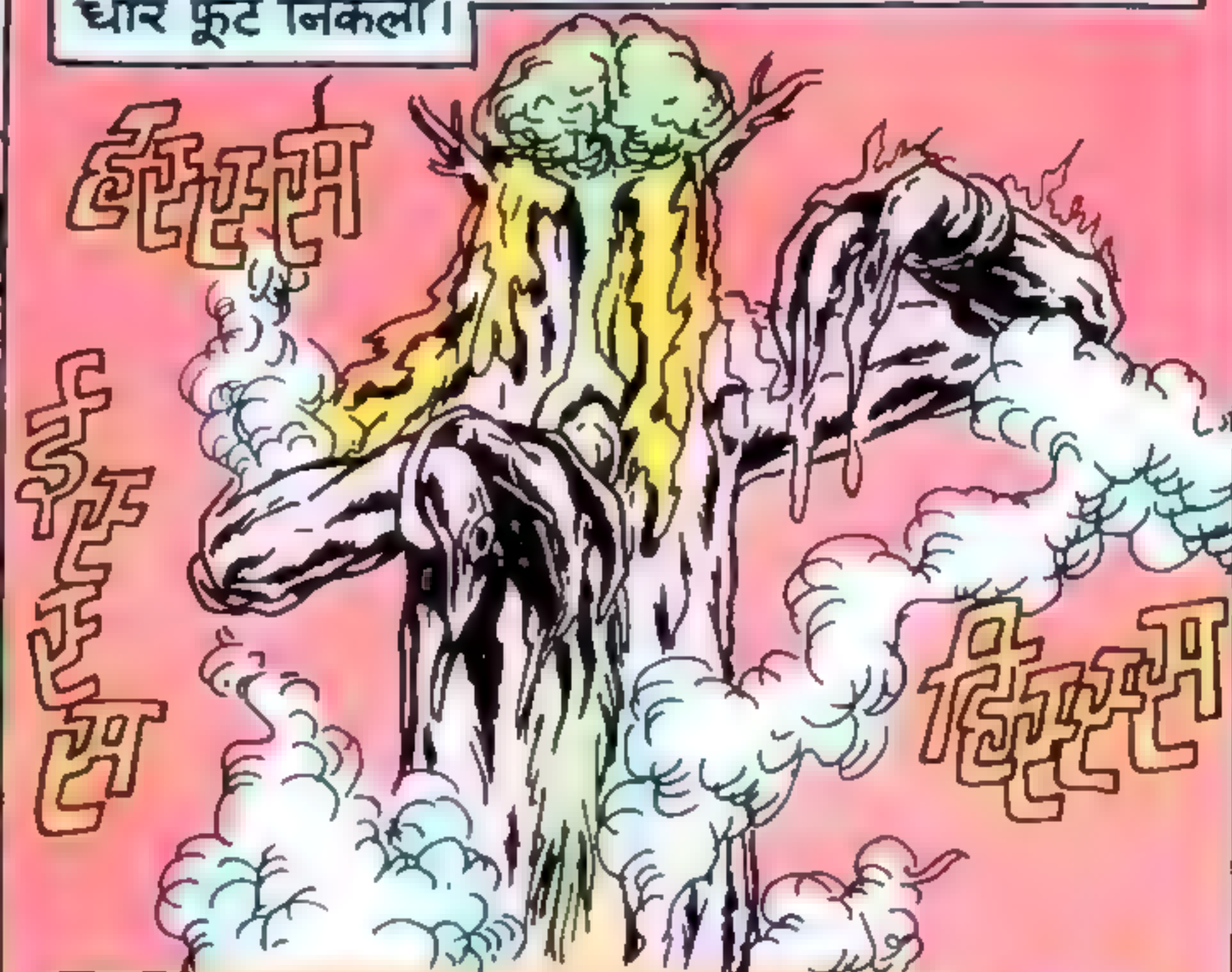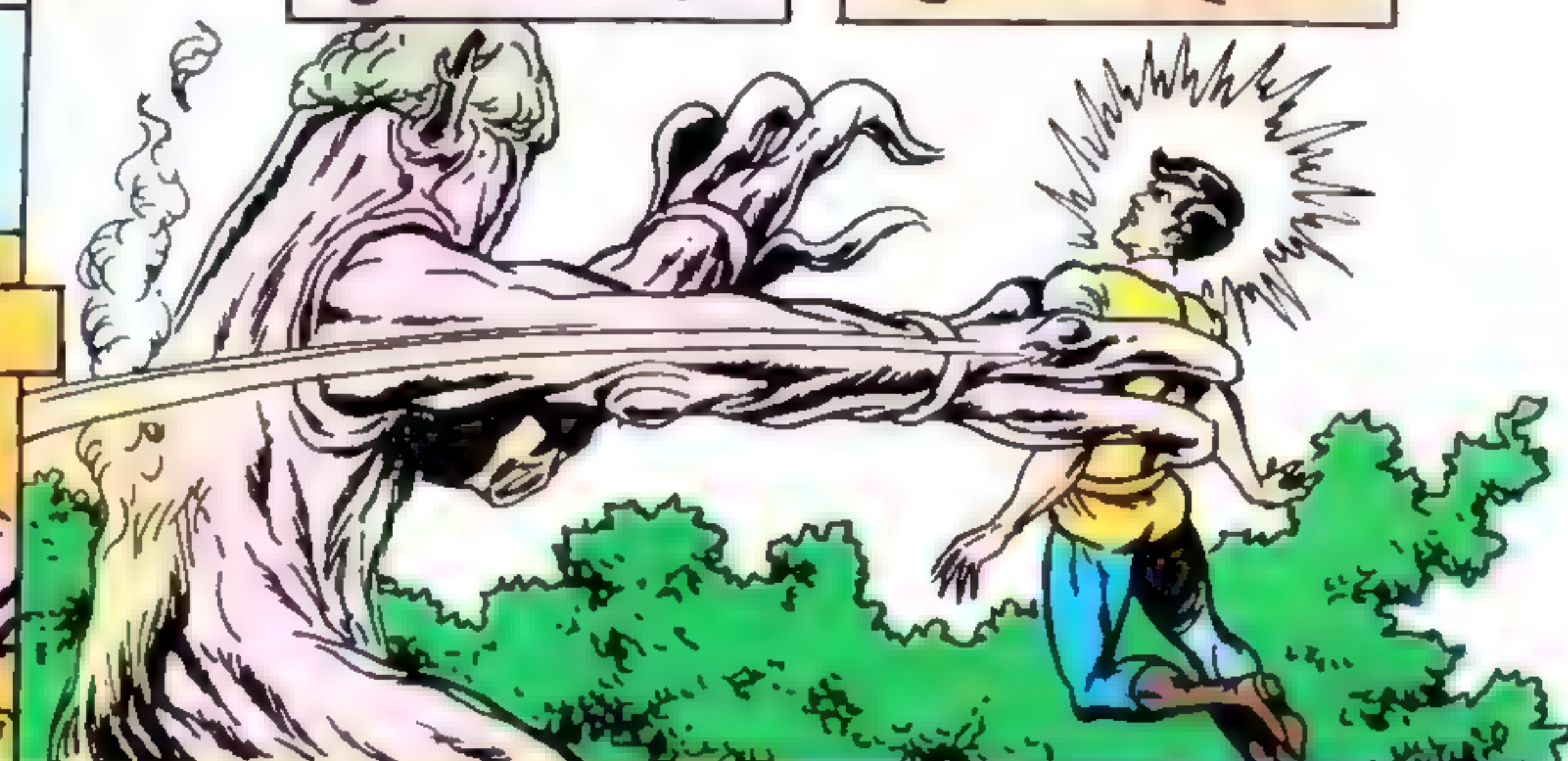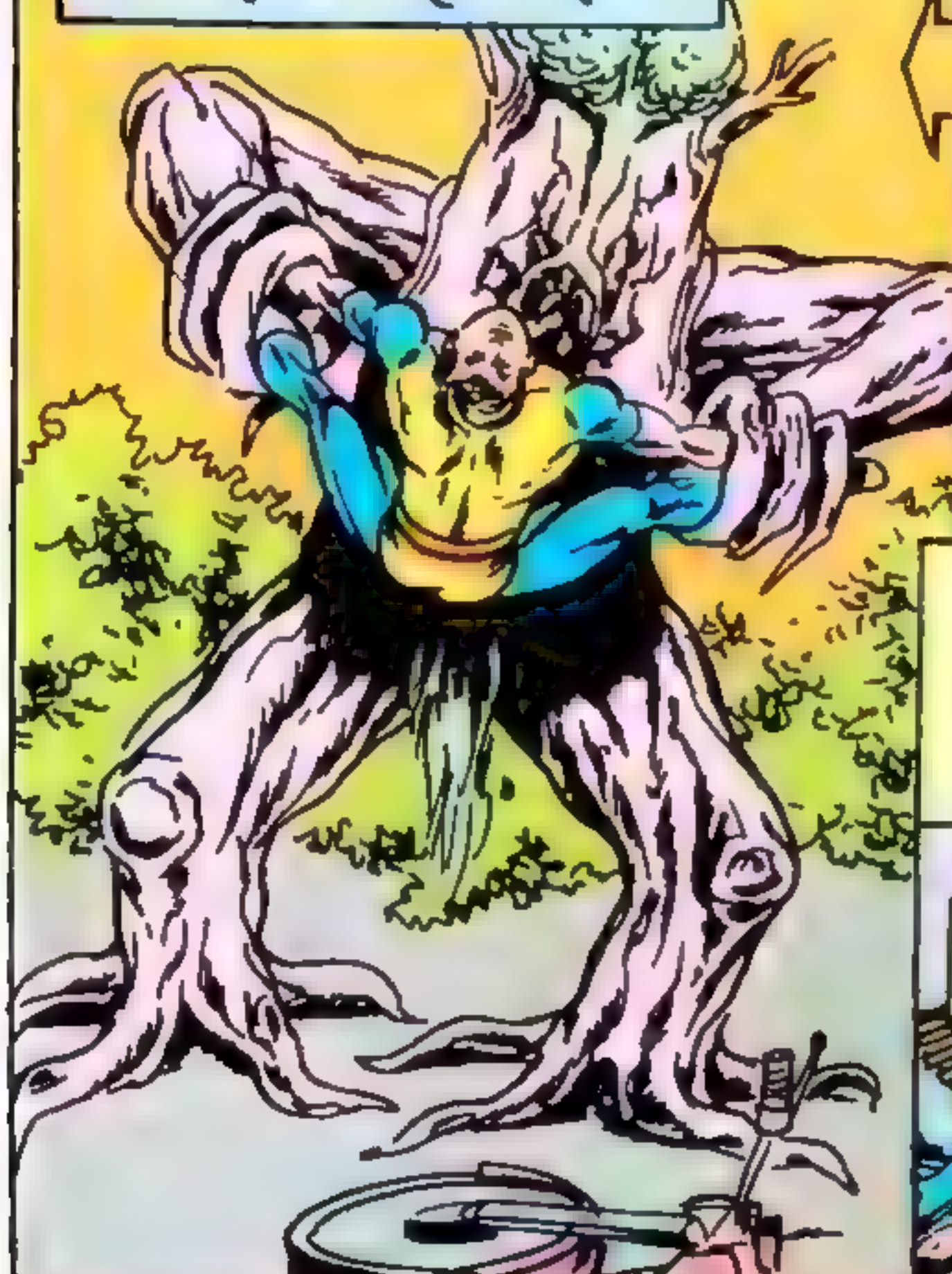
पर सबसे पहला काम ध्रुव को ठिकाने लगाना है।
वर्ना वह हमारे प्लान में रुकावट डालता ही रहेगा।
अब मुझे एक तीर से दो शिकार करने पड़ेंगे।
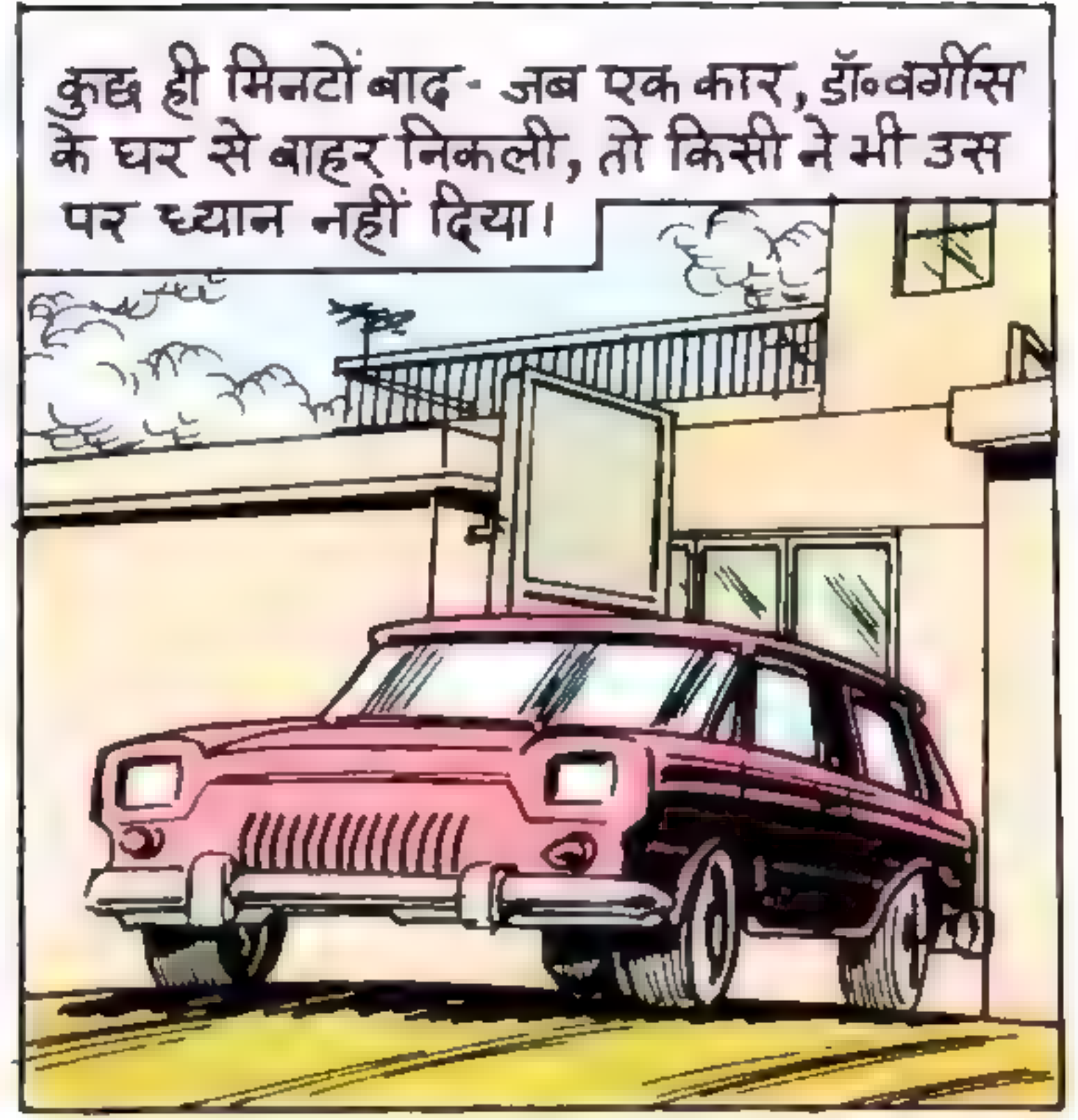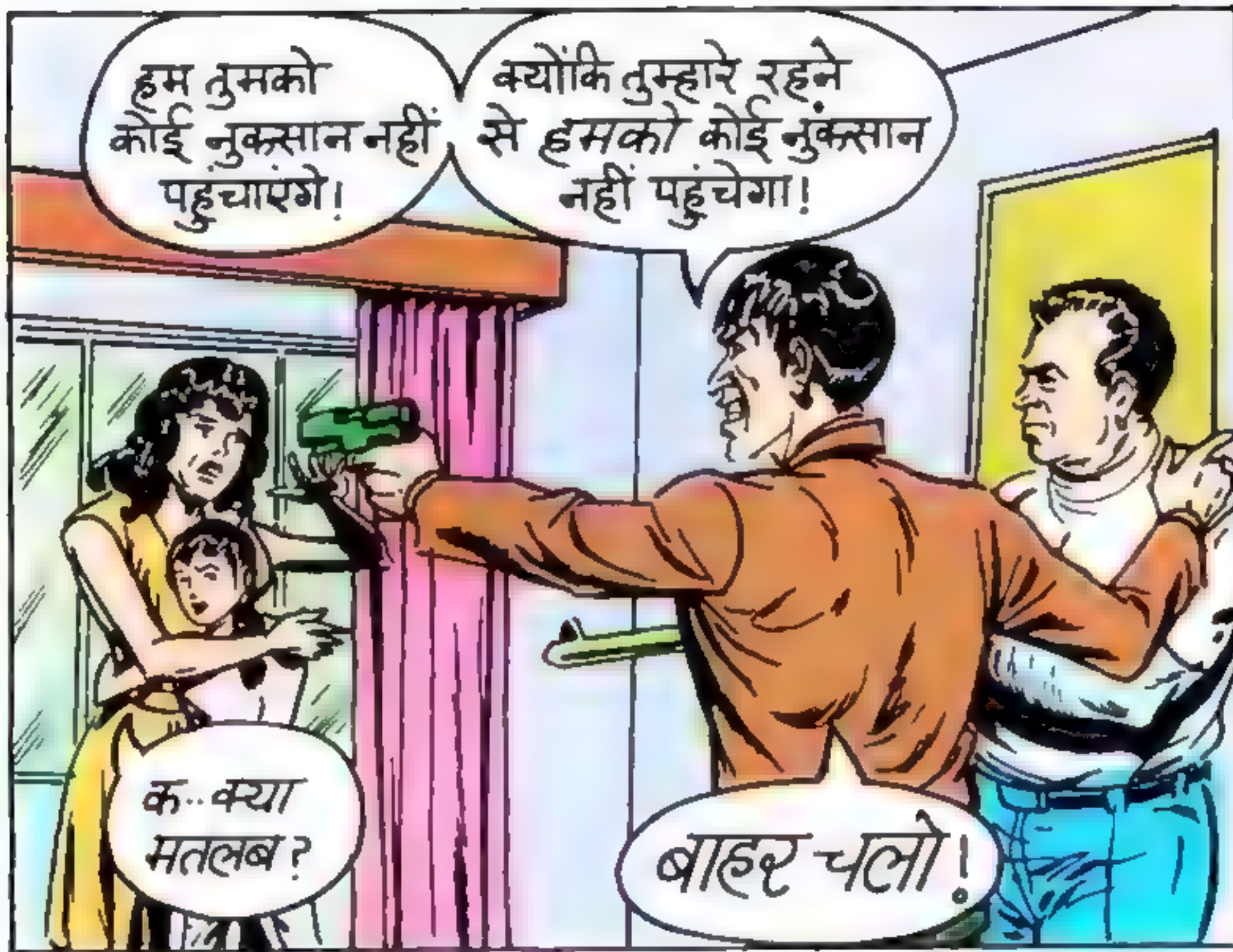
इतना तो स्पष्ट है कि इस पेड़ को, प्रकृति ने नहीं बनाया है।
इसको वैज्ञानिक तरीके से पैदा किया गया है! इसको कंट्रोल करने के लिए इसके अंदर यंत्र लगे हैं। और यह तार उन यंत्रों से ही जुड़ा हुआ है।
इस तार को तोड़ देने से वे यंत्र भी बेकार हो जाने चाहिए!
वैसे भी, कोशिश करने में कोई हर्ज तो है नहीं।
तार को तोड़ना इतना आसान नहीं था।
क्योंकि ध्रुव के हाथ और पैर वृक्षपशु के शिकंजों में जकड़े हुए थे।
पर ध्रुव का सिर अभी आजाद था!
लचीले बदन के एक ही मोड़ ने, ध्रुव के दांतों को तार तक पहुंचा दिया।
और सिर के एक झटके से तार खिंचकर बाहर आ गया।
तार खिंचते ही, 'कंप्यूटर रिसीवर', मृत हो गया। एक चिरचिराहट के साथ वृक्ष-पशु के शिकंजे ढीले पड़ गए।
आदेश के अभाव में, वृक्षपशु के 'शरीर' की हर हरकत बंद हो गई।
और ध्रुव आजाद हो गया।
ओह! मौत को इतने करीब से मैंने पहले कभी नहीं देखा था। यह भी डॉ॰ वायरस का ही नमूना लगता है!
इन खूंखार प्राणियों को बनाने के पीछे, डॉ॰ वायरस का जरूर कुछ खूनी मकसद है! और वह मकसद पूरा हो पाने से पहले ही, मुझको डॉ॰ वायरस तक पहुंचना है!

लेकिन ध्रुव से पहले कोई और, डॉ॰ वायरस तक पहुंच चुका था।
आहा! आओ! आओ!! मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था! मैं जानता था कि तुम मेरे पास जरूर आओगे!

देखो! यह फोटो मैंने कब से तुम्हारे लिए संभाल कर रखी हुई है!
अब ध्यान से मेरी बात सुनो!
आज 'डायमंड एक्सपोर्ट एसोसिएशन', तीस करोड़ के हीरों का एक शिपमेंट, लंदन भेज रहा है।

हीरों से लदा कंटेनर, राजनगर बंदरगाह पर खड़ा है।
पर वे हीरे, लंदन नहीं, डॉ॰ वायरस के पास पहुंचने चाहिए।
और यह काम ...तुम करोगे!

ध्रुव के लिए, डॉ॰ वायरस तक पहुंचने के रास्ते, खुलने से पहले ही बंद हो जा रहे थे।
तो यह यंत्र, उस चलते-फिरते पेड़ के अंदर लगा था, ध्रुव?
यह दरअसल एक छोटा सा कंप्यूटर-चिप्स है! इसमें दिए गए आदेश रिकॉर्ड हो जाते हैं।
और अब वे रिकॉर्ड नष्ट हो गए हैं।

इससे अब तुमको कोई मदद नहीं मिल सकती।
तो अब मैं क्या करूं? क्या डॉ॰ वायरस तक पहुंचने का अब कोई...
रिसर्च सेंट
पिंप पिंप पिंप
ओह! मेरे 'पोर्टेबल फोन' पर किसी की कॉल आ रही है।

हैलो! ध्रुव हियर!
लड़के, ध्यान से सुनो! मैं सिर्फ एक बार बोलूंगा!
अब से ठीक आधे घंटे बाद, राजनगर डॉकयार्ड में डकैती डाली जाएगी।

डकैती, डॉकयॉर्ड की लेन नं० 5 में, कंटेनर नं० 13 पर डाली जाएगी।
अरे! कोई आ रहा है!
पर तुम कौन हो? सुनो, पुलिस को खबर क्यों नहीं...?
ओह! फोन कट गया!
क्या मुझे पुलिस को खबर करनी चाहिए?
नहीं! हो सकता है कि ये खबर झूठी हो! फोन करने वाले ने अपना नाम तक नहीं बताया!
पर कुछ भी हो। मुझे तो वहां जाना ही पड़ेगा!
अगर वहां पर सचमुच कोई गड़बड़ हुई, तो पुलिस को मैं वहां से सूचित कर दूंगा!
पर खबर एकदम सही थी।
एक बार फिर नंबर चेक कर लो! मैंने विस्फोटक, फिट कर दिए हैं!
13
26
LANE NO
5
यही कंटेनर है, यार! नंबर 13!
'डायमंड एक्सपोर्ट एसोसिएशन' का माल इसी के अंदर रखा है! तू जल्दी से पीछे भाग कर आजा!
कुछ ही पलों बाद - रिमोट-कंट्रोल से एक धमाका हुआ।
धड़ाम
और कंटेनर के, लोहे के दरवाजे के टुकड़े, हवा में बिखर गए।
आओ! हीरों वाला डिब्बा उठाओ!
और यहां से रफूचक्कर होलो!

कुछ ही सेकंडों बाद – दो लुटेरे, हीरों भरा बक्सा लेकर तेजी से कंटेनर के बाहर निकले।-
और कार की तरफ लपके।
पर वे वहां तक पहुंच नहीं पाए।
त
धड़ाक
ड़ाक
अगले ही पल- कार के अंदर से, गोलियों की एक बौछार, ध्रुव की तरफ लपकी।
तड़ तड़ तड़
लेकिन झूलते ध्रुव तक कोई भी गोली नहीं पहुंच पाई।
बाकी दोनों बदमाश, हीरों का डिब्बा लेकर भागे।
उनकी ध्रुव से लड़ने की कोई इच्छा नहीं थी।
और ध्रुव ने, बंदूकधारी को बेहोशी की दुनिया में पहुंचा दिया।
छनाक
ताड़
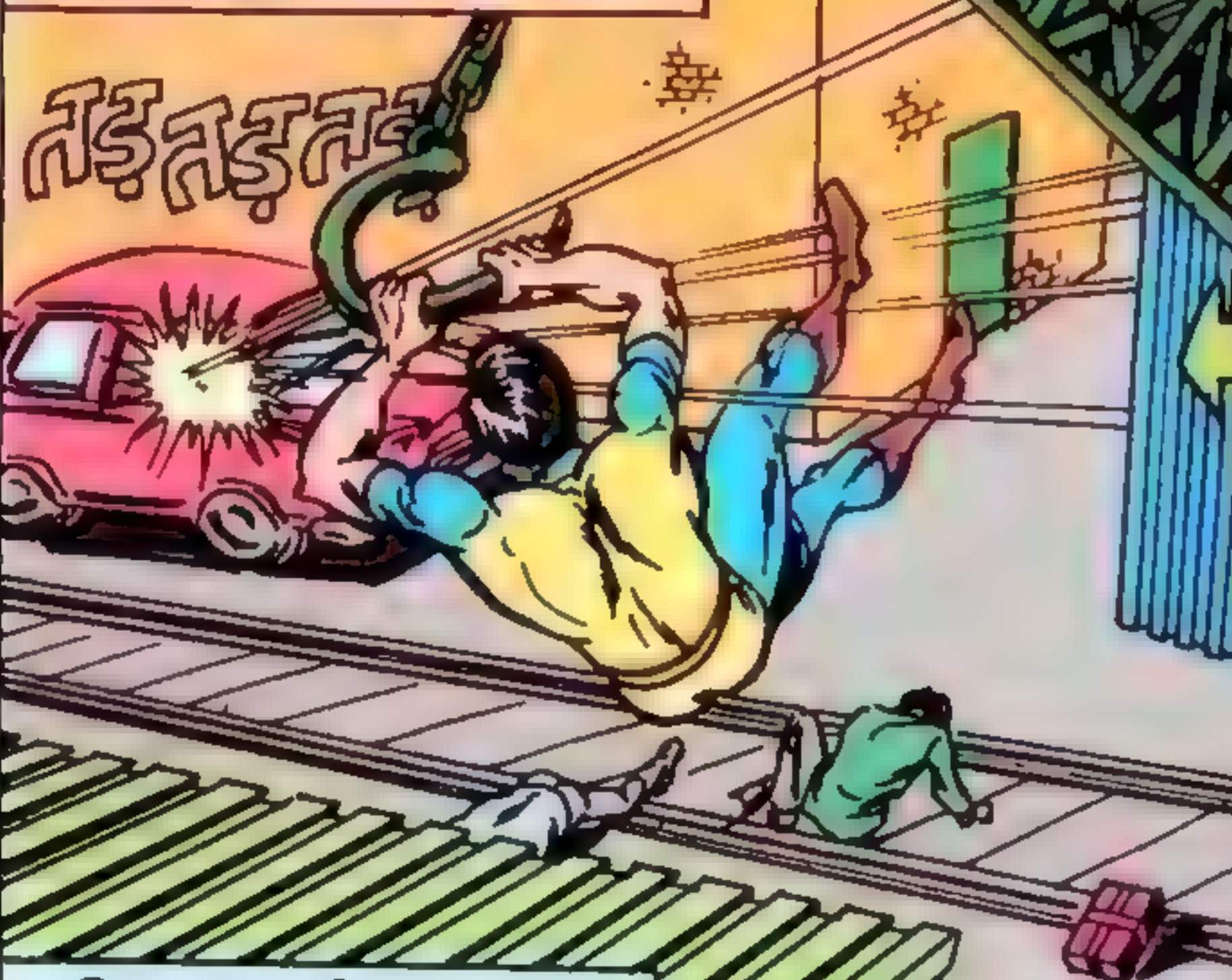
लेकिन ध्रुव का भी उनको भागने देने का कोई इरादा नहीं था।
धड़ाक
अब की बार दोनों बदमाश, दुबारा नहीं उठ सके।
पूरी लड़ाई एक मिनट भी नहीं चली।
कोई भी बदमाश, यह सोच भी नहीं सकता था, कि ये दो कौड़ी के गुंडे, ध्रुव के सामने दो मिनट भी ठहर पाएंगे।...
...सिवाय डॉ॰ वायरस के।
तुम्हारा फोन सुनकर, ध्रुव डॉकयार्ड पर जरूर पहुंचेगा। और वहां पर वह अपनी मौत से मिलेगा।
तीस करोड़ के हीरे, और ध्रुव की मौत की खबर, मेरे पास एक साथ ही पहुंचेंगी।
पर लड़ाई खत्म हो चुकी थी और ध्रुव जीत चुका था।
या... या फिर एक लड़ाई अभी बाकी थी?
हीरों का डिब्बा, अब किसी के अमानवीय पैर के नीचे दबा था।
ध्रुव ने नजरें उठाईं।-
और उसने बर्फ मानव की दूसरी झलक देखी!
CONTAINER N
31
64
ओह! अब मुझे यकीन हो गया है, कि इस डकैती के पीछे भी डॉ॰ वायरस का ही हाथ है!
क्योंकि तुम्हारे जैसे नमूने को, डॉ॰ वायरस के अलावा और कोई नहीं बना सकता! पर तुमने कोढ़क पर हमला क्यों किया था?
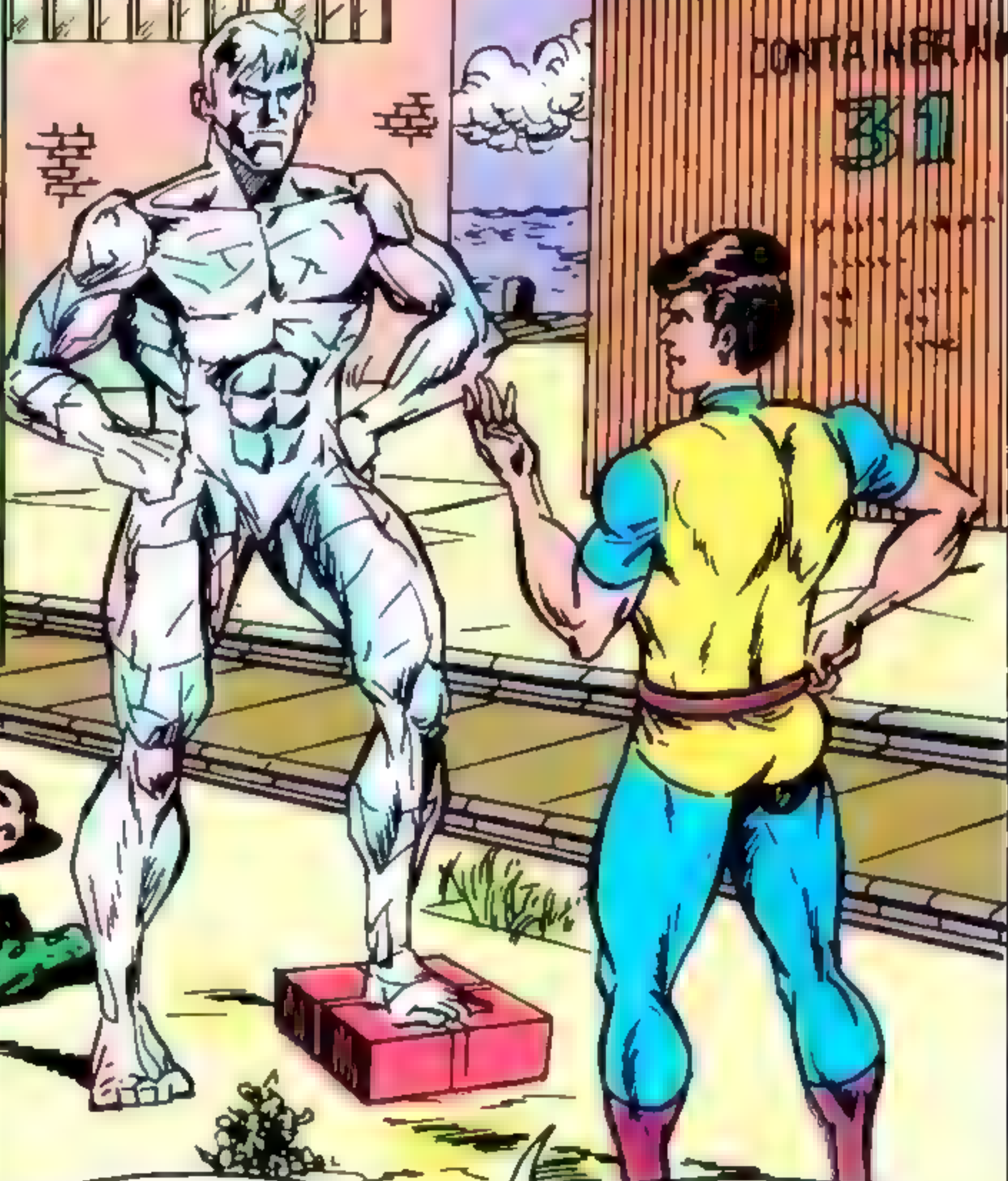
जवाब में एक ठंडी और सरसराती आवाज गूंजी।
मैं तुमको मारना नहीं चाहता!
मेरे रास्ते से हट जाओ!
तुम जा सकते हो, बर्फ मानव!
लेकिन बगैर इस बक्से के!
अगले ही पल- यह स्पष्ट हो गया कि बर्फ-मानव का इरादा पक्का है।
लेकिन ध्रुव आने वाले खतरे को भांप चुका था।
इसीलिए पहला वार उसके शरीर को नहीं छू सका।
और बर्फ मानव के शरीर पर एक भीषण वार आ लगा।
धड़ाक
यानि मुझे इस बात का खास ख्याल रखना पड़ेगा, कि मैं इसकी पकड़ में न आ पाऊं!...
परंतु-
ओह! इससे टकराते ही, पलभर में मेरे जूते इतने ठंडे हो गए हैं, जैसे कई घंटे बर्फ में दबे रहे हों!

...और दूर से ही...

...इसपर काबू पा सकूं!
धड़ाक
बर्फ-मानव लड़खड़ा कर गिरा।...

...और गिरे-गिरे ही उसका हाथ उठा। उसकी उंगली सीधी हुई-
और उसमें से धुंध की एक लहर निकलकर...
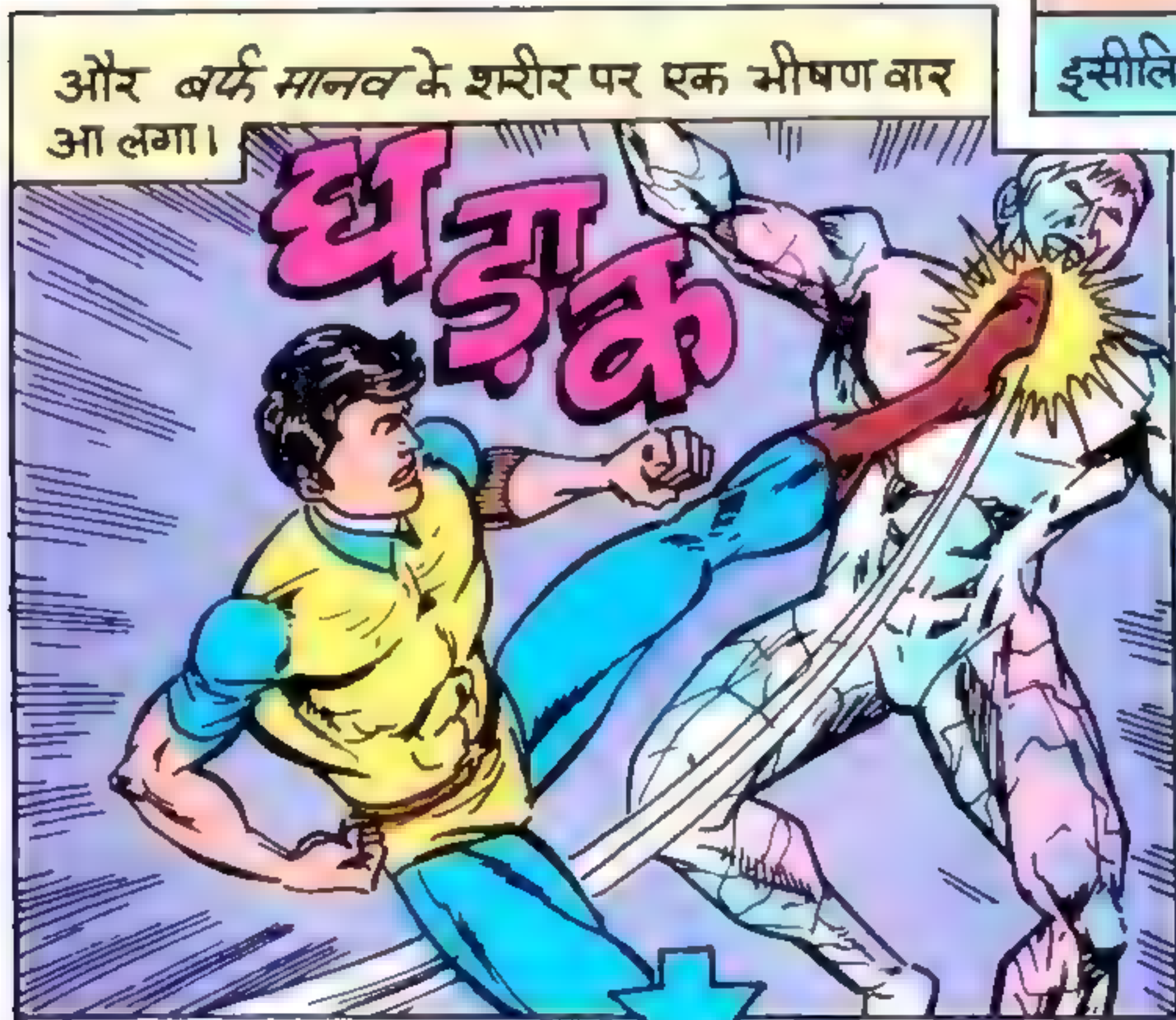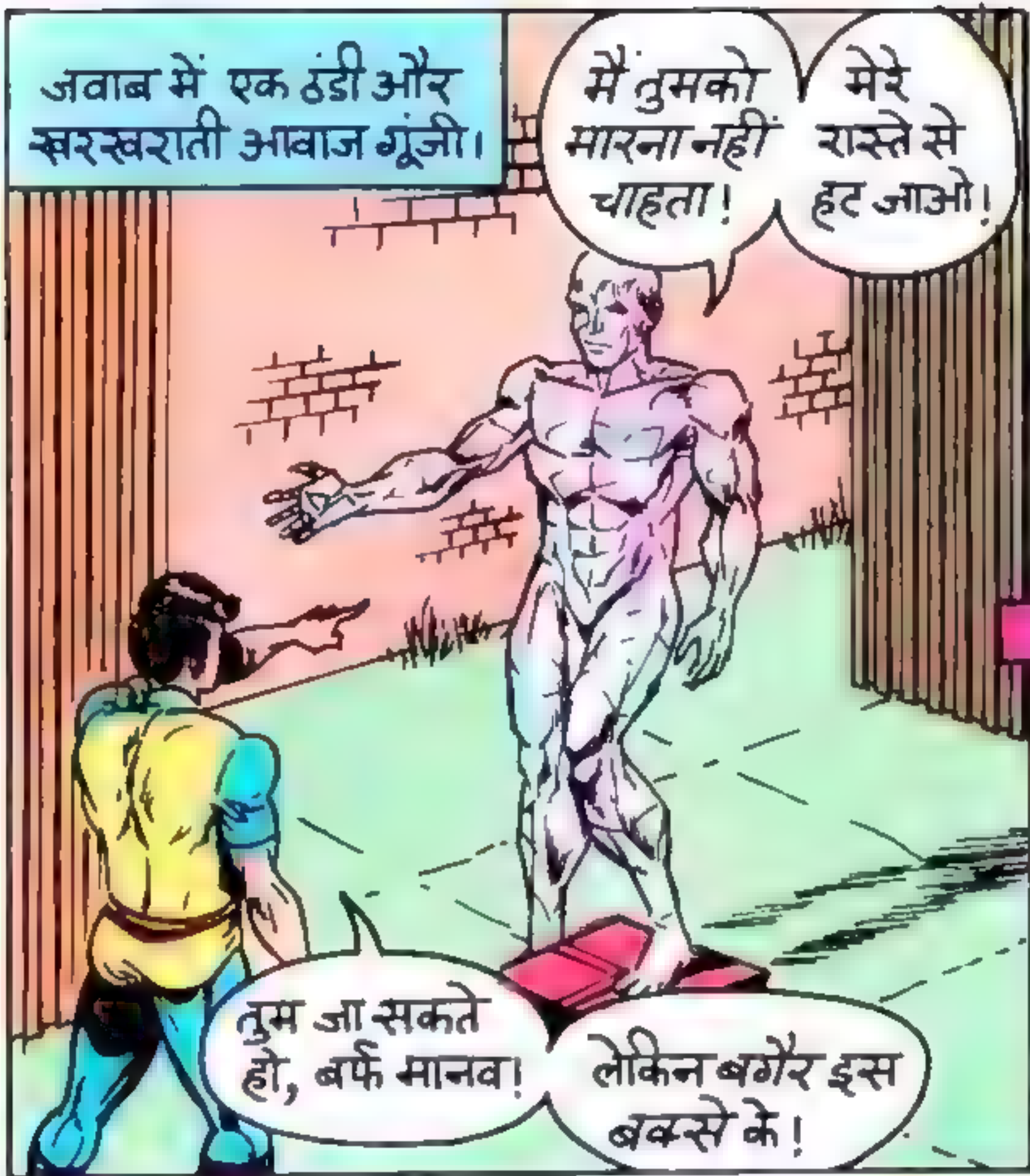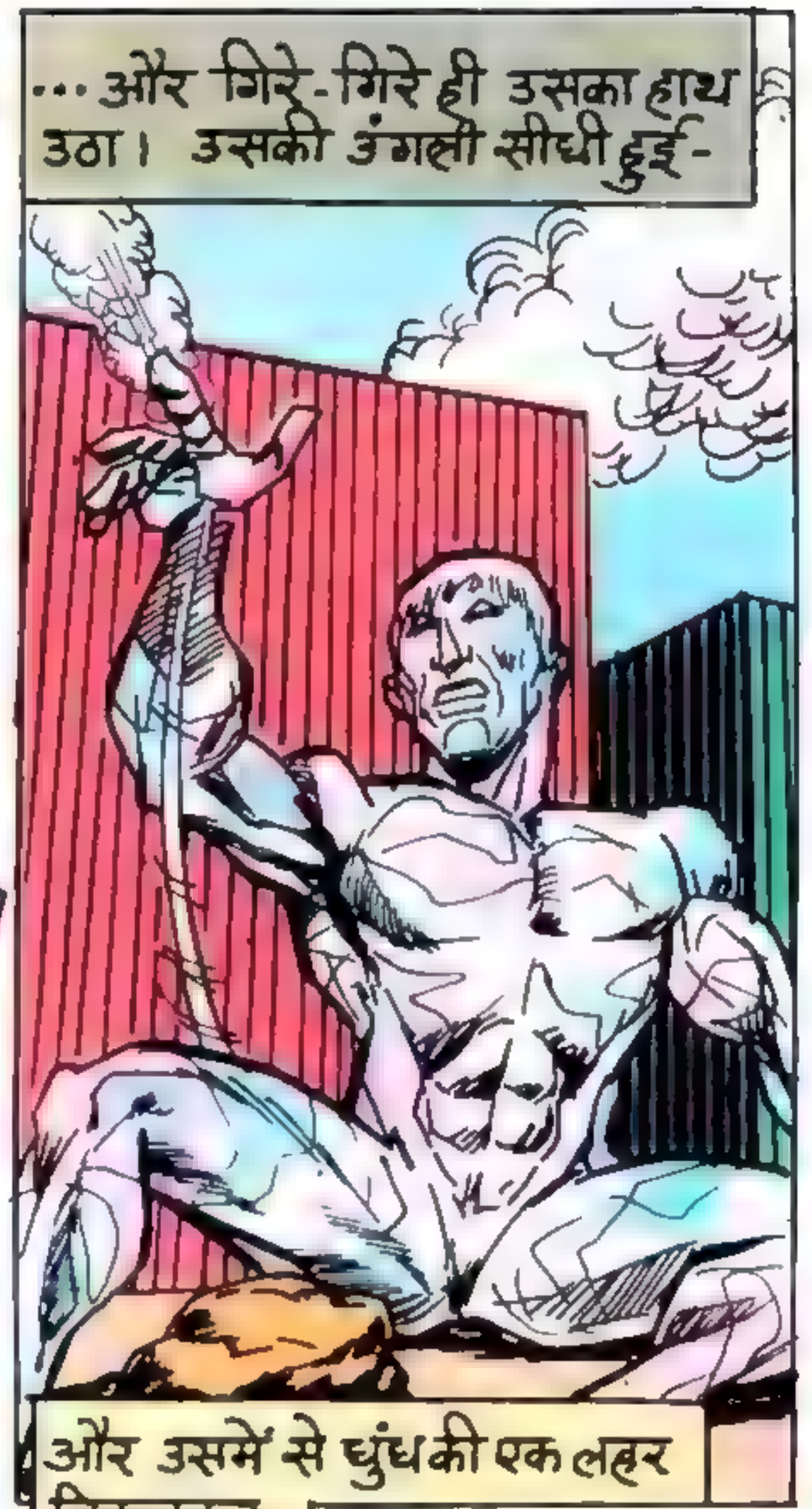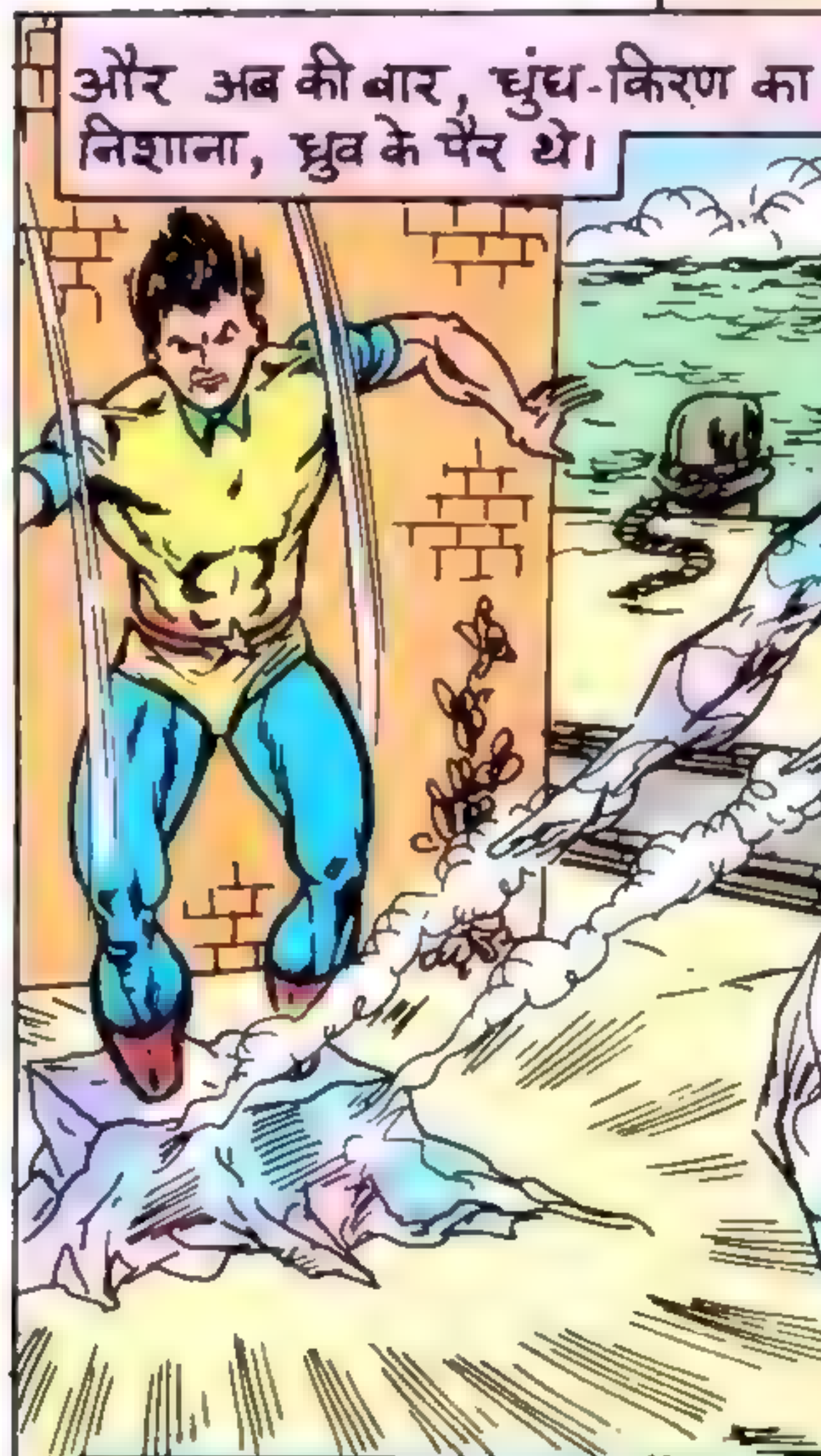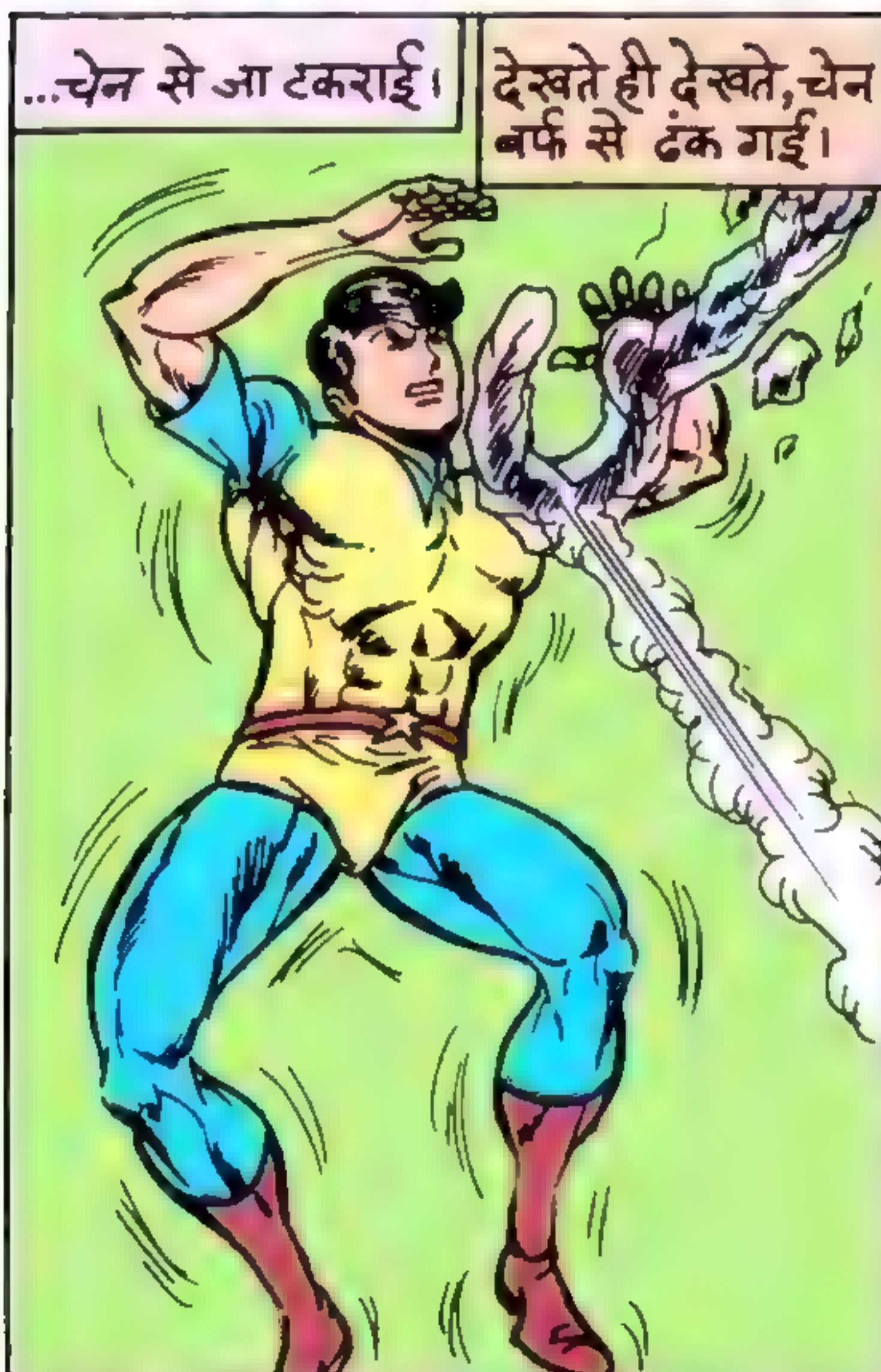
...चेन से जा टकराई।
देखते ही देखते, चेन बर्फ से ढंक गई।
और ध्रुव के हाथ, ठंडे होकर, अपने आप चेन से छूट गए।

और अब की बार, धुंध-किरण का निशाना, ध्रुव के पैर थे।
पलभर में ध्रुव के दोनों पैर, बर्फीले शिकंजों में जकड़ गए।
अब ध्रुव हिल भी नहीं सकता था।
और इस शिकंजे को तोड़ पाना, उस की ताकत से बाहर की बात थी।

पर बर्फ मानव खुद ध्रुव की तरफ नहीं बढ़ा।
उसने हवा में फूंक मारी। -
फ़ूऊऊऊ
और गीली समुद्री हवा में मौजूद पानी के कण, जम कर आपस में जुड़ने लगे।
और बात की बात में, पानी के कणों ने जुड़कर, एक विशालकाय बर्फ के गोले का रूप ले लिया।
और एक जोरदार किक से, बर्फीला गोला, तेज रफ्तार से ध्रुव की तरफ लुढ़कने लगा।
तड़ाक
इस मनों भारी गोले के नीचे दबने का एक ही मतलब था- एक कुचली और दर्दनाक मौत!
और ध्रुव इस मौत को अपनी तरफ बढ़ता देखने के अलावा, और कुछ नहीं कर सकता था।
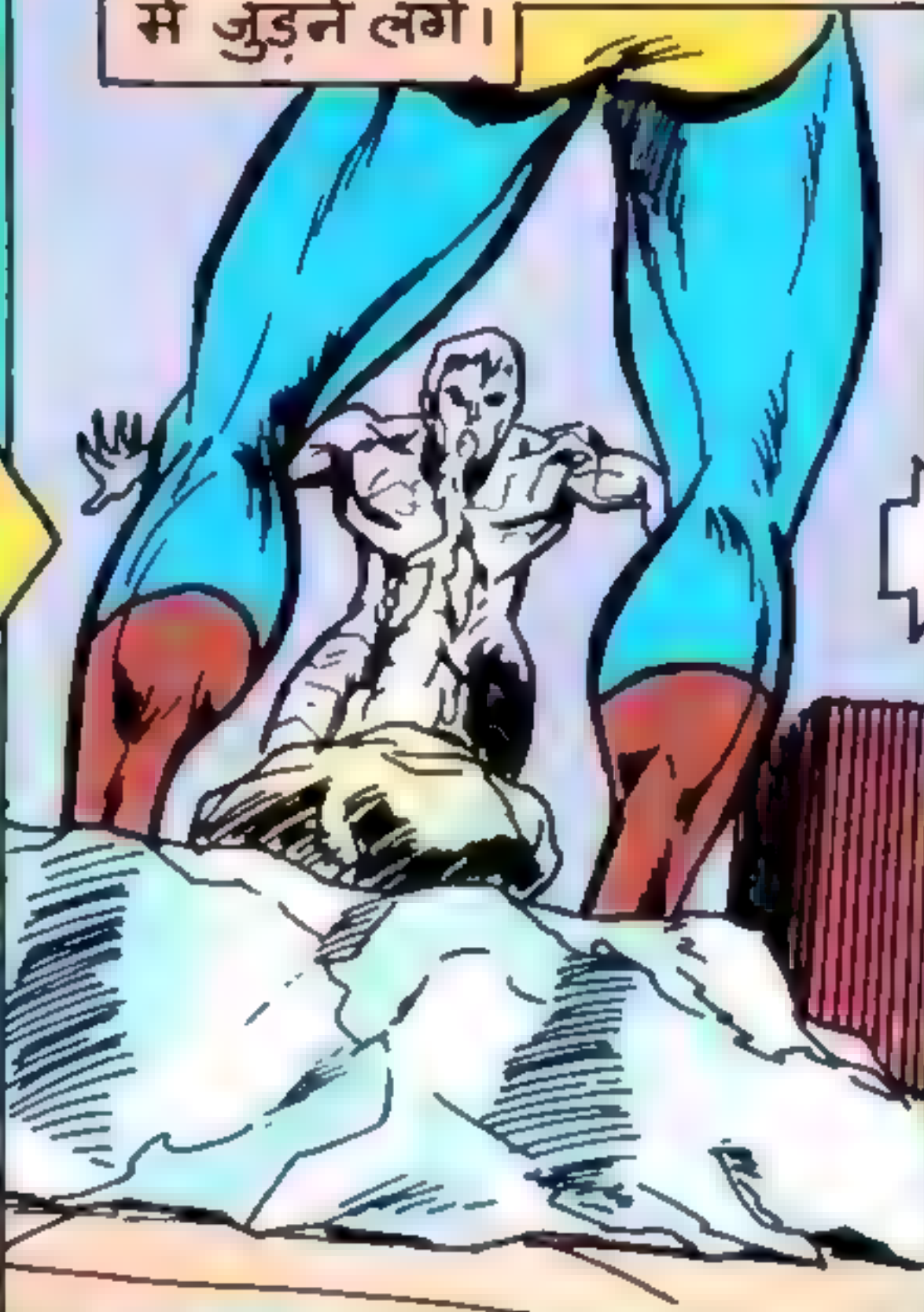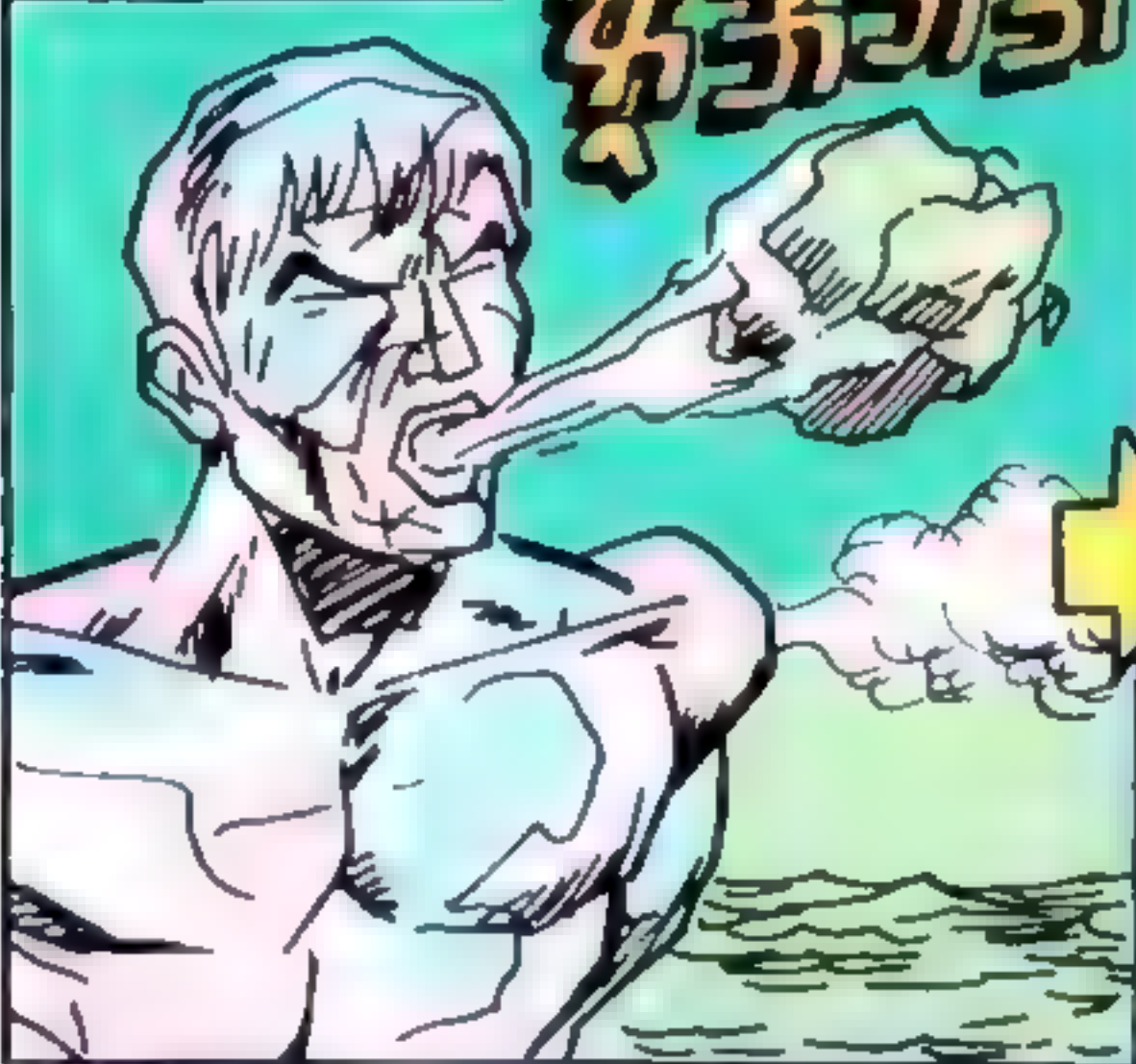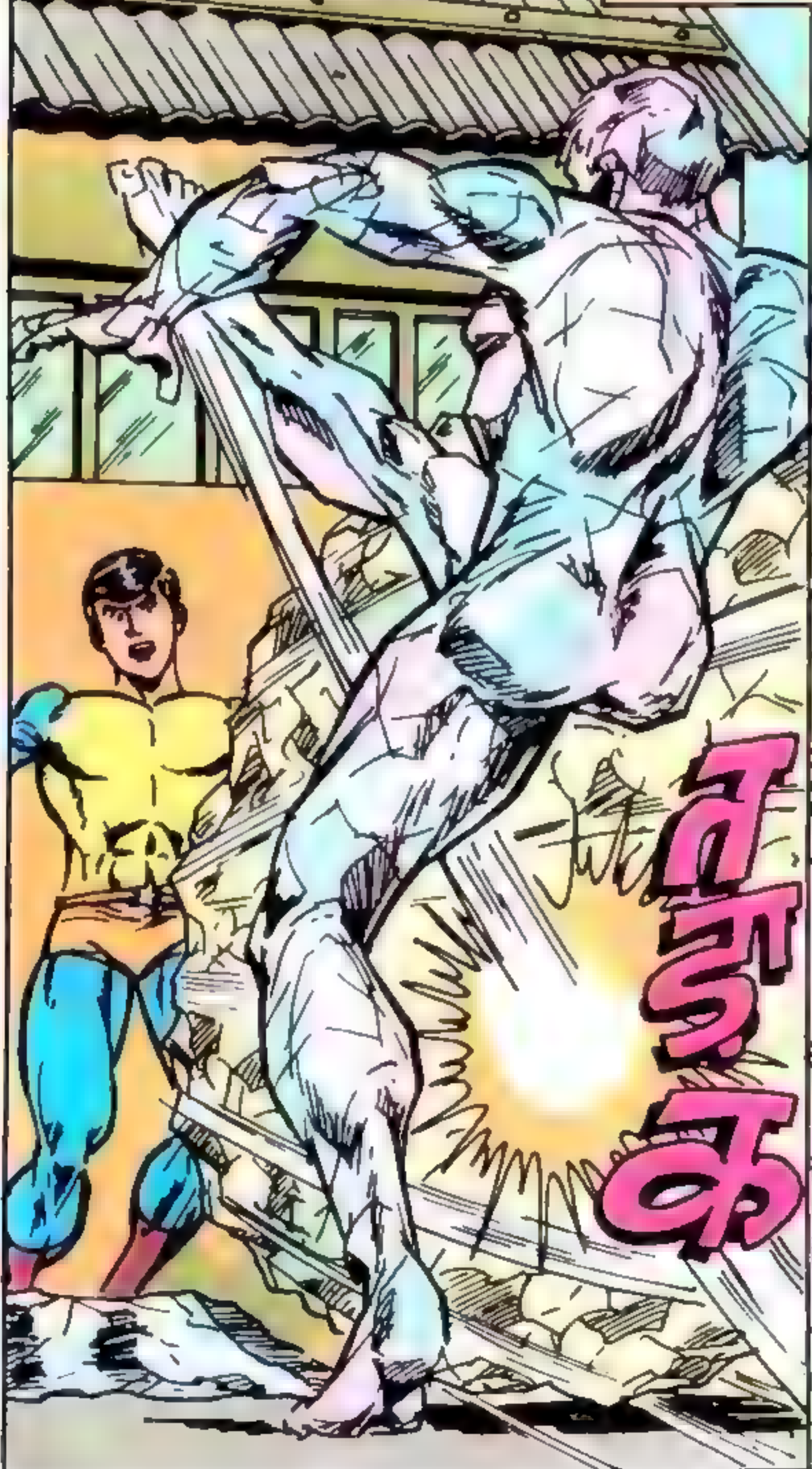
पर तभी- ध्रुव का शरीर अपने आप जमीन से ऊपर उठ गया।
और बर्फ का गोला, दीवार से टकराकर टुकड़े-टुकड़े हो गया।
कड़ाााक
यह काम तो सिर्फ एक आदमी ही कर सकता है!
और वह आदमी है...
...वनपुत्र!
हां, ध्रुव! मैं काफी देर से इन दुष्टों के पीछे लगा हुआ था!
तुमको यहां पर देखकर मैं अब तक चुप था।
पर अब मैं इसको सबक सिखा कर ही छोड़ूंगा!
वनपुत्र के इशारों को सिर्फ धरती के पेड़-पौधे ही नहीं-
बल्कि समुद्री पौधे भी समझते थे।
वनपुत्र के एक आदेश पर, सिवारों के एक झुंड ने, अपना आकार बढ़ाकर...
...बर्फ-मानव को जकड़ लिया।
और धीरे-धीरे उनकी गिरफ्त कसने लगी।
चटक
कड़क
चटाक
पड़
पानी की ठंडक में रहने वाले, समुद्री सिवारों पर, बर्फ-मानव की ठंडक का कुछ खास असर नहीं हो रहा था।
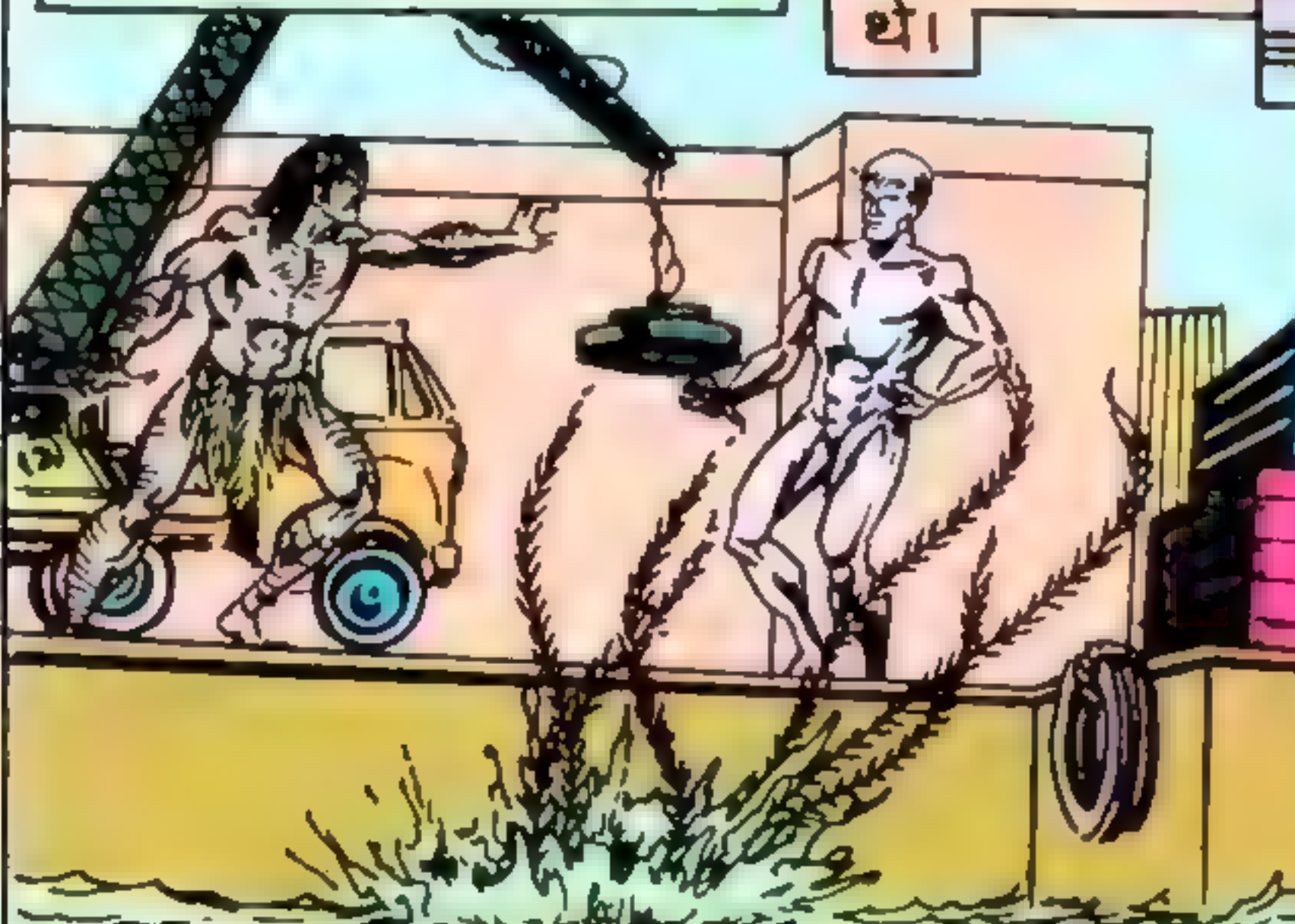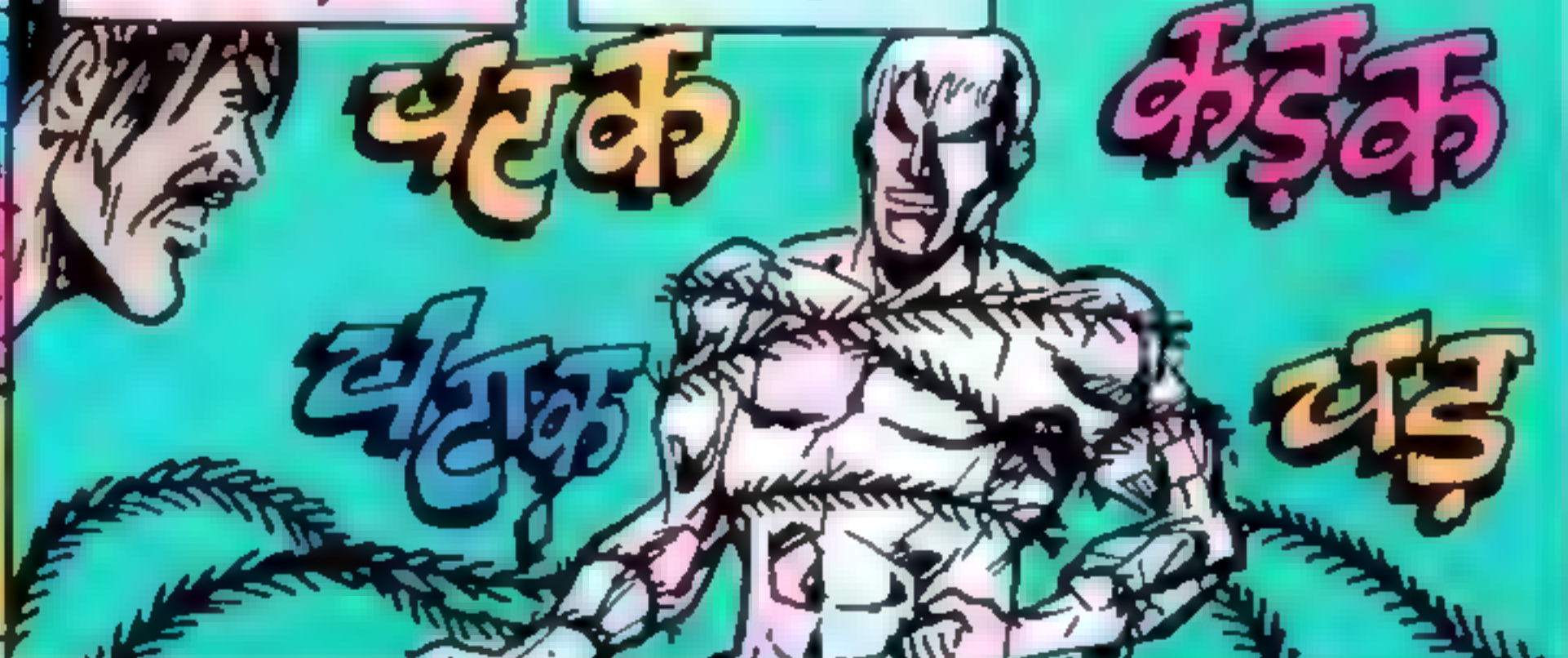
पर बर्फ-मानव के पास अद्‌भुत शक्तियां थी।
उसने अपने शरीर के तापमान को, और नीचे गिरा दिया।
सारी सिवारें मृत होकर उसके बदन से नीचे आ गिरीं।
अच्छा! यानि इस प्राणी की शक्ति इसकी ठंडक है!
इसलिए इसपर ऐसी चीज से वार करना होगा, जिसपर ठंड का असर न होता हो! ...
और उसके बर्फीले शरीर पर लिपटी सिवारों का रंग हरे से बदलकर भूरा हो गया।
और बर्फीले शरीर को कड़ी और कठोर सतहों पर पटकना शुरू कर दिया।
बर्फ मानव के बदन से बर्फ के टुकड़े उड़-उड़ कर हवा में छितरने लगे।
... जैसे लकड़ी!
वनपुत्र का इशारा हुआ, और कई जड़ें, मोटी कंक्रीट को तोड़ती हुई, सतह से बाहर आ गईं।
कड़ाक
चड़ड़ड़
धड़ाक
बर्फ-मानव को मोटी जड़ों ने अपने शिकंजे में ले लिया।-
अब यह दुष्ट मेरी पकड़ से बचकर नहीं जा पाएगा।

वनपुत्र, अपने दुश्मन को कमजोर समझने की भयंकर भूल कर रहा था।
बर्फ मानव ने अपने शरीर के तापमान को और भी कम कर लिया।
भड़ाक
और बर्फ से ढके शरीर पर, बर्फ की और भी पर्तें चढ़ने लगीं।
उसका शरीर मोटा होने लगा।
जड़ों के शिकंजे ढीले पड़ने लगे।
और आखिरकार - जड़ों का शिकंजा खुल ही गया।
और बर्फ मानव, आजाद हो गया।
जड़ें एक बार फिर उसकी तरफ लपकीं।
और उसी पल - आश्चर्यजनक शक्ति दिखाते हुए, उसने जड़ों को जड़ से उखाड़ दिया।
बर्फ मानव ने, वनपुत्र के दोनों हमलों को बेकार कर दिया था।
?
पड़ाक
और अब वह, वनपुत्र को कोई भी मौका देने के मूड में नहीं था।
फूSSSS
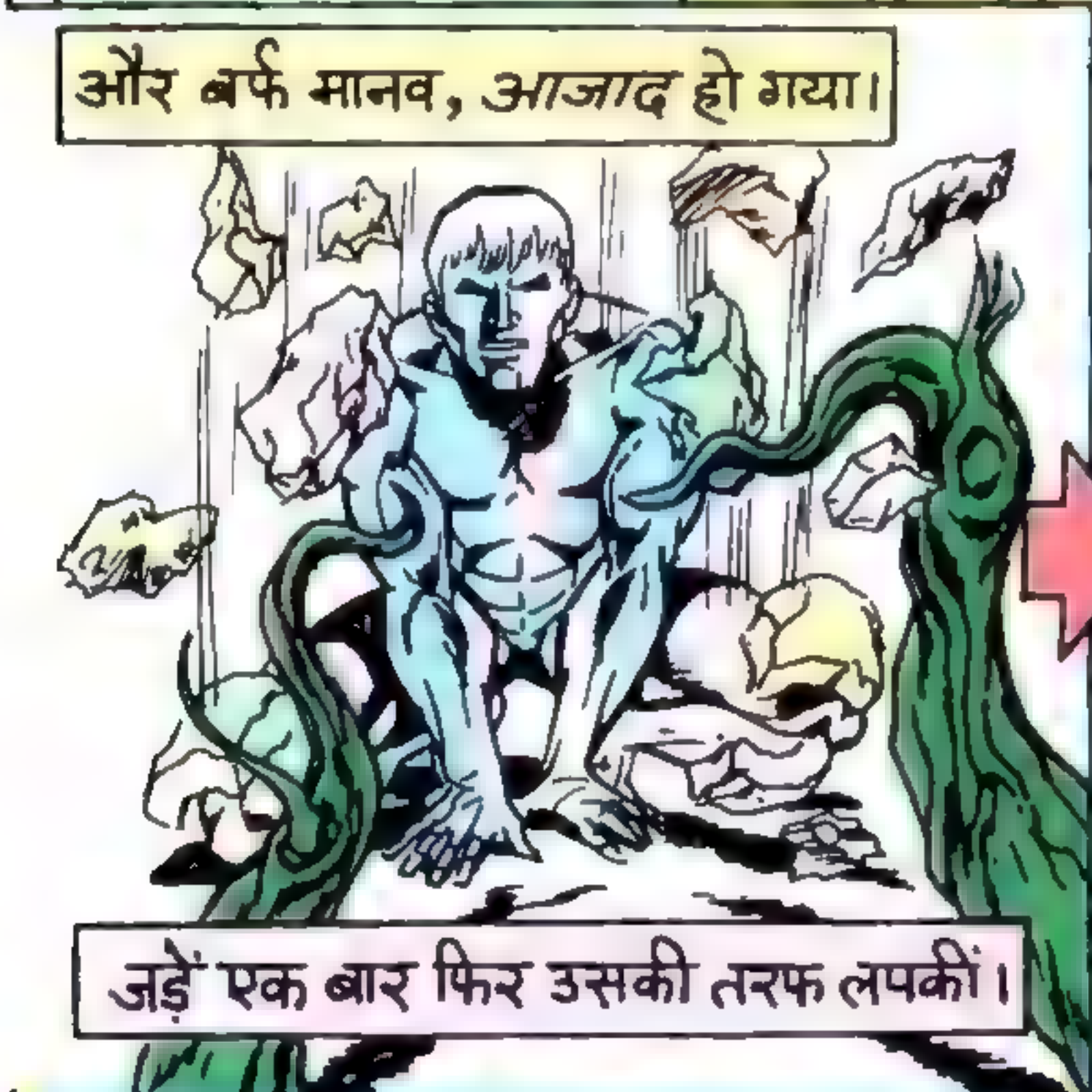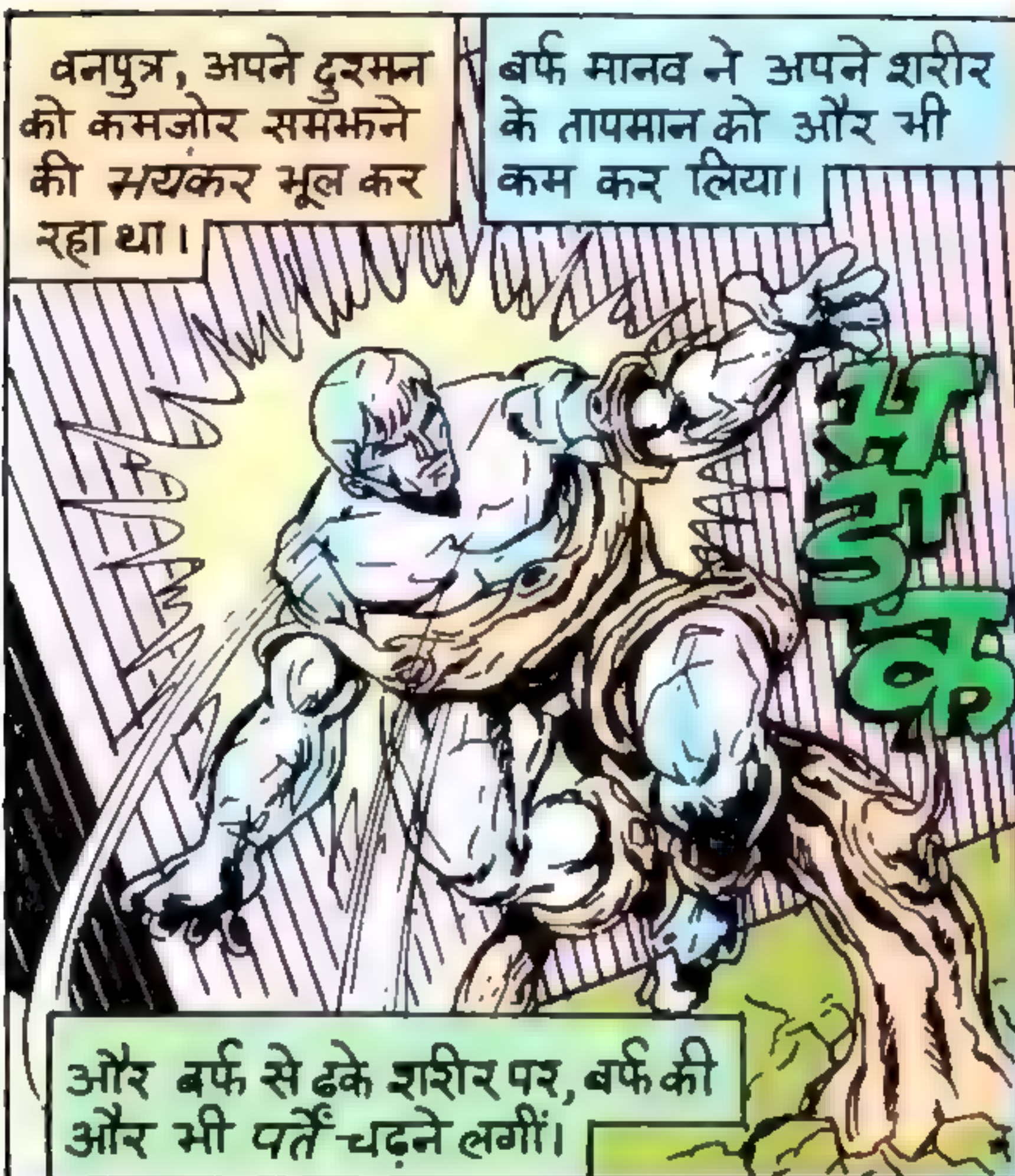
धुंध-लहर के टकराते ही, वनपुत्र का शरीर बर्फ के एक खोल में कैद हो गया।
और वनपुत्र, अपने सारे होशोहवास खो बैठा।
बर्फ-मानव अब हीरों वाले डिब्बे की तरफ बढ़ा।
पर इससे पहले कि उसका हाथ, बॉक्स तक पहुंच पाता।
बॉक्स हवा में उड़ गया।
तड़ाक
ध्रुव ने एक बार फिर लड़ाई की कमान अपने हाथ में ले ली थी।
इस बर्फीले प्राणी की शक्तियां तो कमाल की हैं!
पर यह जिस तरह का भी प्राणी हो; जिंदा रहने के लिए सांस तो लेता ही होगा!
फटाक
इसलिए मैं इसपर वही अस्त्र आजमाऊंगा, जो मैंने किरीगी पर आजमाया था!
नर्व गैस का कैप्सूल!
नर्व गैस ने बर्फ-मानव को घेरा तो जरूर-
-लेकिन बर्फीले शरीर तक पहुंचने से पहले ही, नर्व गैस जमकर तरल पदार्थ में बदल गई।
और 'नर्व गैस' की बूंदें, बर्फ में घुल-मिल गई।
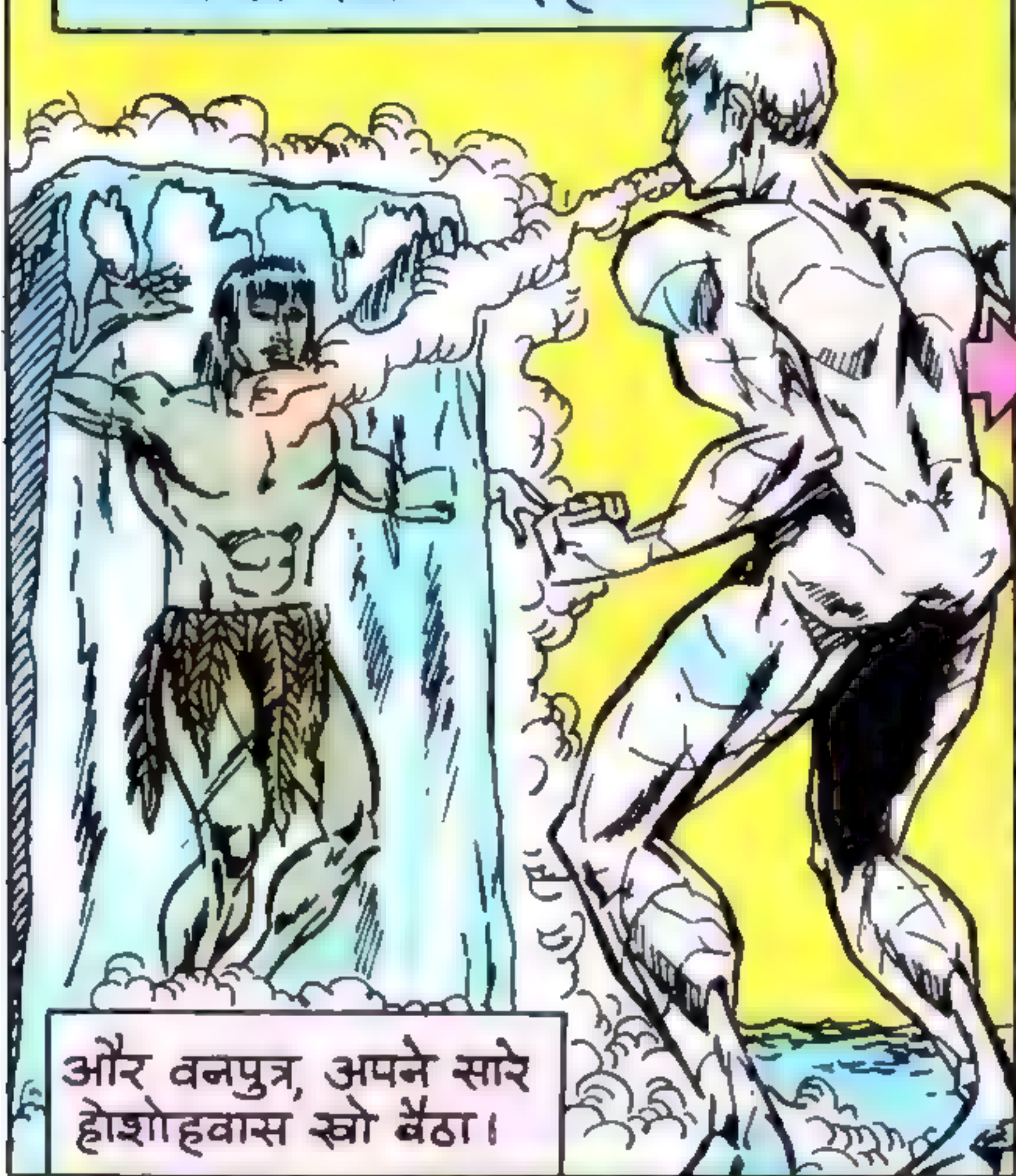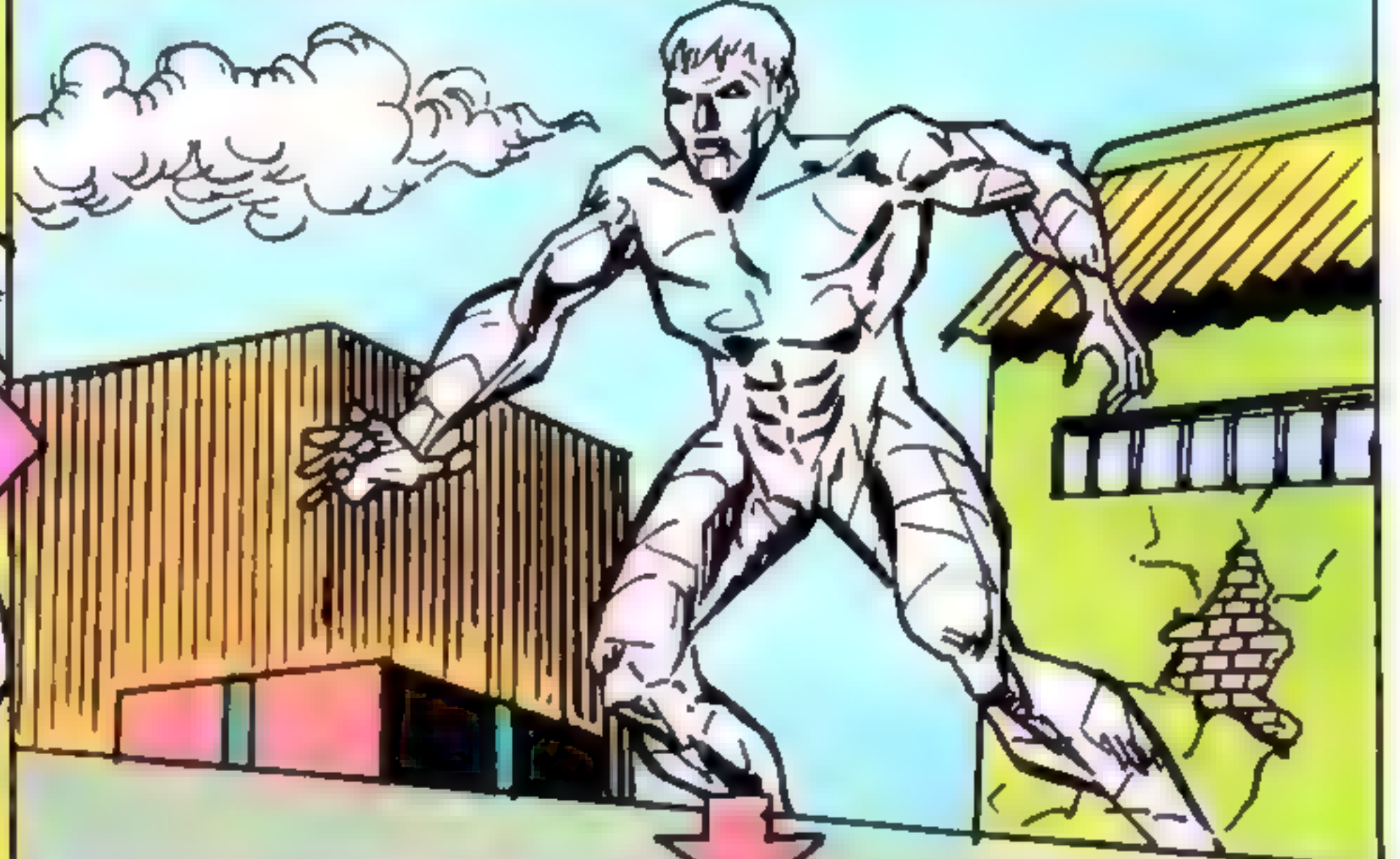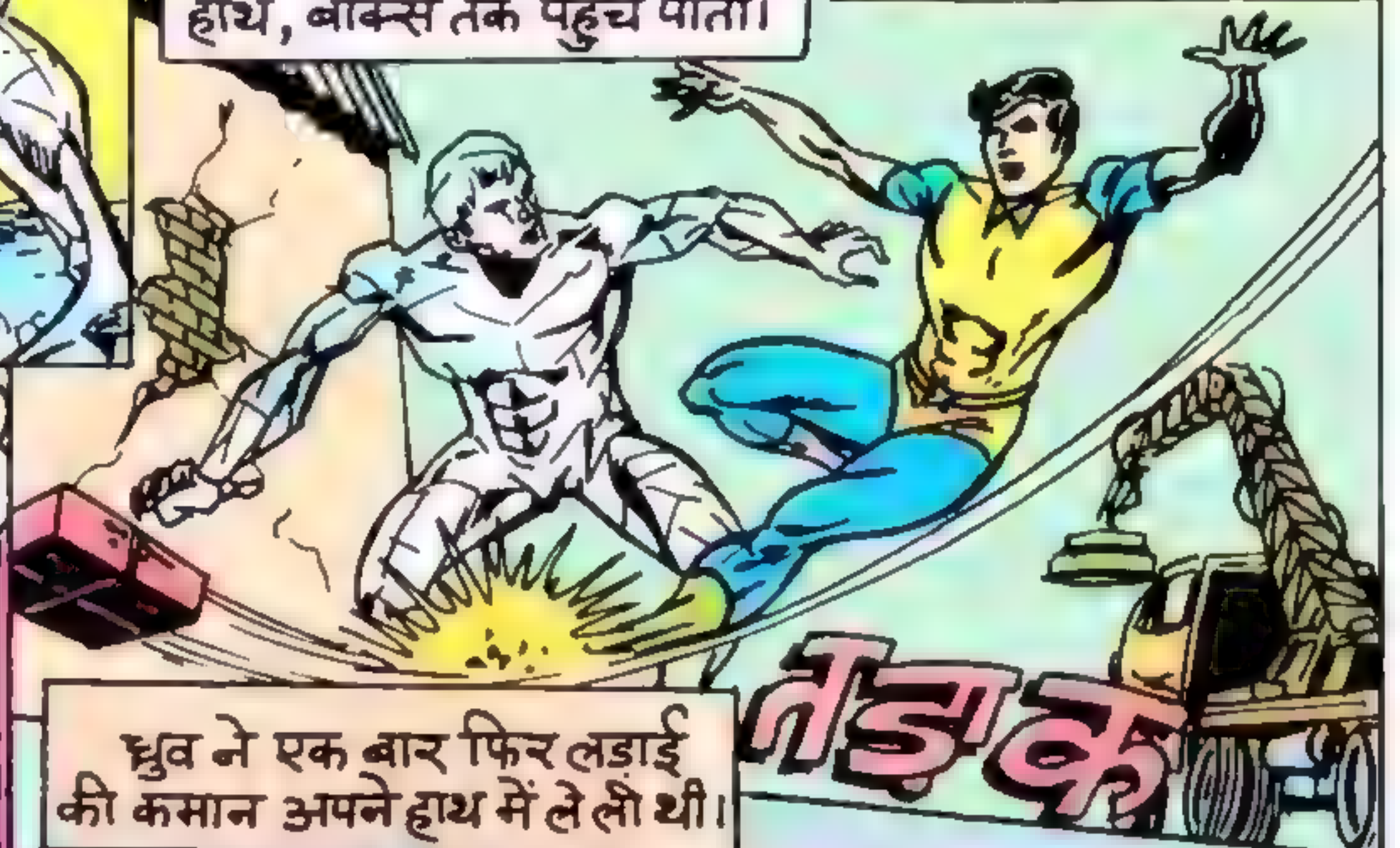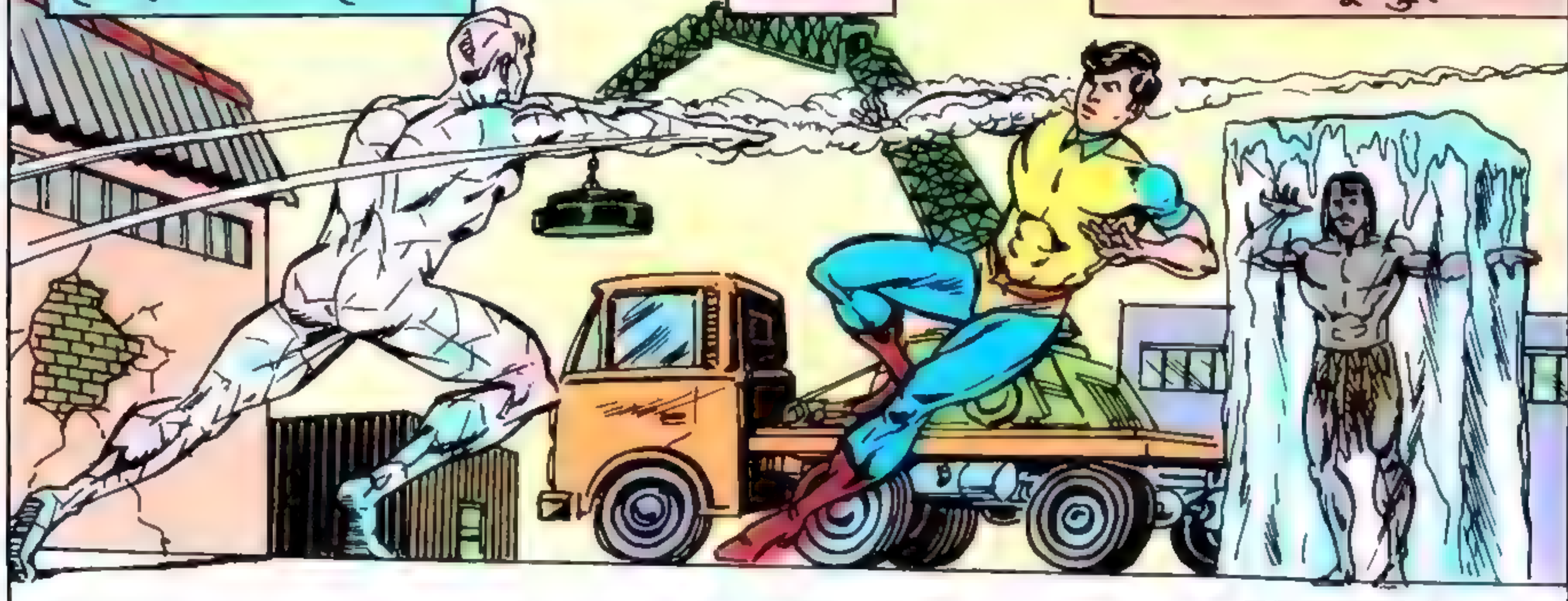
बर्रर्रर! लग रहा है मैं एवरेस्ट पर खड़ा हूं!

इस प्राणी को रोक पाना असंभव लग रहा है! क्या मुझे जिंदगी में पहली बार हार माननी...

एक मिनट! एक उपाय तो सूझ रहा है!

क्यों न चलते-चलते इस को भी आजमा लिया जाए?

ध्रुव ने अपनी योजना पर अमल, तुरंत शुरू कर दिया।

उसने 13 नं० कंटेनर के टूटे दरवाजे के लोहे के टुकड़ों को उठाया।

और कंटेनर के, लोहे के दरवाजे के टुकड़े, हवा में घूमते हुए बर्फ मानव के शरीर से टकराने लगे।

पर नुकसाम रत्ती भर का भी नहीं हुआ।

लोहे के सारे टुकड़े, बर्फीले शरीर में थोड़ी दूर धंसकर रुक गए।

खच

फचाक
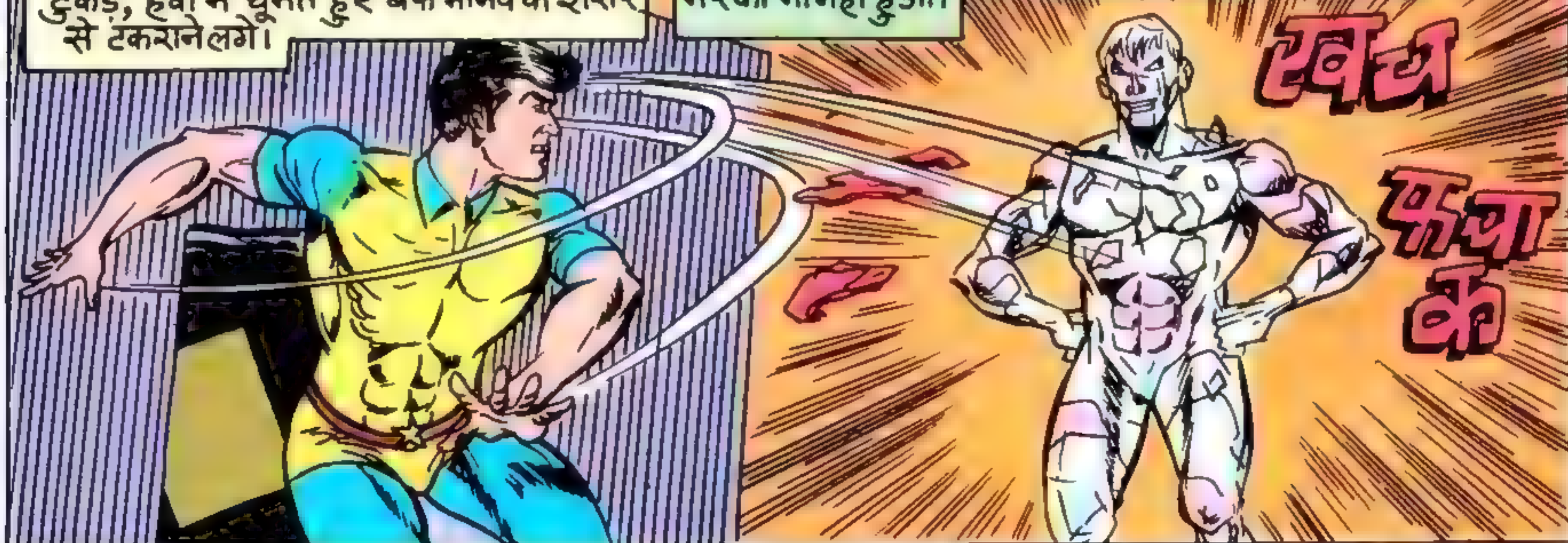
अब बर्फ मानव, खतरनाक तरीके से, ध्रुव की तरफ बढ़ा।
ध्रुव अपना वार खाली आता देखकर तेजी से भागा।
और बर्फ मानव की नजरों से ओझल हो गया।
भाग गया! अच्छा ही हुआ! मैं इसे मारना नहीं चाहता था!
और पलभर के लिए हिलना भूल गया।
विद्युत-चुंबक लगी विशालकाय क्रेन लेकर, ध्रुव उसकी तरफ बढ़ रहा था।
अब मैं यह हीरों भरा बॉक्स ले जाकर, डॉ॰ वायरस को सौंप दूं! और उससे अपना हिसाब भी साफ कर···!
घर्रर्रर्रर्र
तभी- अपने पीछे एक घरघराहट सुनकर, बर्फ-मानव घूमा।
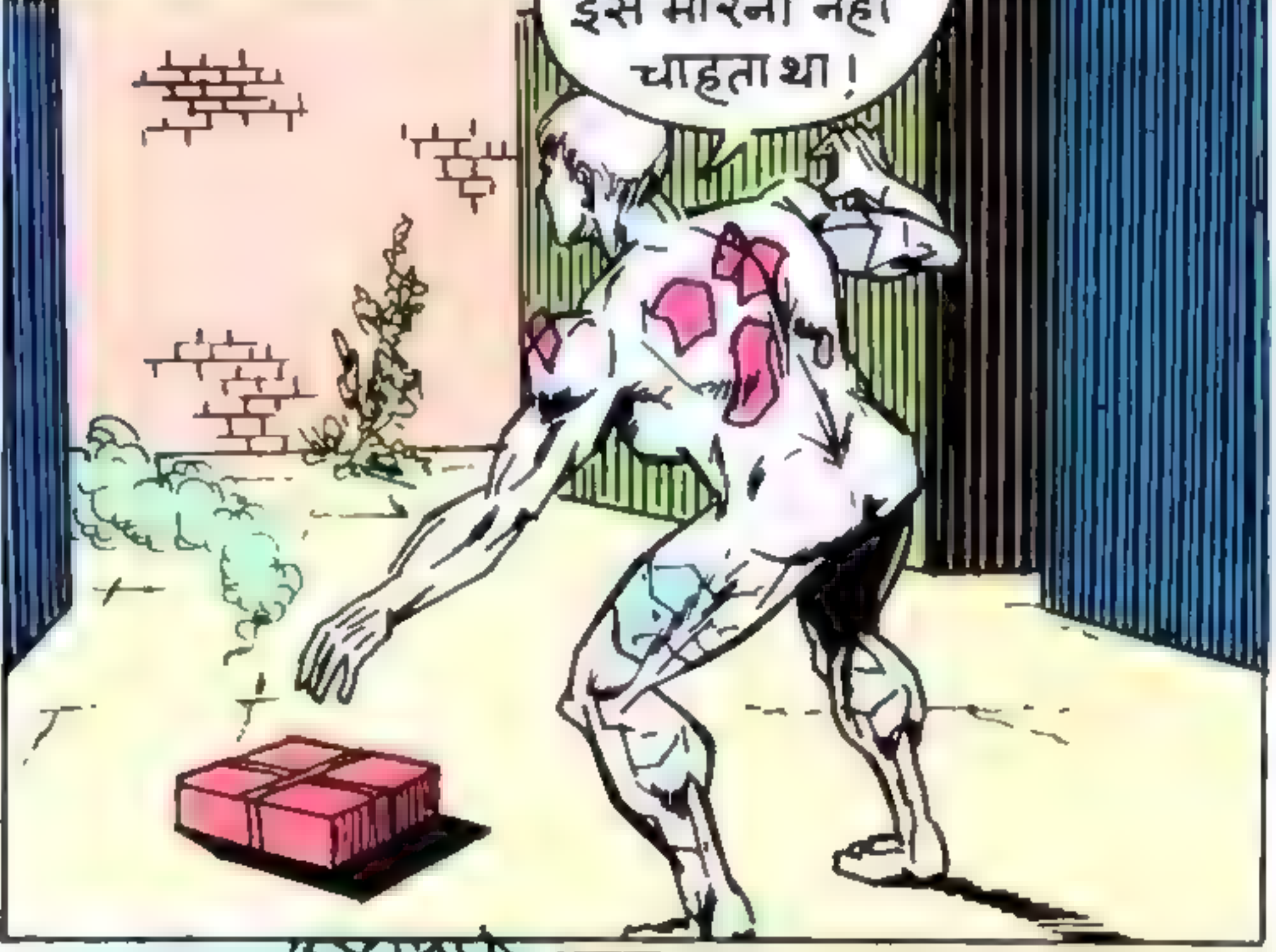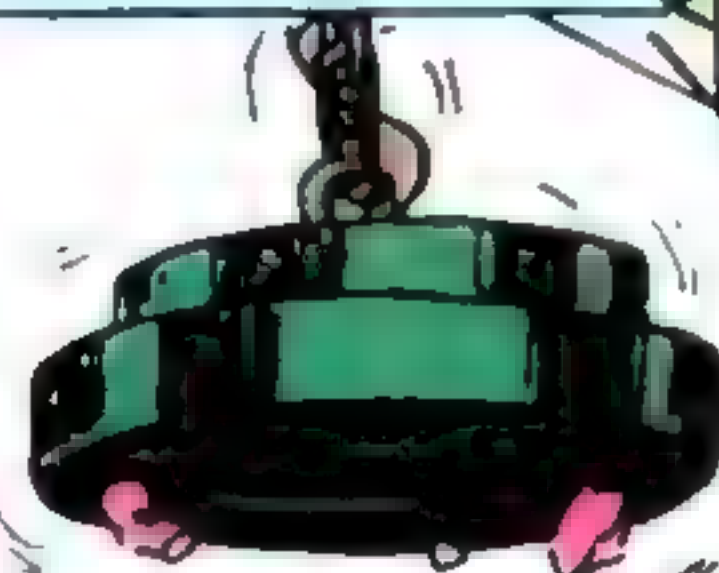
भीमकाय क्रेन की बॉडी पर, बर्फ मानव के वारों का कोई असर नहीं हो रहा था
बर्फ मानव के कुछ सोच पाने से पहले ही, ध्रुव ने विद्युत-चुंबक को चालू कर दिया।
बर्फ मानव के शरीर में धंसे, लोहे के टुकड़े, विद्युत-चुंबक से आकर्षित होने लगे।
और उनके साथ ही, बर्फ-मानव का बदन भी, चुंबक से जा चिपका।
खटाक

चुंबक के सामने, बर्फ मानव की सभी शक्तियां बेकार थीं।
अब बताओ, डॉ॰ वायरस के चमचे, कि डॉ॰ वायरस मुझे कहां पर मिलेगा?

सुनो, लड़के, मुझे जाने दो! मैं डॉ॰ वायरस का सहयोगी नहीं हूं!
पर मेरे लिए, इन हीरों को डॉ॰ वायरस तक पहुंचाना बहुत जरूरी है!
ऐसी क्या बात है?

क्योंकि उसने मेरी पत्नी और बेटी का अपहरण कर लिया है। मेरा नाम डॉ॰ एम॰ वर्गीस है।
प्रसिद्ध जीव वैज्ञानिक डॉ॰ वर्गीस!! आपकी यह हालत कैसे हो गई?
पहले मुझे इस चुंबक से तो छुड़ाओ! फिर बताता हूं!

डॉ॰ वर्गीस ने, ध्रुव को गुप्त लेबोरेट्री की तबाही तक की कहानी सुना दी।
... पर बर्फ में दबकर मैं मरा नहीं! बीटा वायरस के अजीबोगरीब असर ने मुझे ज़िंदा तो रखा, पर बर्फ मानव के रूप में बदल दिया।
मुझे तो उस वक्त यह भी मालूम नहीं था, कि मैं कितने दिन बेहोश रहा!

होश में आते ही, मैं नदियों के अंदर तैरता-तैरता, राजनगर तक आ पहुंचा!
लेकिन मुझे इतना पता था कि डॉ॰ वायरस का अड्डा राजनगर में ही कहीं पर है!
जिस वक्त तुम कोढ़क से लड़ रहे थे, उसी वक्त संयोगवश मैं नहर के रास्ते से गुजर रहा था!

कोढ़क पर नजर पड़ते ही मैं समझ गया कि यह प्राणी, डॉ॰ वायरस का आदमी है। मैं उसको बेहोश करके अपने साथ ले जाना चाहता था, ताकि उससे डॉ॰ वायरस का पता मालूम कर सकूं।
पर तुम्हारे होश में आ जाने से, और 'हॉस्पिटल स्टाफ' के घटनास्थल पर पहुंच जाने से, ...
.. मुझे खाली हाथ भागना पड़ा।

और फिर जब तक मैं डॉ॰ वायरस को ढूंढ पाता, उसने मेरे परिवार का अपहरण कर लिया।
और उनको मारने की धमकी देकर, मुझे इस डकैती के लिए भेज दिया।
ओह! यानि मुझको, डकैती पड़ने की सूचना डॉ॰ वायरस ने ही भेजी थी।

उसको पूरा यकीन होगा, कि आप, मुझे, डॉ॰ वायरस के रास्ते से हटा देंगे!
अब मुझे समझ में आ रहा है! आप वनपुत्र को होश में लाईए!
फिर मैं डॉ॰ वायरस को ठिकाने लगाने की योजना बनाता हूं!

और इसी वक्त-
ये देखो, डिप्टी!
मैंने बीटा वायरस में और सुधार करके 'बीटा वायरस प्लस' बना लिया है!
तुम शकुरा को बुलाओ!
और हां! क्लोरोफार्म तैयार रखना!

और लेबोरेट्री से थोड़ी दूर पर-
मुख्य इमारत के पास, एक नया घटनाक्रम शुरू होने वाला था।
ओफ्! इतनी कड़ी धूप में पहरेदारी! क्या जिंदगी है?
पसीने की धारें बह रही हैं! इस समय तो हमलोगों को हिल स्टेशन की बर्फीली वादियों में होना चाहिए था!

अगले ही पल- दोनों पहरेदारों की ईच्छा, राजनगर में ही पूरी हो गई।

दुनिया की सबसे अजीबोगरीब टीम, अपना कमाल दिखाने आ चुकी थी।
ये दोनों तो गए!
मेरी पत्नी और बेटी उस कमरे में कैद हैं! पर वहां तक पहुंचा कैसे जाए?
वह तुम मुझपर छोड़ दो!

वनपुत्र का आदेश पाकर, एक बेल तेजी से दीवार पर चढ़ने लगी।
सर्र्र्र्र्र्र्र्र्र

खिड़की तक पहुंचकर, बेल सलाखों पर लिपटी।
और पूरी खिड़की, दीवार से अलग हो गई।
कड़ाक!
मम्मी!

और देखते ही देखते- *बेल* ने दोनों को अपनी गिरफ्त में लेकर, उनको सुरक्षित खिड़की के बाहर खींच लिया।

लेकिन इसी वक्त- डॉ॰ वायरस अपने डिप्टी के साथ, लैब से बाहर निकल आया।

बेचारा शकूरा, *क्लोरोफॉर्म* सूंघते ही चित्त हो गया! उसको तो *'बीटा वायरस प्लस'* के इंजेक्शन का दर्द तक महसूस नहीं हुआ होगा।

पर मेरा *प्रयोग* कामयाब रहा! शकूरा अब *वही* बन गया है, जो मैं चाहता था!

अब मुझे इस वायरस का उत्पादन बड़े पैमाने पर करना है!...

... और ऐसे कम से कम *पांच हजार* प्राणियों की फौज...!

डॉ॰ वायरस बोलते-बोलते चुप हो गया।
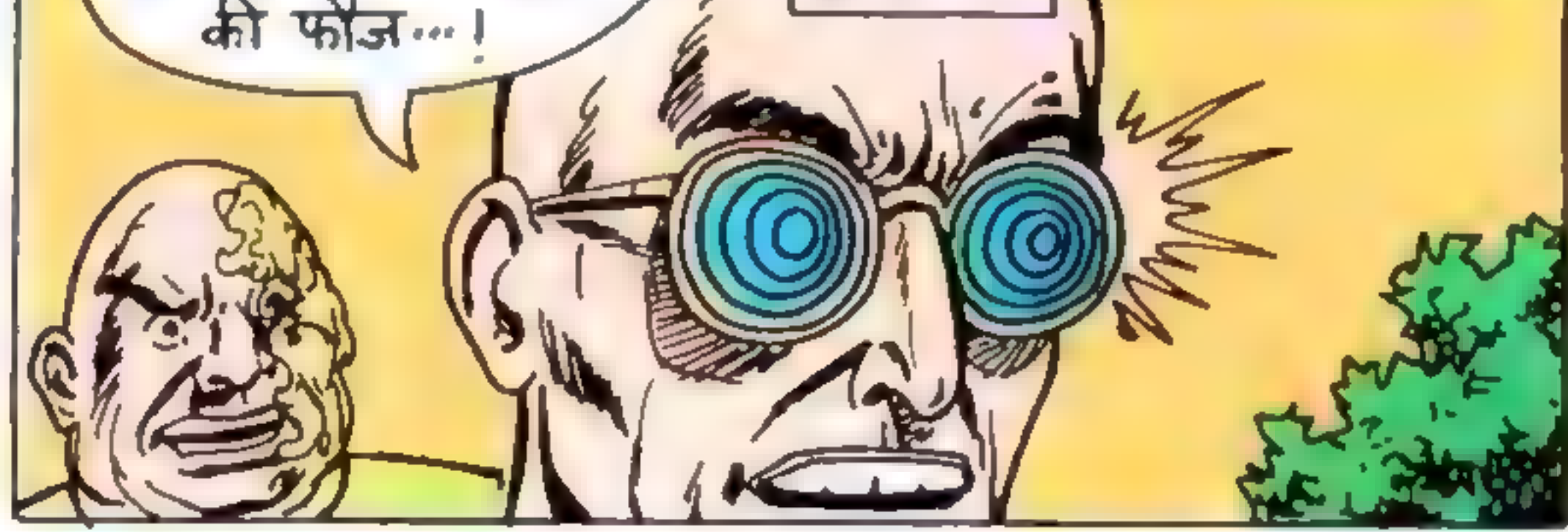
क्योंकि उसके सामने *बर्फ मानव* के साथ, ध्रुव खड़ा था।

ओहो! तो तुम आ गए!

और ध्रुव को भी साथ ले आए!

वेरी गुड! पर वे हीरे कहां हैं?

बर्फ मानव मुझे लेकर नहीं आया है, डॉ॰ वायरस! बल्कि मैं इसको लेकर आया हूं!

और तुम्हारे हीरे...

... इधर हैं!

य..यह तो वही जंगली है! और इसके साथ मेरे दोनों कैदी हैं!!

यानि तेरा खेल खत्म हो गया है, दुष्ट!

ऐसा तुम समझते हो, जंगली!
डिप्टी, भून डालो इन सबको!
गोलियां चलीं तो जरूर!
पर अपने निशानों तक पहुंचने से पहले, एक बर्फ की दीवार से जा लड़ीं।
मशीनगन, डिप्टी के हाथों से छिन गई।
और एक भीषण मुक्के ने उसको, बेहोशी की दुनिया में पहुंचा दिया।
धाड़
अब तुम्हारी बारी है, डॉ॰ वायरस!
पर तभी- डॉ॰ वायरस चीख उठा।
शकूरा! एटैक!!
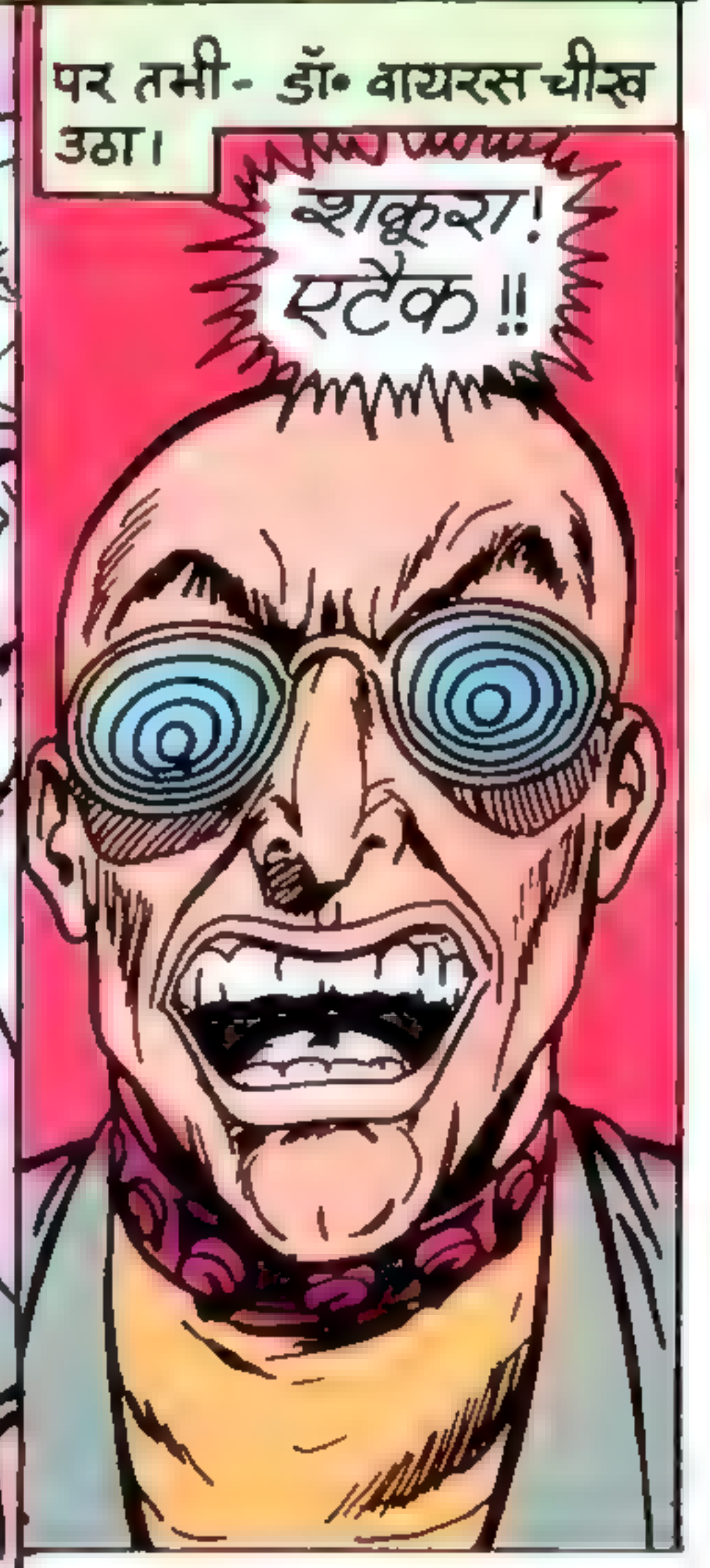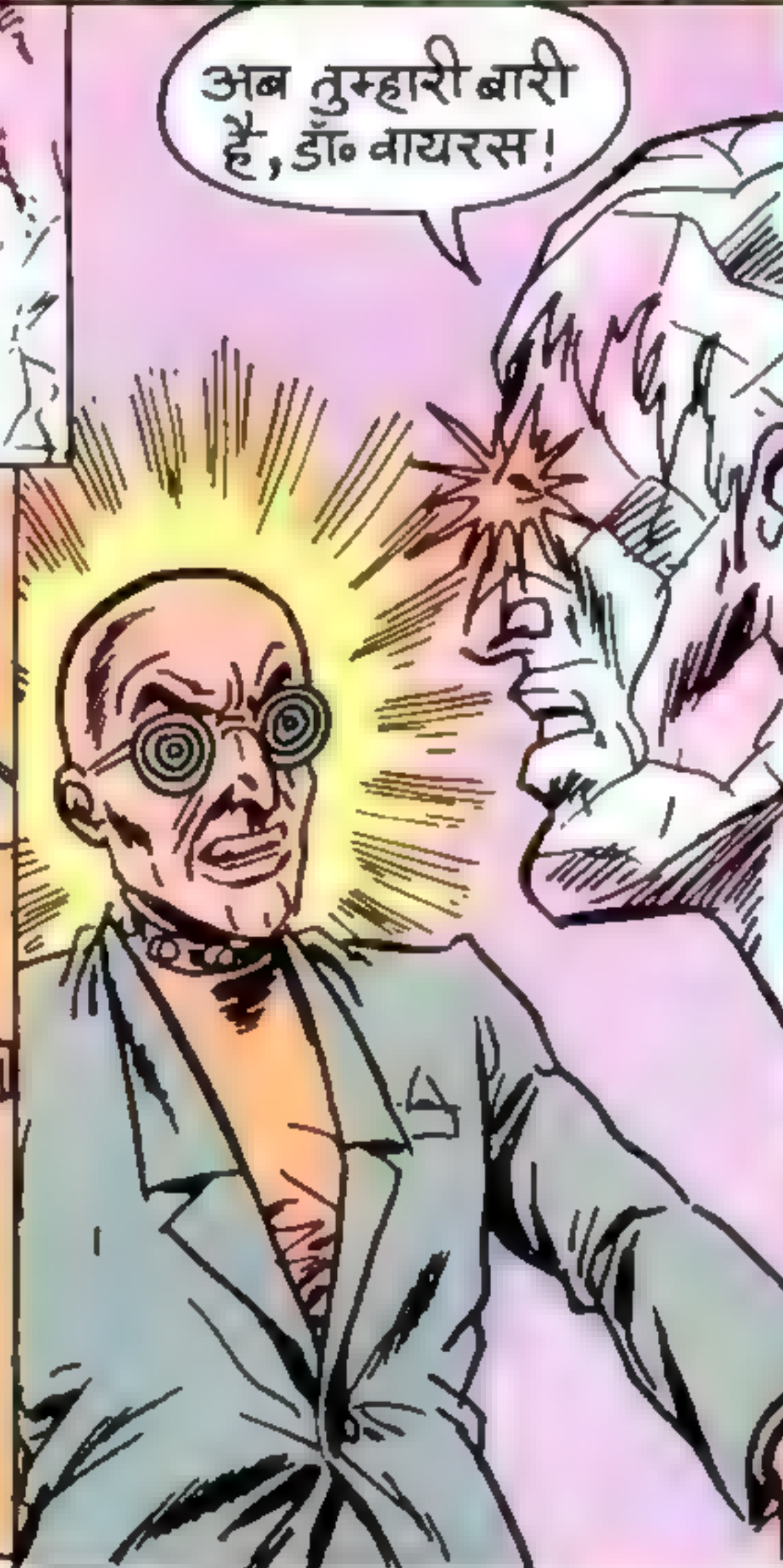
और अगले ही पल- लेबोरेट्री की दीवार को तोड़ती हुई, जो आकृति बाहर निकली।
धड़ाक
उसे देखकर यह कहना मुश्किल था, कि वह वृक्ष है या मानव, ... या फिर-
वृक्षमानव!
ओह! अपने बीटा वायरस का इतना घातक उपयोग, तो मैं सोच भी नहीं सकता था।
रुको, बर्फ-मानव!
यह जो कुछ भी है, इस समय पेड़ के रूप में है। और इस रूप में इसको वनपुत्र का आदेश मानना ही पड़ेगा।
ठहरो! वहीं पर रुक जाओ!
लेकिन वनपुत्र के आदेश का वृक्षमानव पर कोई असर नहीं पड़ा।
और अगले ही पल- वनपुत्र के सिर पर एक धमाका हुआ।
भड़ाम
इससे तुम लोग जीत नहीं सकते। इस पर तुम्हारी शक्तियां बेअसर हैं।
अब भी हार मान कर, मेरी शरण में आ जाओ, बच्चो।
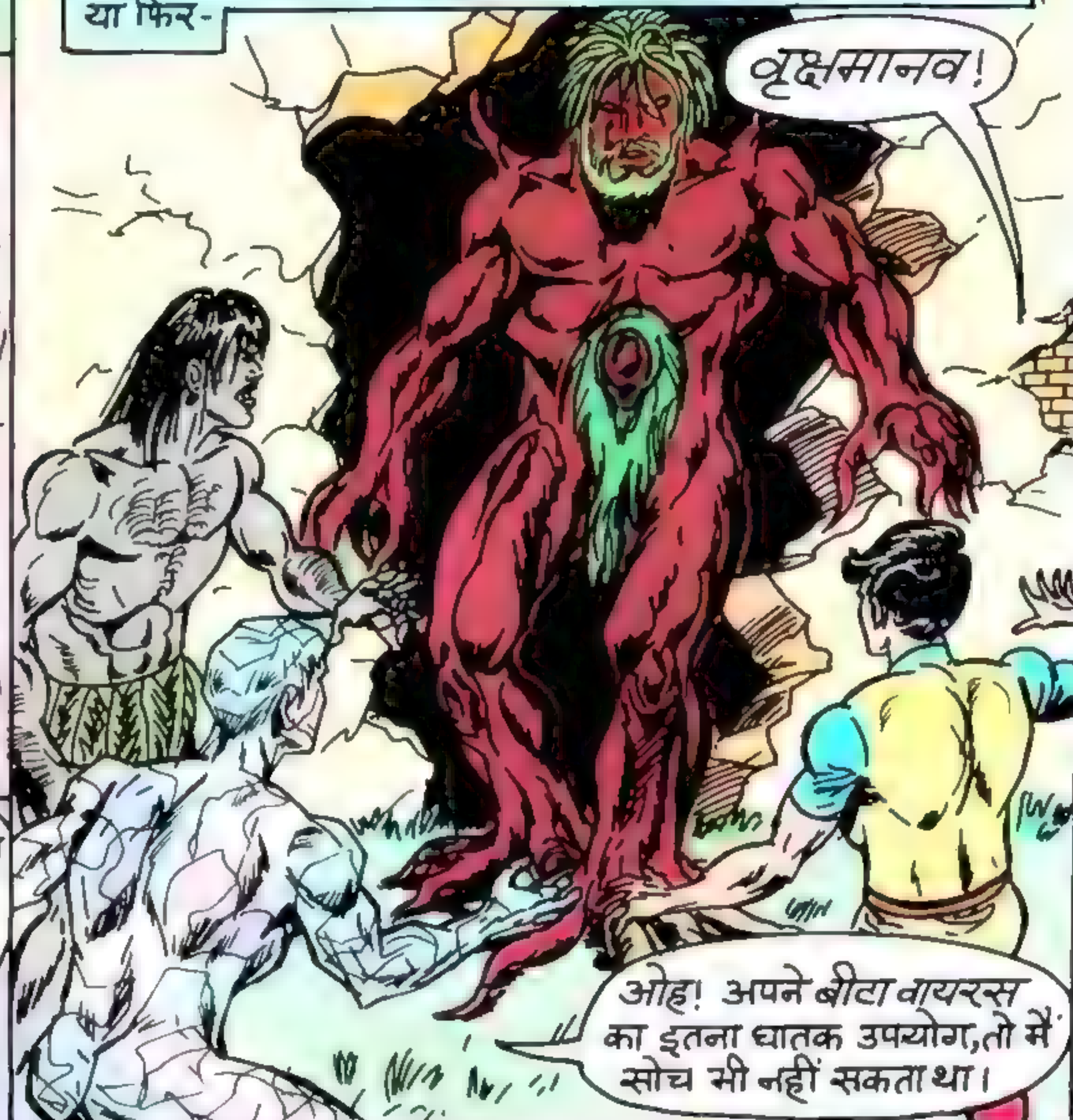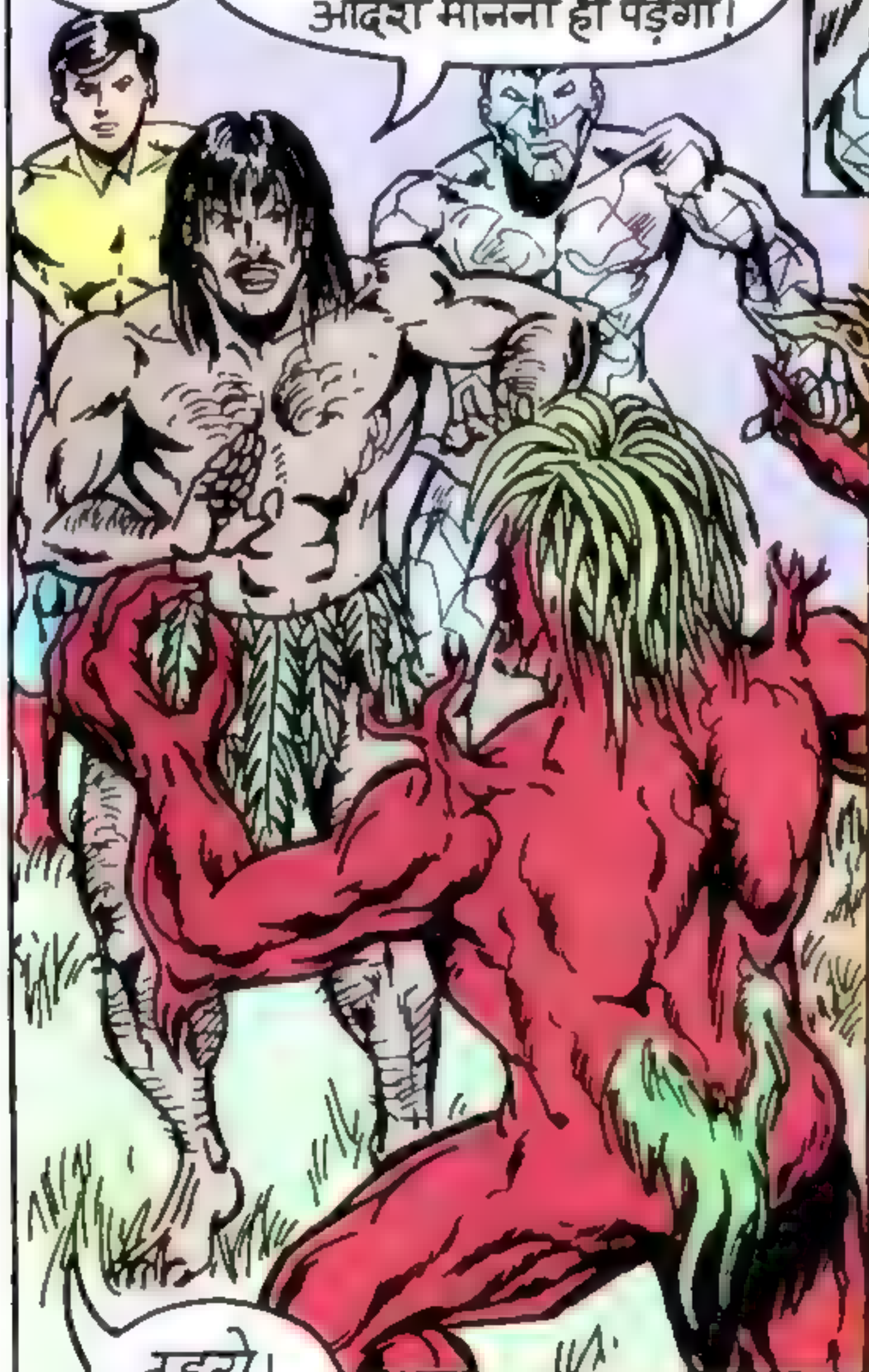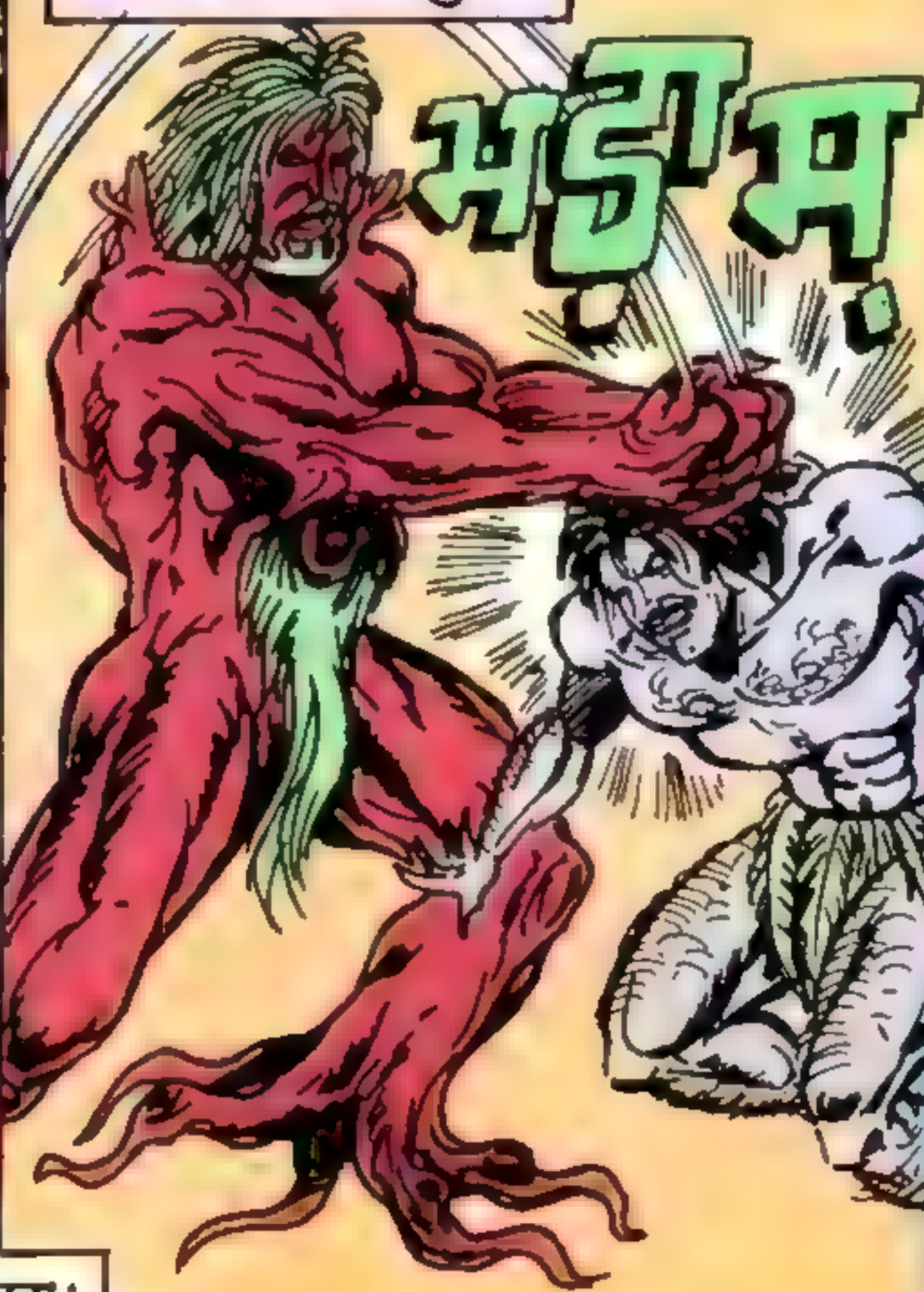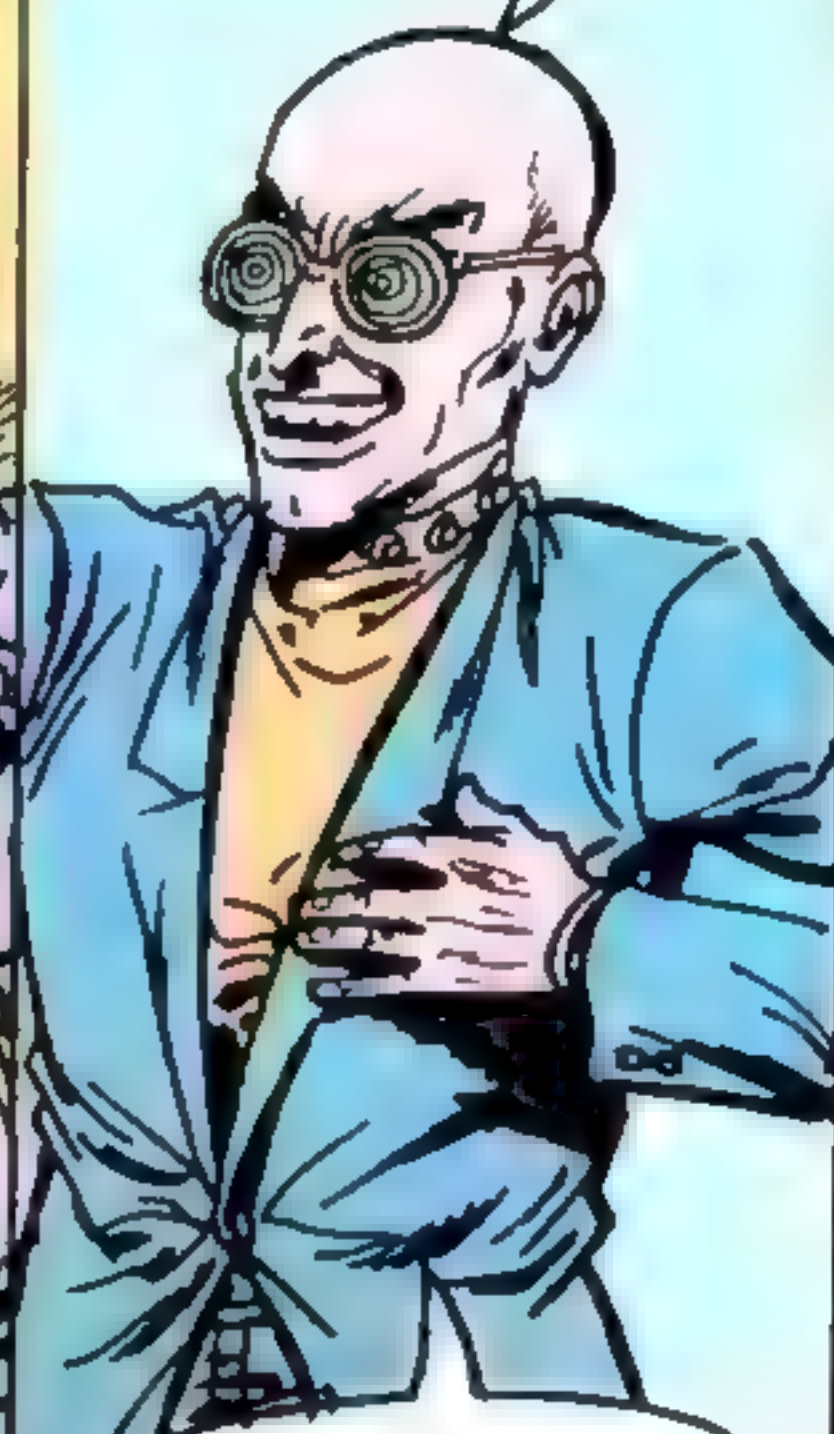
कभी नहीं!
इसको तो मैं रोकूंगा!
वृक्षमानव के 'पैरों' को बर्फ ने धरती में जमा दिया।
लेकिन यह बंधन, वृक्षमानव को रोकने के लिए काफी नहीं था।
कड़ाक
अब बर्फमानव ने अपने शरीर के तापमान को और नीचे गिरा दिया।
और वृक्षमानव का पूरा शरीर, बर्फ की तहों में लिपटने लगा।
बर्फ-मानव को पूरा यकीन था, कि उसका यह वार खाली नहीं जाएगा।
पर ऐसा हुआ नहीं।
यह क्या? यह नहीं हो सकता।
मेरी बर्फ-कैद को कोई भी नहीं तोड़ सकता!
यह भी उसी 'बीटा वायरस' की पैदाइश है, जिसने तुमको बर्फ-मानव बनाया है।
इसीलिए तुम्हारे किसी भी वार का इसपर असर नहीं होगा! पर तुम पर इस के वारों का असर होगा या नहीं...

..यह कह पाना मुश्किल है!
वृक्ष मानव की भुजाएं, बर्फ-मानव पर आकर कस गईं।
और उसका शरीर कसने लगा।

पकड़ बहुत जबर्दस्त थी।
बर्फ मानव को अब अपना शरीर, अंदर से कड़कड़ाता हुआ, महसूस हो रहा था।
कड़
चड़ाक

कि तभी- उड़ता हुआ एक शरीर, वृक्षमानव के पैरों से आ टकराया।
और वृक्ष मानव, अपना संतुलन खोकर, जमीन पर आ गिरा।
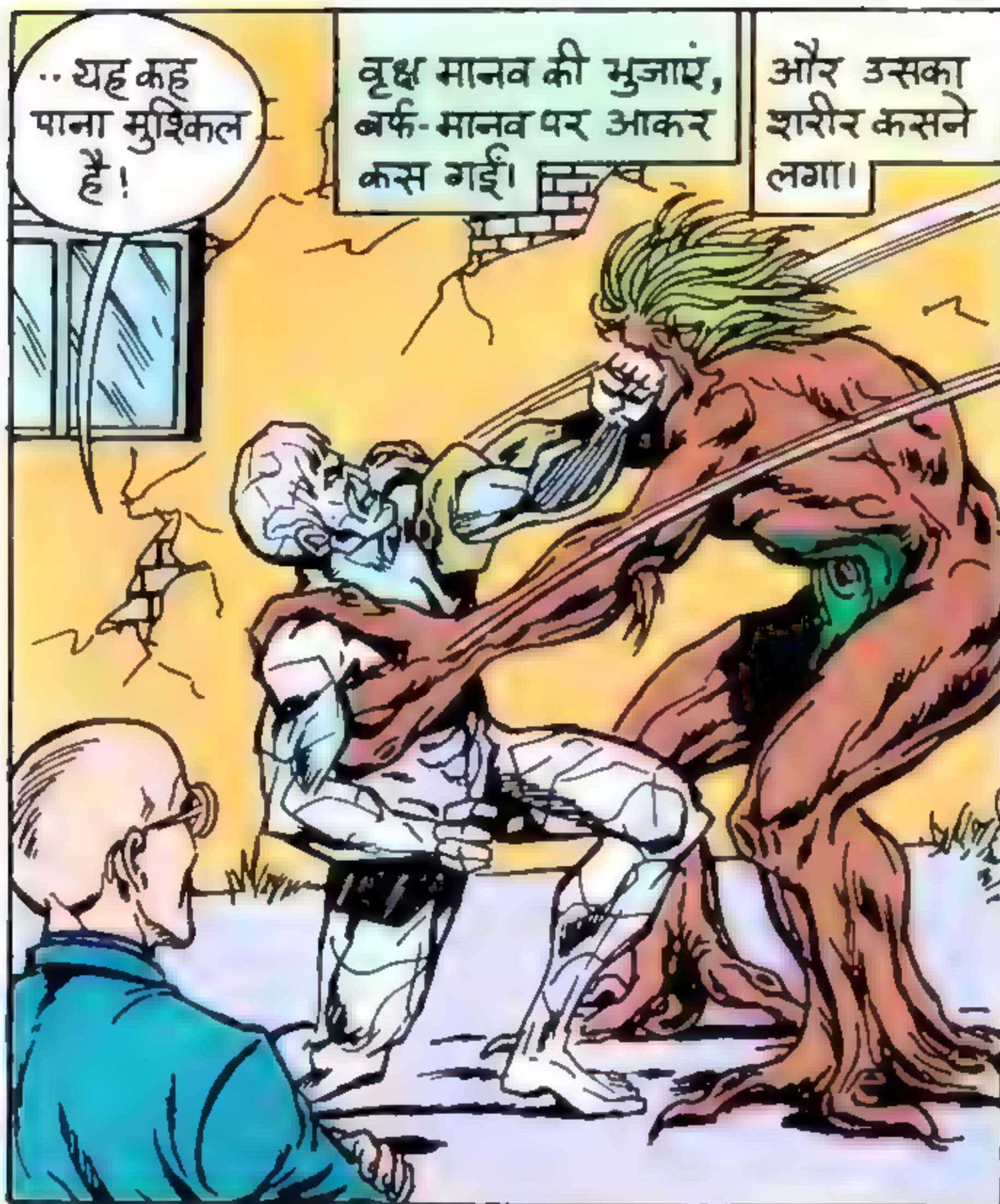
और उसी पल- बेशुमार लताओं और झाड़ियों ने, उसके शरीर को जमीन से बांध दिया।

वनपुत्र, होश में आ चुका था।
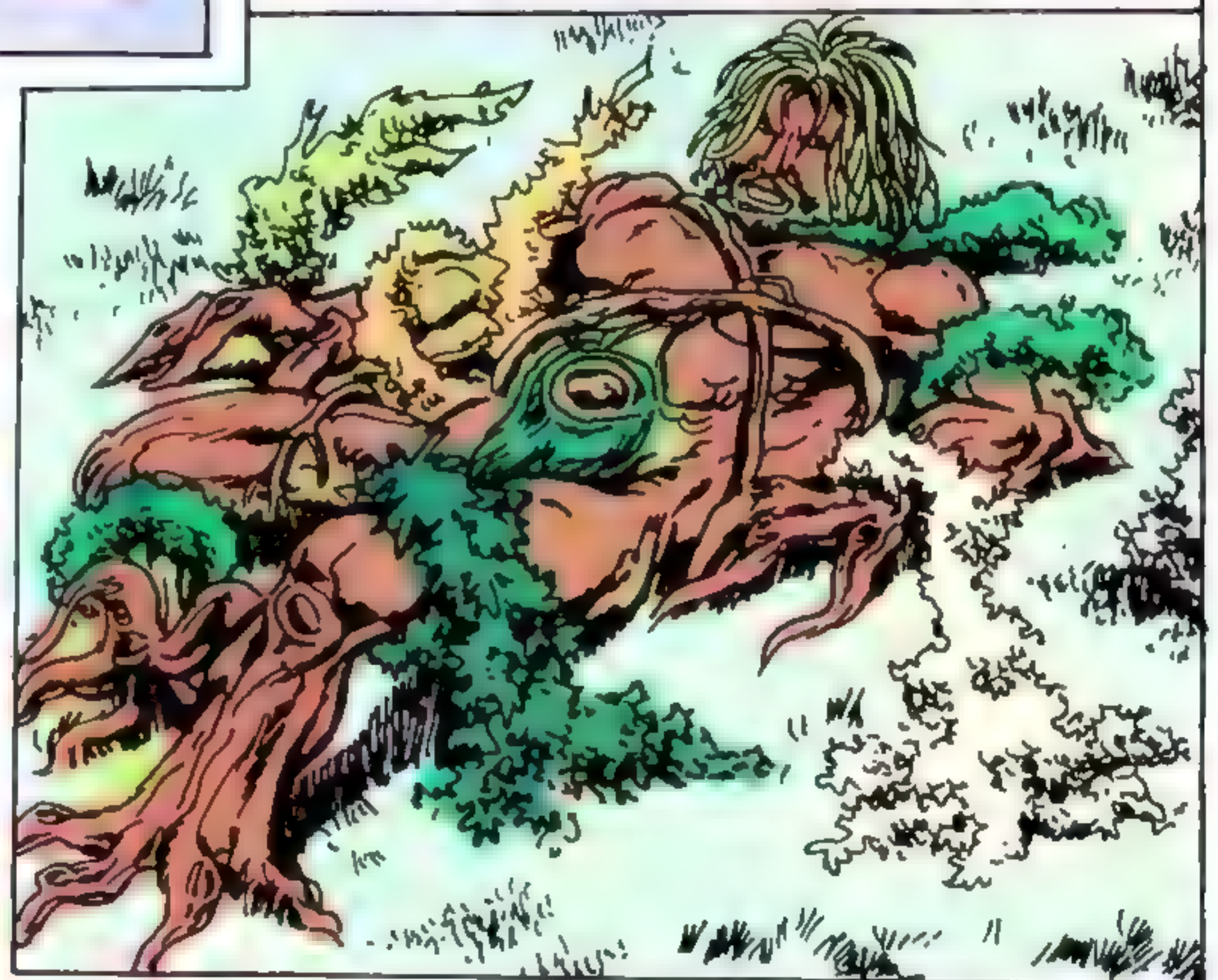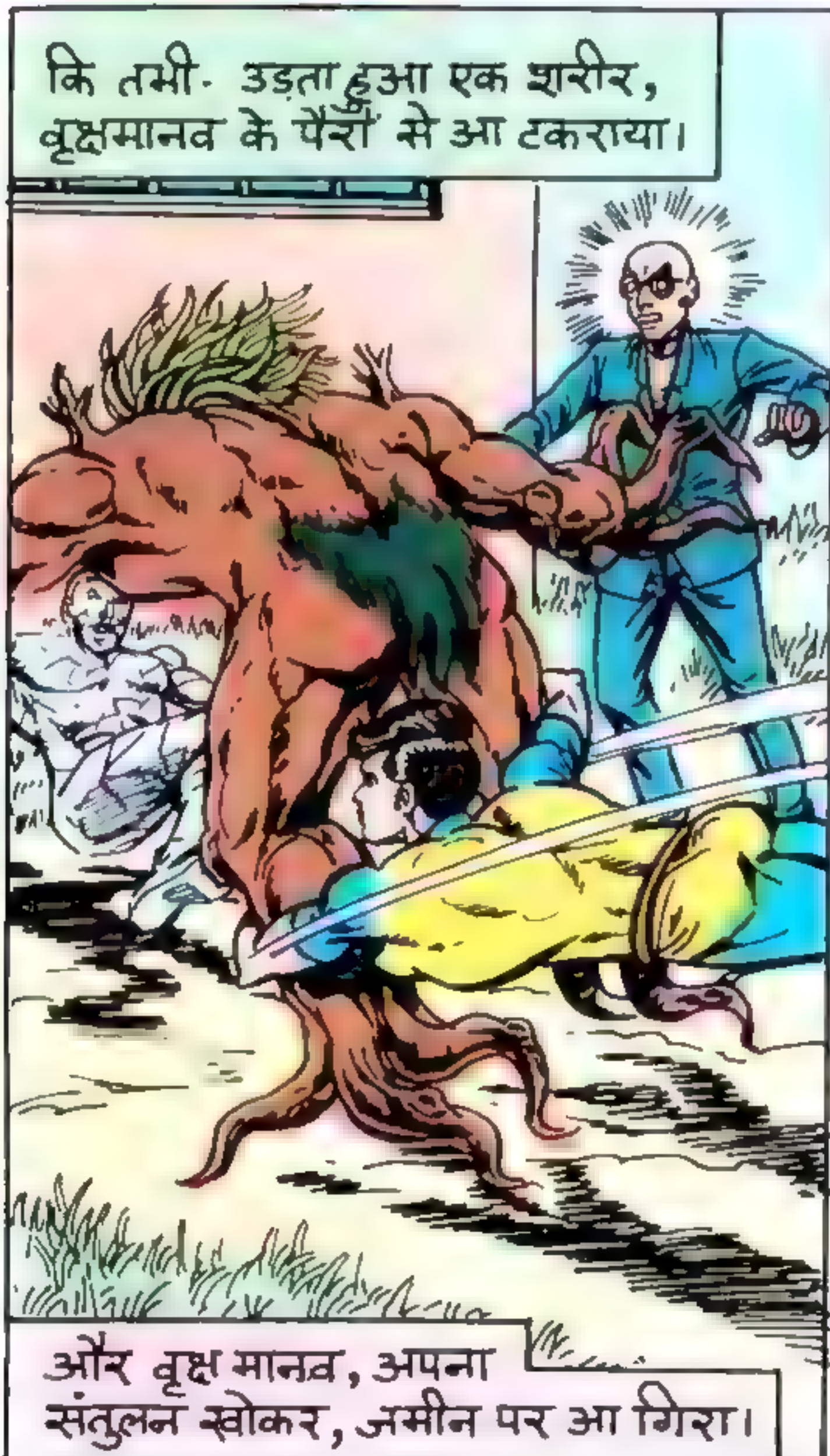
और उसकी आश्चर्यचकित आंखों के सामने, एक हल्के से झटके से, सभी बंधनों की जड़ें जमीन से बाहर आ गईं।
चट
चटाक
ओह! इसने तो मेरे सभी वारों को बेकार कर दिया है!
ये आग उगलने वाला हथियार!
यह इसको जरूर खत्म कर देगा।
वनपुत्र ने, शिकारियों को बंदूक चलाते तो कई बार देखा था। -
पर वह, खुद, आज पहली बार गोलियां दाग रहा था।
और उसका यह पहला प्रयास ही बेकार साबित हुआ।
तड़तड़तड़
?
सारी गोलियां, कड़े तने में धंसकर, बेकार हो गईं।
हाहाहाहा! मूर्खो! मेरे वृक्षमानव पर तो बम और मिसाइलें भी बेकार हैं।
इन छोटी-मोटी गोलियों से तो इसको खरोंच तक नहीं लगेगी!
पर अब ये तुम लोगों को जिंदा नहीं छोड़ेगा!
अगर इसपर 'अल्ट्रावायलेट किरणें' डाली जाएं, तो वे बीटा वायरस को नष्ट कर देंगी!
और यह अपने असली रूप में आ जाएगा!
नहीं, ध्रुव! मेरे बीटा वायरस पर अल्ट्रावायलेट किरणें बेअसर हैं!

ऐसे तो यह सचमुच हम सबकी मौत बन जाएगा!
अब हमको अपनी सम्मिलित शक्ति लगानी होगी!
पर अब हम क्या कर सकते हैं?
वनपुत्र, जिस तरह से मनुष्यों और पशुओं की रगों में खून बहता है, उसी तरह पेड़-पौधों की नलिकाओं में पानी बहता है!
अगर किसी तरह से इसके 'शरीर' से वह पानी बाहर निकाल दिया जाए, तो यह बेदम हो जाएगा!
पानी बाहर कैसे निकलेगा?
देखो, वनपुत्र! ये सरकंडे की झाड़ियां! ये पानी को भी सोखती हैं!...
... और तुम्हारा आदेश भी मानती हैं!
मैं समझ गया, ध्रुव!
अब तुम देखो!
वनपुत्र का इशारा पाते ही, सरकंडे की नालियां और भी लंबी होकर...
...जड़ों के रास्ते, वृक्षमानव के तने जैसे शरीर में, प्रविष्ट हो गईं-
और पानी चूसने लगीं।

वृक्षमानव कराहकर, तेजी से दूर भागा।
पर सरकंडे भी साथ ही साथ, लंबे होते गए।
और कुछ ही मिनटों में- सरकंडों ने- वृक्षमानव के शरीर का सारा पानी सोख लिया।
वह लड़खड़ा कर, जमीन पर आ गिरा।
पर अब भी, उसमें थोड़ी सी जान बाकी थी।
अरे! यह, उस फव्वारे की तरफ बढ़ रहा है! पानी के लिए!
अगर इसके शरीर में, पानी दोबारा पहुंच गया, तो फिर हमारी जानें नहीं बचेंगी!
बर्फ-मानव!
ध्रुव का इशारा समझकर, बर्फ-मानव ने अपने शरीर का तापमान, और नीचे गिरा दिया।
उसके हाथों से, धुंध की लहरें निकलीं।

और फव्वारे का पानी जमने लगा।
वृक्षमानव की जड़ें, पानी तक पहुंच पाने से पहले ही, पूरा पानी जम चुका था।
वृक्षमानव ने, अपनी ताकत के आखिरी कतरे का, इस्तेमाल करते हुए, खड़ा होने की कोशिश की।
और वह दुबारा उठने लायक नहीं रहा।
वाह, ध्रुव! तुम्हारी योजना की बदौलत हमने, इस खतरनाक और अजेय प्राणी को भी मात दे दी!
वह तो ठीक है, वनपुत्र! लेकिन डॉ॰ वायरस किधर गया?
लगता है, कि वह वृक्षमानव की पिटाई देखकर भाग खड़ा हुआ।
वह समझ गया होगा, कि उसका तुरुप का पत्ता भी, तुम्हारे दिमाग के सामने नहीं टिक पाएगा।
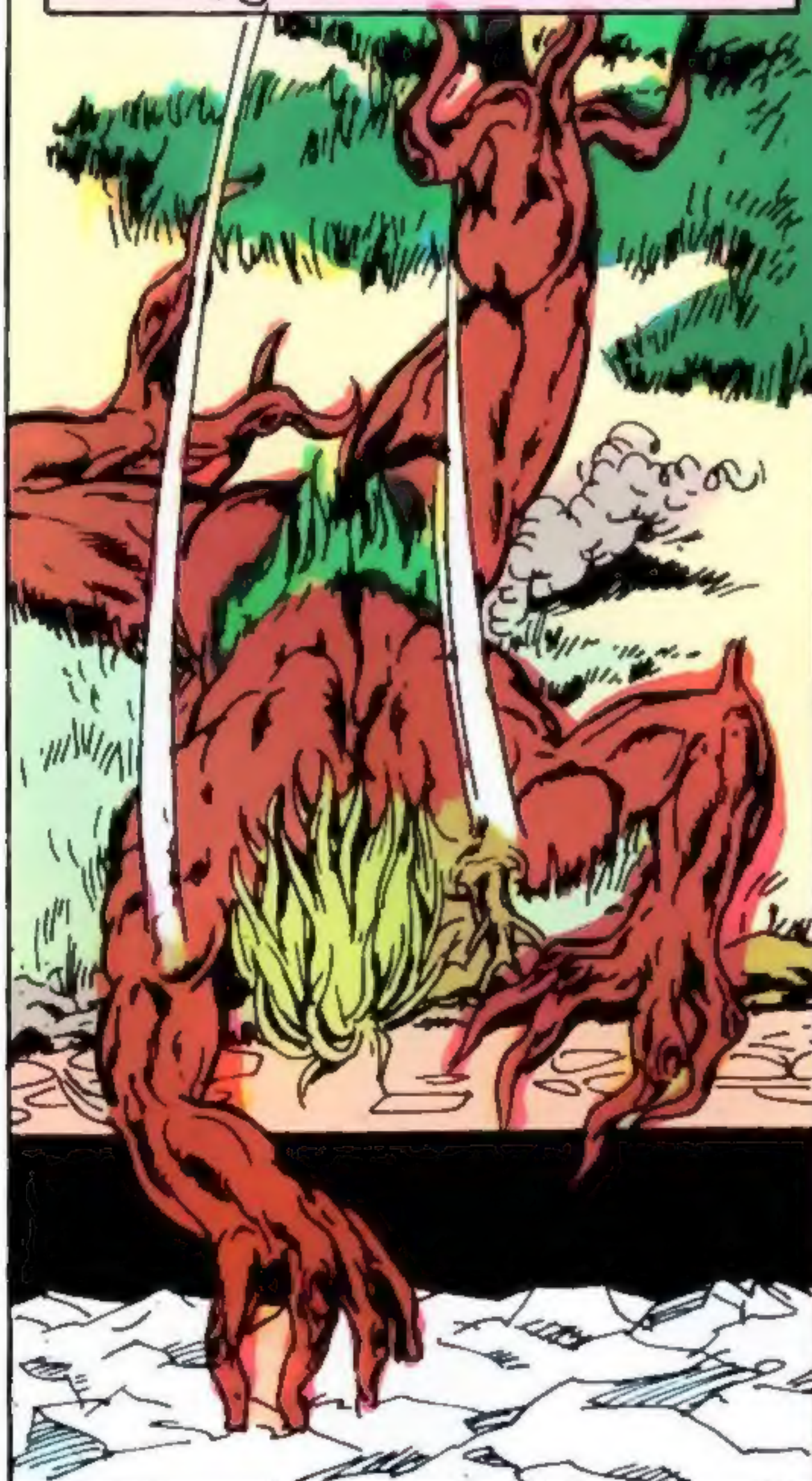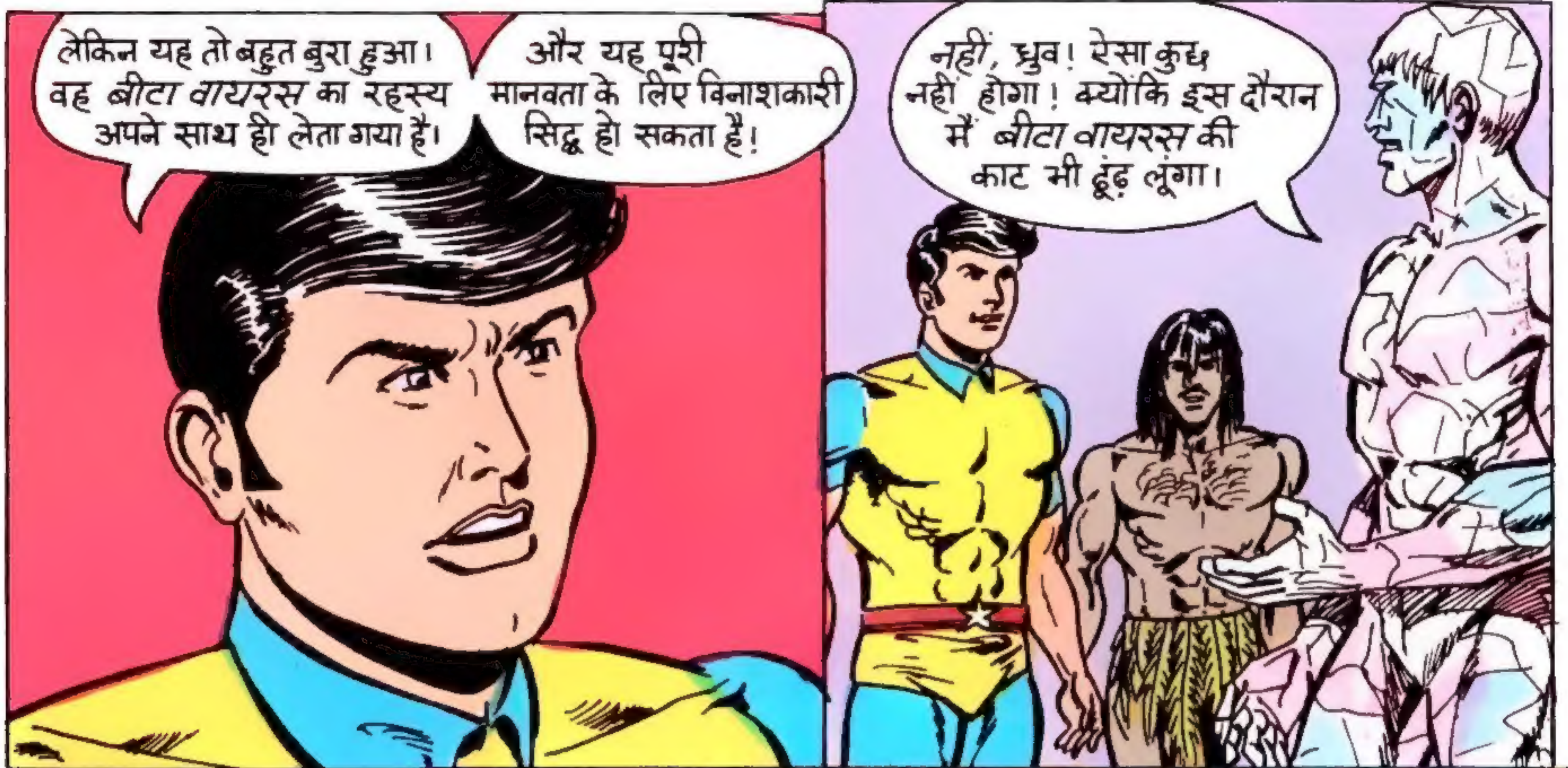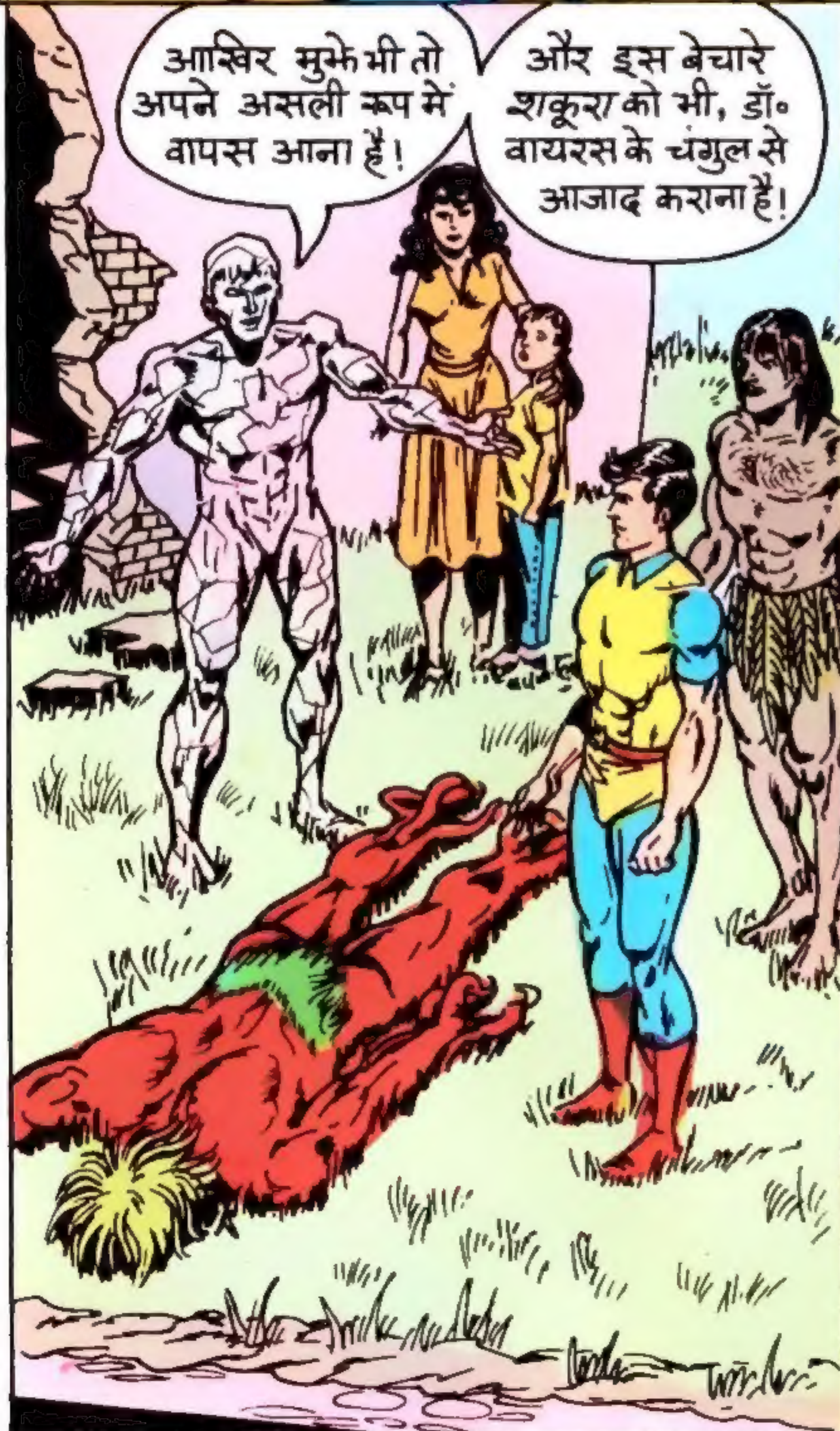
लेकिन यह तो बहुत बुरा हुआ। वह बीटा वायरस का रहस्य अपने साथ ही लेता गया है।
और यह पूरी मानवता के लिए विनाशकारी सिद्ध हो सकता है।
नहीं, ध्रुव! ऐसा कुछ नहीं होगा! क्योंकि इस दौरान मैं बीटा वायरस की काट भी ढूंढ़ लूंगा।
आखिर मुझे भी तो अपने असली रूप में वापस आना है!
और इस बेचारे शकूरा को भी, डॉ॰ वायरस के चंगुल से आजाद कराना है!
ध्रुव की जिंदगी का एक और अभियान सफलता पर खत्म हुआ था।
पर उसके जानी दुश्मनों में एक नया नाम जुड़ गया था — डॉ॰ वायरस!
इस छोकरे ध्रुव ने मेरे सारे सपने चकनाचूर कर दिए। मेरी वायरल फौज को खत्म कर दिया। मैं बदला लूंगा! जरूर लूंगा।
और वह प्रतिशोध इतना खतरनाक होगा, कि पूरी दुनिया कांप उठेगी।
समाप्त